मूक-बधिर किशोरों के अभिभावकीय संबंधों का उनके समायोजन, आक्रामकता एवं आत्म-अवधारणा पर प्रभाव का एक अध्ययन

A Study of Effect of Parent-Child Relationship on Adjustment, Agression and Self Concept of Dumb and Deaf Adolescents

शोध प्रबन्ध

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

को

पी-एच.डी. (शिक्षा) उपाधि

की संपूर्ति हेतु प्रस्तुत

2016

शोध निर्देशिका

प्रो. (श्रीमती) लीलेश गुप्ता

शोधकर्त्री

सपना बडोनिया

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राजस्थान)

Prof. Lilesh Gupta
Principal
J.N.P.G.T.T. College, Sakatpura, Kota
Dean - Faculty of Education
University of Kota, Kota

MPA-2, Mahaveer Nagar II
Kota (Raj.)
College : 0744-2371418
Fax : 0744-2371289
Resi. : 0744-2424292
Mob. : 9413002426
E-mail : lygmpa2@gmail.com

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्रीमती सपना बडोनिया ने **"मूक-बधिर किशोरों के अभिभावकीय संबंधों का उनके समायोजन, आक्रामकता एवं आत्म-अवधारणा पर प्रभाव का एक अध्ययन"** विषय पर शोधकार्य, मेरे निर्देशन एवं मार्गदर्शन में सम्पन्न किया है। इनका यह शोधकार्य मौलिक व स्तरीय है तथा कोटा विश्वविद्यालय, कोटा के शिक्षा संकाय के अंतर्गत पी-एच.डी. की उपाधि के लिए प्रस्तुत करने योग्य है।

अतः मैं इसे मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करती हूँ।

दिनांक -
स्थान - कोटा

प्रो. (श्रीमती) लीलेश गुप्ता
प्राचार्या
जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर
शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
सकतपुरा, कोटा (राज.)

घोषणा पत्र

मैं **सपना बडोनिया,** (पी-एच.डी. की शोध छात्रा) यह घोषणा करती हूँ कि मेरे द्वारा किया गया शोध कार्य जिसका शीर्षक **"मूक-बधिर किशोरों के अभिभावकीय संबंधों का उनके समायोजन, आक्रामकता एवं आत्म-अवधारणा पर प्रभाव का एक अध्ययन"** है, पूर्ण रूप से मौलिक है तथा इसका संपूर्ण कार्य मेरे द्वारा किया गया है। इस शोध कार्य में पी-एच.डी. की उपाधि हेतु कोटा विश्वविद्यालय द्वारा निहित संपूर्ण मानदण्डों को पूरा किया गया है।

प्रस्तुत शोधकार्य **प्रो. (श्रीमती) लीलेश गुप्ता** (प्राचार्या, जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय, कोटा) के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में पूरा किया गया है।

स्थान : कोटा | शोधकर्त्री

दिनांक : | **सपना बडोनिया**

आभार सुमन

ज्ञान ज्योति के प्रज्जवलन के पश्चात् जीवन किस प्रकार प्रकाशमान हो उठता है, इसका अनुभव मुझे इस शोध प्रबन्ध के पूर्ण होने पर हो रहा है। मेरे जीवन में इस प्रकाशपुंज के अवतरित होने में मेरे श्रम व प्रयासों की तुलना में मेरे परम श्रद्धेय गुरूजनों, परिवारजनों, मित्रों तथा शुभचिंतको की अधिक महत्वपूर्ण एवं अविस्मरणीय भूमिका है। उनके इस योगदान की शाब्दिक अभिव्यक्ति सदैव मेरी अनुभूति की तुलना में अपूर्ण ही रहेगी।

सर्वप्रथम मैं ईश्वर को नमन करती हूँ, जिनकी असीम अनुकम्पा से मैं प्रस्तुत शोध प्रबन्ध पूर्ण करने का सामर्थ्य पा सकी।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध माननीय परम श्रद्धेय प्रो. (श्रीमती) लीलेश गुप्ता, प्राचार्या, जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सकतपुरा, कोटा, के स्नेहयुक्त मार्गदर्शन एवं निर्देशन में संपन्न किया गया। जिनके विद्वतापूर्ण निर्देशन, आत्मीयपूर्ण व्यवहार, स्नेहमयी प्रेरणा, अतुलनीय सहयोग, सौहार्द्रपूर्ण मार्गदर्शन एवं सूक्ष्म पर्यवेक्षण के लिए मैं सदैव ऋणी रहूँगी।

मैं अपने पूजनीय माता-पिता के प्रोत्साहन तथा अपने पति श्री कीर्तिवर्धन वर्मा एवं बेटे कार्तिकेय वर्मा के अनुपम योगदान तथा सहयोग को कभी नहीं भुला सकती, जिन्होंने इस शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में न सिर्फ मेरी मदद की बल्कि, निराशा की परिस्थितियों में मेरा उत्साहवर्धन किया। मैं हृदय से अपने पूरे परिवार का आभार व्यक्त करती हूँ।

मैं हार्दिक आभारी हूँ, अपने मित्र श्री संदीप मीणा की, जिनके सद्भावनापूर्ण सहयोग से कार्य पूर्ण करने में आसानी हुई। साथ ही मैं शोध कार्य के स्तरीय टंकण के लिए श्री दिनेश पाठक का भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने शोध कार्य पूर्ण करने में सहयोग प्रदान किया।

दिनांक :

स्थान : कोटा

सपना बडोनिया

विषय सूची

- शोध निर्देशिका का प्रमाण पत्र
- शोधकत्री का घोषणा पत्र
- आभार सुमन
- विषय सूची
- तालिका सूची
- ग्राफ सूची

क्रम संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.0	**प्रथम अध्याय : समस्या एवं उसका प्रादुर्भाव**	**1-50**
1.1	प्रस्तावना	1
1.2	विकलांगता	2
1.3	शारीरिक विकलांगता	8
1.4	मूक-बधिरता	12
1.5	अभिभावक-बालक संबंध	14
1.6	समायोजन	19
1.7	आक्रामकता	24
1.8	आत्म-अवधारणा	30
1.9	समस्या का औचित्य	37
1.10	समस्या कथन	39
1.11	शोध अध्ययन के उद्देश्य	39
1.12	शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ	42
1.13	शोध अध्ययन का परिसीमन	45
1.14	शोध अध्ययन में प्रयुक्त मुख्य तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण	47
1.15	शोध कार्य में अध्ययन योजना	49
2.0	**द्वितीय अध्याय : संबंधित साहित्य का पुनर्निरीक्षण**	**51-77**
2.1	प्रस्तावना	51
2.2	संबंधित साहित्य एवं उसके पुनर्निरीक्षण का अर्थ	51
2.3	संबंधित साहित्य के पुनर्निरीक्षण के उद्देश्य	52
2.4	शैक्षिक अनुसंधान में संबंधित साहित्य का महत्त्व	53

2.5	संबंधित साहित्य प्राप्त करने के स्त्रोत	54
2.6	प्रस्तुत शोध अध्ययन में संबंधित साहित्य के स्त्रोत	54
2.7	प्रस्तुत शोध अध्ययन से संबंधित विदेशी अनुसंधान	55
2.8	प्रस्तुत शोध अध्ययन से संबंधित भारतीय अनुसंधान	59
	I. मूक-बधिर विद्यार्थियों से संबंधित कुछ नवीन भारतीय शोध अध्ययन	59
	II. अभिभावक-बालक संबंधों पर कुछ नवीन भारतीय शोध अध्ययन	62
	III. समायोजन से संबंधित कुछ नवीन भारतीय शोध अध्ययन	66
	IV. आक्रामकता से संबंधित कुछ नवीन भारतीय शोध अध्ययन	69
	V. आत्म-अवधारणा से संबंधित कुछ नवीन भारतीय शोध अध्ययन	73
2.9	उभरते बिन्दु	76
2.10	निष्कर्ष	77
3.0	**तृतीय अध्याय : अध्ययन योजना एवं कार्यविधि**	**78-97**
3.1	प्रस्तावना	78
3.2	अनुसंधान विधि	78
3.3	प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त शोध विधि	79
3.4	जनसंख्या एवं न्यादर्श	81
3.5	प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श चयन	82
3.6	उपकरण	83
3.7	शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण	83
3.8	विश्लेषण प्रक्रिया (सांख्यिकी)	95
4.0	**चतुर्थ अध्याय : आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या**	**98-160**
4.1	प्रस्तावना	98
4.2	तथ्यों का संपादन	98
4.3	तथ्यों का वर्गीकरण	99
4.4	तथ्यों का सारणीयन	100
4.5	प्रस्तुत शोध अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य	100
4.6	प्रस्तुत शोध अध्ययन की परीक्षण परिकल्पनाएँ	105

4.7	प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या	110
4.8	निष्कर्ष	160
5.0	**पंचम अध्याय : शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव**	**161-216**
5.1	प्रस्तावना	161
5.2	शोध सारांश	161
5.3	समस्या का औचित्य	164
5.4	समस्या कथन	165
5.5	शोध अध्ययन के उद्देश्य	165
5.6	शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ	170
5.7	शोध अध्ययन का परिसीमन	174
5.8	जनसंख्या एवं न्यादर्श	175
5.9	शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण	176
5.10	शोध अध्ययन विधि	177
5.11	शोध अध्ययन में प्रयुक्त विश्लेषण प्रक्रिया	177
5.12	संबंधित साहित्य का अध्ययन	178
5.13	प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष एवं उनकी विवेचना	178
5.14	शोध अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता	213
5.15	भावी शोध अध्ययनों हेतु सुझाव	215
	संदर्भ ग्रंथ सूची	217-224
	परिशिष्ट	

तालिका सूची

तालिका संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.1	वाणी एवं श्रवण दोष की विशेषताएँ	11
3.1	प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श चयन	82
3.2	Z Score के आधार पर अभिभावक-बालक संबंधों की व्याख्या	86
3.3	प्राप्तांकों के आधार पर समायोजन स्तर की व्याख्या	88
3.4	आत्म-अवधारणा मापनी की अंकन प्रणाली	90
3.5	प्राप्तांकों के आधार पर आत्म-अवधारणा की व्याख्या	90
3.6	सभी आयामों के कुल प्राप्तांकों के आधार पर आत्म-अवधारणा की समन्वित व्याख्या	91
3.7	आक्रामकता मापनी की अंकन प्रणाली	93
3.8	ग्रेड के आधार पर शतांक मान	93
3.9	आयु के आधार पर शतांक मान	94
3.10	प्राप्तांकों के आधार पर आक्रामकता श्रेणी की व्याख्या	94
4.1	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके पिता के साथ संबंधों के मध्यमान में सार्थकता का अंतर	111
4.2	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनकी माता के साथ संबंधों के मध्यमान में सार्थकता का अंतर	113
4.3	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके अभिभावकों के साथ संबंधों के मध्यमान में सार्थकता का अंतर	115
4.4	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों के गृह समायोजन के मध्यमान में सार्थकता का अंतर	117
4.5	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों के स्वास्थ्य समायोजन के मध्यमान में सार्थकता का अंतर	119
4.6	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों के सामाजिक समायोजन के मध्यमान में सार्थकता का अंतर	121

4.7	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों के संवेगात्मक समायोजन के मध्यमान में सार्थकता का अंतर	123
4.8	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों के आक्रामकता स्तर के मध्यमान में सार्थकता का अंतर	125
4.9	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों की आत्म-अवधारणा के मध्यमान में सार्थकता का अंतर	127
4.10	मूक-बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक गुणांक मूल्य	129
4.11	मूक-बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक गुणांक मूल्य	132
4.12	मूक-बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक गुणांक मूल्य	135
4.13	मूक-बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक गुणांक मूल्य	138
4.14	मूक-बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक गुणांक मूल्य	141
4.15	मूक-बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक गुणांक मूल्य	144
4.16	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक गुणांक मूल्य	147
4.17	मूक-बधिर किशोरों के माता, पिता एवं अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक गुणांक मूल्य	150
4.18	मूक-बधिर किशोरियों के माता, पिता एवं अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक गुणांक मूल्य	152

4.19	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक गुणांक मूल्य	154
4.20	मूक-बधिर किशोरों के माता, पिता एवं अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म-अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक गुणांक मूल्य	155
4.21	मूक-बधिर किशोरियों के माता, पिता एवं अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म-अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक गुणांक मूल्य	157
4.22	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म-अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक गुणांक मूल्य	159
5.1	प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श चयन	175

ग्राफ सूची

ग्राफ संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
4.1	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके पिता के साथ संबंधों के मध्यमान एवं मानक विचलन का ग्राफ	112
4.2	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके माता के साथ संबंधों के मध्यमान एवं मानक विचलन का ग्राफ	114
4.3	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके अभिभावकों के साथ संबंधों के मध्यमान एवं मानक विचलन का ग्राफ	116
4.4	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों के गृह समायोजन के मध्यमान एवं मानक विचलन का ग्राफ	118
4.5	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों के स्वास्थ्य समायोजन के मध्यमान एवं मानक विचलन का ग्राफ	120
4.6	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों के सामाजिक समायोजन के मध्यमान एवं मानक विचलन का ग्राफ	122
4.7	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों के संवेगात्मक समायोजन के मध्यमान एवं मानक विचलन का ग्राफ	124
4.8	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों के आक्रामकता स्तर के मध्यमान एवं मानक विचलन का ग्राफ	126
4.9	मूक-बधिर किशोरों एवं किशोरियों की आत्म-अवधारणा के मध्यमान एवं मानक विचलन का ग्राफ	128

प्रथम अध्याय

समस्या एवं उसका प्रादुर्भाव

''अनुसंधान किसी समस्या का ईमानदारी एवं बुद्धिमत्ता से किया गया संधान है, जो तथ्यों तथा अर्थों का पता लगाने के लिए किया जाता है।''

– पी० एम० कुक

समस्या एवं उसका प्रादुर्भाव

1.1 प्रस्तावना

किशोरावस्था एक अनोखी अवस्था है। **एलिजाबेथ बी.हरलॉक** ने अपनी पुस्तक **'Adolescent Psychology' (1967)** में लिखा है कि, ''किशोर के जीवन में जहाँ प्रसन्नता एवं हर्ष है, वहाँ कुण्ठा, निराशा और हृदय को आघात पहुँचाने वाली स्थितियाँ भी हैं।''

यही कारण है कि, कुछ मनोवैज्ञानिक किशोरावस्था को 'जीवन का बसंत काल' कहते हैं, तो कुछ इसे 'संघर्ष व दबाव का काल' मानते हैं। इस विषय में **''हैडो कमेटी रिपोर्ट'' (1926)** में भी कहा गया है कि, ''11 या 12 वर्ष की आयु में बालक की नसों में ज्वार उठना प्रारंभ होता जाता है, जिसे किशोरावस्था के नाम से पुकारा जाता है। यदि इस ज्वार का समय रहते उपयोग कर लिया जाए और इसकी शक्ति तथा धारा के साथ–साथ नई यात्रा आरंभ कर दी जाए, तो सफलता प्राप्त की जा सकती है।''

बीज एवं हण्ट के अनुसार –''किशोरावस्था की विशेषताओं को सर्वोत्तम रूप से व्यक्त करने का एक शब्द है–परिवर्तन। ये परिवर्तन शारीरिक, सामाजिक, मानसिक और संवेगात्मक होते हैं।'' – *Psychological Foundations of Education, 1968, P-183*

किशोर जब बाल्यावस्था से परिपक्वावस्था की ओर संक्रमण करते हैं, तो उन्हें अपने सामाजिक संबंधों को भी पुनः परिभाषित करने पड़ते हैं। एक ओर, जहाँ अपने समवयस्कों के साथ उसके नवीन संबंधों का आविर्भाव होता है, वहीं दूसरी ओर, वे अपने परिवार के सदस्यों के साथ संबंधों में स्वयं के लिए आत्मनिर्भरता व संघर्ष को झेलते हैं। संघर्षों की इस श्रेणी में वे अपनी भूमिका के प्रति भी द्वंद्व, संशय व भ्रम की स्थिति में रहते हैं। क्योंकि इस अवस्था में उन्हें न तो बालक समझा जाता है और न ही वयस्क। अतः वे अपनी पहचान खोजते रहते हैं।

एरिकसन (1959) ने भी अपने **'मनोसामाजिक सिद्धांत'** में बताया है कि, ''किशोरों का मुख्य संघर्ष उनकी भूमिका व स्वपहचान के बीच होता है। जो किशोर स्वपहचान नहीं कर पाते, वे अपनी भूमिका के प्रति भ्रम की स्थिति में रहते हैं।''

स्वपहचान के साथ–साथ सामाजिक स्वीकार्यता भी किशोरों को समस्याग्रस्त रखती है। किशोर अपने परिवार, मित्रों, समुदाय एवं समवयस्कों में लोकप्रियता व सामाजिक स्वीकार्यता की तीव्र आकांक्षा रखते हैं। तथा जिन किशोरों को सामाजिक स्वीकरण नहीं मिलता, वे अनेक संवेगात्मक असामान्यता, यथा – कुण्ठा, अवसाद, तनाव, कुसमायोजन, आक्रामकता आदि से ग्रसित हो जाते हैं। समाजिक अस्वीकरण की समस्या तब और भी विकराल रूप धारण कर लेती है, जब किशोर किसी शारीरिक विकलांगता का शिकार होते हैं।

1.2 विकलांगता

किसी भी क्षेत्र में सफलतापूर्वक कार्य करने के लिए एक विशेष स्तर की परिपक्वता आवश्यक होती है। यदि किसी कारणवश व्यक्ति का किसी क्षेत्र विशेष में संतुलित विकास नही हो पाता है, तो वह उस क्षेत्र में न तो सफलतापूर्वक कार्य कर सकता है और न ही वांछित व्यवहार का प्रदर्शन कर सकता है, यही विकलांगता कहलाती है।

वेबस्टर शब्दकोश (1930) के अनुसार – ''विकलांगता वह बाधा है, जो उपलब्धियों को सामान्य रूप से दुर्लभ बना देती है।''

डॉ. भार्गव के अनुसार – ''विकलांगता एक निर्योग्यता है, जो व्यक्ति को सामान्य व्यक्तियों की तुलना में किसी विशेष क्षेत्र में कार्य करने में असमर्थ बनाती है।''

– विशिष्ट बालक–उनकी शिक्षा एवं पुनर्वास : महेश भार्गव, 2011,

विकलांग बालकों के अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि, विकलांग बालक औसत बालक से सर्वथा भिन्न नहीं होते बल्कि कोई पक्ष विशेष ही ऐसा होता है, जिसमें सीखने की स्थिति में विचलन उत्पन्न हो जाता है।

वास्तव में विकलांगता एक असंतुलन की स्थिति है, जो किसी भी व्यक्ति के सामान्य व्यवहार, विचार एवं कार्यशक्ति को न्यूनाधिक प्रभावित कर शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व संवेगात्मक असंतुलन उत्पन्न कर देती है।

एक मोटे अनुमान के अनुसार संसार भर में लगभग 40 करोड़ लोग किसी न किसी प्रकार की विकलांगता का शिकार हैं। भारत में 1980 में लगभग 11,18,948 विकलांग थे, जिनकी संख्या 2001 में बढ़कर 21,906,769 हो गई। 2001 की जनगणना में विकलांगों की संख्या कुल जनसंख्या का 2.13% थी।

विकलांगता चाहे जिस भी प्रकार की हो, विकलांग बालक अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करते हैं। ये समस्याएँ उनकी शिक्षा, आजीविका, पुनर्वासन, समायोजन, स्वावलंबन, आत्मनिर्भरता आदि से संबंधित हो सकती हैं।

उपर्युक्त समस्याओं में सबसे बड़ी समस्या शैक्षिक समस्या है। यदि इस समस्या को दूर कर दिया जाए, तो अन्य समस्याएँ स्वतः ही दूर हो जाएँगी। अतः दायित्व इस बात का है कि, प्रत्येक विकलांग बालक को उसकी क्षमता एवं सीमा के अनुसार शिक्षण–प्रशिक्षण प्रदान किया जाए, जिससे उनमें आत्मग्लानि, हीन भावना, परनिर्भरता, अकर्मण्यता, कुसमायोजन एवं नैराश्य के स्थान पर आत्म–गौरव, आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, स्वावलंबन, समायोजन एवं आशा का संचार हो सके। साथ ही अपनी विकलांगता को स्वीकार करते हुए उनमें जीवन जीने के प्रति आकर्षण भी उत्पन्न हो सके।

इसी उद्देश्य से 1981 को अंतर्राष्ट्रीय विकलांग वर्ष के रूप में भव्य घोषणाओं के साथ मनाया गया। फलतः विकलांगों की शिक्षा एवं पुनर्वास पर अधिकाधिक ध्यान केन्द्रित किया गया। इसी दिशा में 1982 में **भारतीय पुनर्वास परिषद अधिनियम** बना, जो 1993 से प्रभावी है। विकलांग व्यक्तियों को समान अवसर देने,

उनके अधिकारों का संरक्षण करने और उनकी पूर्ण भागीदारी से संबंधित कानून 1996 से लागू है।

परन्तु विकलांगों की शिक्षा व्यवस्था सुचारू रूप से नहीं चला पाने का दबाव भारतीय मनीषियों पर आज भी बना हुआ है। इसके मुख्य कारण हैं – प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी, अभिभावकों द्वारा विकलांग बच्चों की उपेक्षा, विकलांग बालकों का सामान्य विद्यालयों में समायोजित न हो पाना आदि। सामान्य विद्यालयों में समायोजित न हो पाने की स्थिति में ही विशिष्ट बालकों के लिए विशिष्ट शिक्षण संस्थाएँ स्थापित की गईं। इन संस्थाओं का मुख्य उद्देश्य विकलांग बालकों को शिक्षा के साथ–साथ व्यवसायिक प्रशिक्षण भी प्रदान करना है। जिससे वे आजीविका कमाने की योग्यता ग्रहण कर, आत्मनिर्भरता व स्वावलंबन से जीवन व्यतीत कर सकें।

सैमुअल ए0 किर्क ने विशिष्ट बालकों हेतु विशिष्ट शिक्षा का अनुमोदन करते हुए लिखा है कि –

''विशिष्ट बालक मानसिक, शारीरिक तथा सामाजिक गुणों में सामान्य बालकों से भिन्न होते हैं। उनकी भिन्नता कुछ ऐसी सीमा तक होती है कि, उन्हें स्कूल के सामान्य कार्यों में विशिष्ट शिक्षा सेवाओं में परिवर्तन की आवश्यकता होती है। ऐसे बालकों के लिए कुछ अतिरिक्त अनुदेशन भी चाहिए। ऐसी दशा में उनका सामर्थ्य, सामान्य बालकों की अपेक्षा अधिक विकसित हो सकता है।''

– *Educating Exceptional Children : Samuel A. Kirk ,1983*

विशिष्ट बालकों हेतु विशिष्ट शिक्षा

19वीं शताब्दी में अमेरिका तथा यूरोप के शिक्षाविद्‌ों एवं चिकित्सकों ने विकलांग बालकों की विशिष्ट शिक्षा हेतु क्रमबद्ध प्रयास किए। विशिष्ट शिक्षा के विकास में सहयोग देने वाले विद्वानों में कुछेक नाम अग्रणी हैंः

1. **J.M.G. Itard, (Physician)** - अनुदेशनात्मक विधियों के जन्मदाता थे। उन्हें बधिरों के लिए प्रथम वाणी विशेषज्ञ माना जाता है।

2. **E. Seguin –** मानसिक मंदित बालकों के महान् शिक्षक थे।
3. **George Dalgarno** – इन्होंने मूक–बधिरों के लिए लिखी पुस्तक "Deaf & Dumb Men Tutor" में अनुदेशनात्मक विधियों का विकास किया।
4. **Samuel Heenki** – मौखिक विधियों का विकास कर मूक–बधिर बालकों को lip reading का प्रशिक्षण दिया।
5. **Thomas Breadwood** – मूक–बधिरों को अक्षर एवं चिन्हों को समझाने के लिए शारीरिक भाषा का विकास किया।
6. **Michel Dale –** बाधितों के लिए सांकेतिक भाषा का विकास किया।
7. **T.M. Gallaudet** – बधिरों के लिए विशिष्ट विद्यालय प्रारंभ किया, जो आज अमेरिकन स्कूल के नाम से जाना जाता है।
8. **Grah'em Bell** – श्रवण–बाधितों की शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए।
9. **Helen Keller** – विशिष्ट शिक्षा द्वारा स्वयं के शारीरिक दोषों (बधिरांध) पर विजय प्राप्त की।
10. **Louis Braile** – दृष्टिहीन व्यक्तियों के लिए उभरे हुए बिंदुओं की सहायता से ब्रेल लिपि का विकास किया।

भारत में विशिष्ट शिक्षा

कोठारी कमीशन (1964–66) के अनुसार – ''प्रारंभिक शिक्षा की व्यापकता के लक्ष्य बालकों के विशिष्ट समूह की शिक्षण क्षेत्र में सफलता पर निर्भर करते हैं। जब तक बालकों के इस समूह के लिए उपयुक्त शिक्षा सेवाएँ उपलब्ध नहीं कराई जातीं, बाधित बालकों का शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश प्रारंभिक अवस्था में कम होगा।''

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में शारीरिक और मानसिक विकलांग बालकों को सामान्य बालकों के समान सहभागिता देने के उद्देश्य से विशिष्ट शिक्षा संबंधी यह प्रावधान रखा गया कि, जहाँ तक संभव हो, शारीरिक रूप से थोड़े विकलांग बालकों की शिक्षा व्यवस्था अन्य सामान्य बच्चों के साथ की जाए तथा गंभीर रूप से विकलांग बालकों के लिए जिला स्तर पर छात्रावास सहित विशेष विद्यालयों की

यथा संभव स्थापना की जाए। साथ ही विभिन्न प्रकार के विकलांगों हेतु व्यवसायिक प्रशिक्षण एवं प्रशिक्षित अध्यापकों की भी व्यवस्था की जाए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) द्वारा विशिष्ट विद्यालय संबंधी निम्नलिखित अनुमोदन प्रस्तुत किए गए :

जिला एवं उपजिला स्तर पर विशिष्ट विद्यालयों के साथ एक–एक औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र भी खोला जाए। लड़के व लड़कियों के लिए पृथक–पृथक छात्रावास हों। सातवीं पंचवर्षीय योजना में विशिष्ट विद्यालयों हेतु 3500 से 4000 विशिष्ट अध्यापकों को NCERT द्वारा प्रशिक्षित किया जाए तथा इन विद्यालयों का पाठयक्रम विकलांगों की विशिष्ट समस्याओं को ध्यान में रखकर संशोधित और परिष्कृत किया जाए। साथ ही विकलांगों की शिक्षा पर **NCERT, ICSSR, UGC** तथा **'National Institute for Handicapped'** आदि संस्थाओं द्वारा भारतीय परिस्थिति में अनुसंधान कराएँ तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय में एकीकृत सूचना प्रणाली की स्थापना की जाए और समय–समय पर शैक्षिक सर्वेक्षण, NCERT आदि संस्थाओं द्वारा कराया जाए।

भारत में मूक–बधिरों हेतु विशिष्ट विद्यालय

भारत में बधिर शिक्षा के इतिहास में **1885** में **बंबई** में पहला बधिर विद्यालय स्थापित हुआ। **1893** में **कलकत्ता** में **'मूक–बधिर विद्यालय'** की स्थापना हुई। **'क्लार्क बधिर विद्यालय'**, **चैन्नई** में श्रवणहीनता के कारण पिछड़े बालकों को शिक्षा उपलब्ध कराता है। **'नीलम पटेल बहुश्रुत फाउण्डेशन'**, **मुंबई** में श्रवणहीनता वाले बालकों को शिक्षा प्रदान करता है। **'राष्ट्रीय विकलांगता समान अवसर संस्थान'**, **मुंबई** में श्रवणहीन बच्चों के लिए शिक्षा, व्यवसायिक प्रशिक्षण व मनोरंजन की सुविधाएँ उपलब्ध कराता है। इसी प्रकार देश के अन्य भागों में भी श्रवण–बाधित विद्यालय स्थापित किए गए।

राजस्थान में **'सेठ आनन्दीलाल पोद्दार मूक–बधिरांध संस्थान'**, **जयपुर**, मूक–बधिर बालकों की शैक्षणिक और प्रशैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली पहली और अंतिम राजकीय संस्था है। यहाँ पढ़ाई के अलावा वयस्कों के लिए

सिलाई, दस्तकारी, शिल्पकारी, व्यवसायिक–चित्रकारी, जिल्द बाँधना आदि कार्यों के प्रशिक्षण की व्यवस्था है।

दूसरा बधिरांध विद्यालय **1961** में **डॉ. एस. पी. वान्यू** ने **अजमेर** में प्रारंभ किया। यह सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त एवं 90% सहायता प्राप्त संस्था है।

तीसरा बधिर विद्यालय **कोटा** में **1974** में **'बाधित बाल–विकास केन्द्र'** के नाम से एक बधिर पुत्री के पिता रानीवाला जी द्वारा खोला गया।

उदयपुर में **1977** में **डॉ. आर. के. अग्रवाल** द्वारा अपनी दत्तक पुत्री की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु बधिर विद्यालय खोला गया तथा **1982** में **'बधिर ज्योति पत्रिका'** के संपादक श्री सेवाराम छंगाणी, जो स्वयं बधिर हैं, ने **'बधिर विकास केन्द्र'** खोलकर अपने स्वप्न को साकार किया।

पश्चिमी राजस्थान में **जोधपुर** में भी **'बधिर कल्याण समिति'** का गठन किया गया।

इन सहायता प्राप्त संस्थाओं के अतिरिक्त राजस्थान में कुछ स्वयंसेवी संस्थाएँ भी मूक–बधिर बालकों के लिए सेवारत हैं। **'रतनगढ़ बधिर संस्था'**, **'राजस्थान बधिर सभा, जयपुर'** और **'राजस्थान बधिर बाल परिषद, जयपुर'** इनके उदाहरण हैं। ये संस्थाएँ वयस्क बधिरों की सामाजिक और खेलकूद संबंधी आवश्यकताओं की भी पूर्ति करती हैं।

समस्त विकलांग बालकों को **सैमुअल ए. किर्क (1983)** ने तीन मुख्य श्रेणियों में विभक्त किया है :

1. शारीरिक विकलांग
2. मानसिक विकलांग तथा
3. सामाजिक रूप से कुसमायोजित।

1.3 शारीरिक विकलांगता

शारीरिक विकलांगता किसी बालक की उस अवस्था को दर्शाती है, जिसमें किसी भी प्रकार की शारीरिक निर्योग्यता के कारण वह सामान्य बालकों की भाँति विभिन्न क्रियाकलापों में भाग नहीं ले पाते। जो बालक किसी इन्द्रिय की क्षति अथवा किसी अन्य शारीरिक दोष से ग्रसित होते हैं, वे शारीरिक विकलांग बालक कहलाते हैं।

एच. जे. बेकर के अनुसार – ''किसी व्यक्ति का शारीरिक विकार, जो उसकी सामान्य गतिविधियों में सहभागिता को सीमित या बाधित करे, को शारीरिक विकलांगता कहा जाएगा।'' – *Introduction to Exceptional children : Baker,1959*

क्रो एवं क्रो के अनुसार – ''एक व्यक्ति जिसमें कोई एक ऐसा शारीरिक दोष होता है, जो किसी भी प्रकार से उसे सामान्य क्रियाओं में भाग लेने से रोकता है अथवा सीमित रखता है, उसे हम शारीरिक न्यूनताग्रस्त या विकलांग व्यक्ति कह सकते हैं।

– *विशिष्ट वर्ग के बालकों की शिक्षा : बैस एवं सूत्रकार, 2006, P-68*

NCERT, स्त्रोत ग्रंथ के अनुसार – ''विकलांगता बालक के ऊपर एक प्रकार का अंकुश है, या बालक के द्वारा स्वयं अर्जित अंकुश है, जो उसकी दिन–प्रतिदिन की कुशलता को प्रभावित करता है।''

शारीरिक विकलांगता आनुवांशिक अथवा गर्भावस्था में जीवाणुओं, एक्स–किरणों, दवाओं, नशीले पदार्थों आदि के परिणामस्वरूप हो सकती है।

कैमेन एवं विलस्नैक (1994) ने अपने अध्ययनों में पाया कि, ''गर्भाधान के समय माँ का शराब एवं अन्य नशीले पदार्थों का सेवन मुख्य रूप से बच्चों में मानसिक विकलांगता, मस्तिष्क क्षतिग्रस्तता, अति क्रियाशीलता तथा शारीरिक विकलांगता को उत्पन्न करता है।''

– *विशिष्ट बालक–शिक्षा एवं पुनर्वास : महेश भार्गव, 2011, P-18*

जन्म के बाद अर्जित विकलांगता किसी दुर्घटना, प्राकृतिक आपदा, बीमारी, पोषण के अभाव या अन्य किसी अज्ञानता के कारण उत्पन्न हो सकती है।

शारीरिक विकलांगता के कारण व्यक्ति की क्षमताएँ अवरूद्ध हो जाती हैं, जिसका सीधा प्रभाव उसके मनोबल एवं मनोदशा पर पड़ता है। परिणामस्वरूप वह हीन भावना, भय, आक्रामकता, असुरक्षा, पलायन, तिरस्कार, अकेलेपन आदि मानसिक–संवेगात्मक ग्रंथियों का शिकार हो जाता है। वातावरण के साथ समायोजन में भी पर्याप्त कमी दिखाई देती है। इस प्रकार शारीरिक विकलांगता व्यक्ति के मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक आदि पहलुओं पर भी नकारात्मक प्रभाव डालने लगती है।

शारीरिक विकलांगता के प्रकार

शारीरिक रूप से विकलांग बालकों को निम्न श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है:

1. वाणी दोषयुक्त बालक
2. श्रवण दोषयुक्त बालक
3. दृष्टि दोषयुक्त बालक
4. अस्थि दोषयुक्त बालक

वाणी दोष – वाणी दोष से तात्पर्य ऐसे वाणी विकास से है, जिसमें वाणी अस्पष्ट एवं अनियमित शब्दों एवं ध्वनियों के रूप में प्रकट होती है।

वॉन राईपर (1978) के अनुसार – ''जब कोई वाणी दूसरे व्यक्तियों की वाणी से इतनी अधिक भिन्न हो कि, वह दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करे, संवाद में बाधा पहुँचाए या श्रोता तथा वक्ता दोनों की परेशानी और उलझन का कारण बने, तो वह वाणी असामान्य कही जाएगी।''

– शिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार :अरोड़ा एवं मारवाह, 2006, P–300

वाणी दोष को भी मुख्य रूप से दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है :
(i) वाक्‌दोष – इसमें हकलाना, तुतलाना, उच्चारण दोष आदि आते हैं।

(ii) गूंगापन या मूकता – जब बालक पूरी तरह से बोलने में अक्षम होते हैं तथा

शब्दों के स्थान पर उनके गले से विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ मात्र ही बाहर निकलती हैं, तब वे मूक बालक या गूंगेपन से ग्रसित विकलांग बालक कहलाते हैं।

श्रवण दोष – श्रवण दोष से तात्पर्य कानों द्वारा सुनने में बाधा अथवा श्रवण संबंधी अयोग्यता से है। श्रवण संबंधी विकलांगता से ग्रसित बालक को एक या दोनों कानों से सुनने में कठिनाई हो सकती है।

The Conference of Executives of American Schools for the Deaf (1952) के अनुसार – ''एक श्रवण दोषयुक्त व्यक्ति वह है, जो 70 डेसीबल तक की सीमा में सुनने की निर्योग्यता लिए हुए होता है।''

श्रवण–दोष को बधिर विद्यालयों की अमेरिकन कार्यकारिणी ने दो भागों में विभक्त किया है :
(i) **मंद कर्ण** – जिनकी कर्णेन्द्रिय दोषयुक्त होते हुए भी क्रियाशील होती है, वे ऊँचा सुनने वाले बालक होते हैं, अर्थात् जिन्हें उपकरणों की सहायता से सुनाई दे सकता है।

(ii) **बधिर कर्ण** – जिनकी कर्णेन्द्रिय पूर्ण रूप से कार्य करना बंद कर देती है, व किसी उपकरण की सहायता से भी वे सुनने में सक्षम नहीं हो पाते, ऐसे बालक बधिर बालक कहलाते हैं। बधिरता जन्मजात अथवा किसी दुर्घटना या रोग के परिणामस्वरूप अर्जित भी हो सकती है।

स्ट्रेंज (1989) के अनुसार – ''जिन बालकों में जन्म से ही थोड़ी या बिल्कुल भी बाल्यावस्था में श्रवण शक्ति के ह्रास से ग्रसित होते हैं, बधिर कहलाते हैं। तथा मंद कर्ण बालक वे होते हैं, जो जन्म से या बाद में कम सुनने लगते हैं।''

- *Human Disabilities, 1989*

इस प्रकार कहा जा सकता है कि, श्रवण दोष से तात्पर्य अन्य के द्वारा बोले गए शब्दों को ठीक उसी रूप में ग्रहण करने की अयोग्यता से है तथा वाणी दोष से तात्पर्य स्वयं के शब्दों व भाषा को अन्य व्यक्तियों तक ठीक उसी रूप में प्रेषित करने की अयोग्यता से है।

वाणी एवं श्रवण दोष की विशेषताओं को निम्न तालिका द्वारा समझा जा सकता है :

तालिका 1.1

क्र.सं.	स्मूह		विशेषताएँ
1.	सामान्य श्रवण (25 डेसीबल तक)		श्रवण संवेदना कौशल एवं वाणी दोनों सामान्य।
2.	मंद–श्रवण दोष (26–40 डेसीबल तक)		अत्यंत धीमी एवं कोलाहल भरे वातावरण में श्रवण–संवेदना संबंधी कठिनाई। वाणी विकास सामान्य सीमा के अंतर्गत।
3.	मध्यम श्रवण दोष (41–55 डेसीबल तक)		उच्चारण संबंधी दोष, भाषण समझने, सुनने में कठिनाई किंतु श्रवण यंत्र की सहायता से आसानी।
4.	मध्यम से अधिक श्रवण दोष (56–70 डेसीबल तक)		प्रारंभिक भाषा एवं वाणी समझने में कठिनाई। जोर से बोली गई बातों को समझते हैं। श्रवण यंत्र अत्यंत आवश्यक।
5.	तीव्र श्रवण दोष (71–90 डेसीबल)		कान के बिल्कुल पास की जाने वाली ध्वनियों को ही सुन पाते हैं। श्रवण यंत्र के उपरान्त भी सुनने में कठिनाई। वाणी अस्पष्ट एवं भाषा विकास अस्वाभाविक।
6.	दुर्बोध श्रवण दोष (91 एवं ऊपर डेसीबल)		पूर्ण रूप से मूक–बधिर। सुनने एवं बोलने दोनों में ही अक्षम। श्रवण यंत्र अप्रभावी। संकेत, हाव–भाव, ओष्ठ–पठन आदि युक्तियों से संप्रेषण संभव। विशिष्ट विद्यालय आवश्यक।

1.4 मूक–बधिरता

यद्यपि मूक एवं बधिरता दो अलग–अलग शारीरिक दोष हैं, तथापि देखा गया है कि, जो बालक पूर्णतः बधिर होते हैं, वे मूक भी होते हैं। चूँकि श्रवण, मौखिक–संदेश वाहकता व भाषा विकास का मुख्य ज्ञानेन्द्रिय मार्ग है, अतः श्रवण दोष संप्रेषण में बाधा पहुँचाते हैं, जिससे बालक शाब्दिक अभिव्यक्ति में भी अक्षम हो जाते हैं। ध्वनि सुनाई न दे पाने के कारण वे स्वाभाविक भाषा अर्जित नहीं कर पाते और परिणामतः मूक– बधिर की श्रेणी में आ जाते हैं।

हलाहन एवं कॉफमैन के अनुसार – ''वह बालक जिसने जीवन के प्रारंभिक दो या तीन वर्षों में श्रवण शक्ति की हानि सही हो और जिसने इसके परिणामस्वरूप स्वाभाविक भाषा अर्जित न की हो, वह मूक–बधिर समझा जाएगा।''

– *Exceptional Children : Hallahan D.P. and Kauffman J.M., 1991*

मूक बधिर बालक शारीरिक विकलांगता का शिकार तो होते ही हैं, साथ ही मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक समस्याओं से भी घिरे होते हैं। ये बालक प्रायः अन्तर्मुखी, निराशावादी, संवेगात्मक रूप से अस्थिर, कुसमायोजित, निष्क्रिय, आत्मकेन्द्रित, चिंताग्रस्त, एकाकी, निर्भर प्रवृत्ति एवं कभी–कभी उग्र तथा आक्रामक भी होते हैं।

रटर (1970), शैफार्ड (1979), सेठ (1989) तथा अरूणा एवं रेड्डी (2000) ने मूक बधिर बालकों की भावात्मक एवं व्यवहार संबंधी समस्याओं को विशेष रूप से समझने के लिए अध्ययन किए, जिसमें मूक–बधिर बालकों में समस्यात्मक व्यवहार का प्रतिशत अधिक पाया गया तथा मूक–बधिर बालकों एवं सामान्य बालकों के व्यक्तित्व की विभिन्न विशेषताओं में भी सार्थक अंतर पाया गया।

देशमुख एवं पाण्डे (1980) ने 200 शारीरिक अक्षमता वाले बालकों तथा 200 सामान्य बालकों पर अध्ययन किया तथा पाया कि, शारीरिक स्थिति का मनोवैज्ञानिक निर्भरता व विशेषता में सार्थक अंतर है।

फ्रेंक (1996) एवं गैरल (2001) के 'मूक–बधिर बालकों एवं सामान्य बालकों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन' में मूक–बधिर बालक सामान्य बालकों की तुलना में अधिक निराशावादी पाए गए। उनमें हीन भावना एवं भय की भावना की अधिकता तथा स्वाभिमान एवं आत्मविश्वास की कमी पाई गई।

एल.एम. डी कार्लो एवं डब्ल्यू.डब्ल्यू. एमस्टर (1983) ने विकलांग बालकों पर किए गए अध्ययन में पाया कि, शारीरिक बाधाग्रस्त बालकों में परिपक्वता की मात्रा सामान्य बालकों की तुलना में कुछ कम होती है तथा उनमें वैयक्तिक समायोजन, सामाजिक सामर्थ्य, सामाजिक स्वीकृति एवं आत्मस्वीकृति भी कम पायी गई।

उपर्युक्त अध्ययनों में देखा गया है कि, विकलांग बालकों में हीन भावना अधिक व आत्म स्वीकृति कम पायी जाती है। जिसका सबसे बड़ा कारण है कि, वे स्वयं की कमी या न्यूनता को स्वीकार नहीं कर पाते। आत्म–स्वीकृति की कमी के कारण वे सामाजिक क्रियाकलापों से बचते हैं तथा अपनी कमी की वास्तविकता को छिपाने का प्रयास करते हैं।

मैथ्यू (1984) का भी मानना है कि, ''स्वयं में किसी कमी को महसूस करने के कारण ही व्यक्ति के आत्मविश्वास में कमी हो जाती है, जिसमें उसकी योगयताओं में भी कमी आती है। तथा वह व्यक्ति मनोवैज्ञानिक रूप से स्वयं को व्यक्तिगत स्तर पर समायोजित नहीं कर पाता है।''

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बालकों की शारीरिक विकलांगता, उनके व्यक्तित्व, व्यवहार, समायोजन इत्यादि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। इसका परिवार के वातावरण एवं अभिभावकों के साथ भी गहरा संबंध होता है। ऐसी स्थिति में माता–पिता तथा शिक्षकों का यह दायित्व है कि, वे विकलांग बालकों को यथार्थता स्वीकार करने में सहायता करें तथा उनके आत्मविश्वास एवं आत्म अवधारणा को उच्च बनाने का प्रयास करें। इससे विकलांग बालकों की हीन भावना में कमी आएगी तथा अन्य कई मनोवैज्ञानिक समस्याओं को कम करने में सहायता मिलेगी।

1.5 अभिभावक-बालक संबंध

यंग एवं मैक के अनुसार – ''परिवार सबसे पुराना और मौखिक मानव समूह है। पारिवारिक ढाँचे का विशिष्ट रूप एक समाज से दूसरे समाज में भिन्न हो सकता है, पर सभी जगह परिवार के मुख्य कार्य समान ही है, जैसे – बच्चों का पालन करना तथा उन्हें समाज एवं संस्कृति से परिचित कराना। सारांश में उनका सामाजीकरण करना।'' – *शिक्षा मनोविज्ञान : पी.डी. पाठक, 2007, P-171*

वास्तव में बालकों का समुचित मार्गदर्शन करना अभिभावकों का ही दायित्व है। बालक में अच्छी आदतों का निर्माण, संस्कारों का बीजारोपण एवं सद्गुणों व सद्व्यवहार का विकास माता–पिता की ही देन होती है।

यद्यपि सभी प्रकार के मानवीय संबंध अनुपम होते हैं, तथापि अभिभावकों एवं बालकों के मध्य निर्मित संबंध महत्वपूर्ण विशेषताएँ लिए हुए होते हैं। किसी भी बालक का व्यक्तित्व, व्यवहार, समायोजन, अभिवृत्ति आदि माता–पिता एवं बालकों के मध्य स्थापित संबंधों से प्रभावित होते हैं।

स्टेनबर्ग (2001) ने भी किशोरों के विकास में सबसे महत्वपूर्ण विषयक के रूप में माता एवं किशोरों के संबंध को माना है – *Journal of Psychometry, Jul-Dec.2010*

माता–पिता एवं बालकों के मध्य परस्पर संबंध अभिभावकों की बालकों के प्रति मनोवृत्ति पर निर्भर करते हैं। देखा गया है कि, परिवार में जन्म लेने वाले पहले बालक के प्रति माता–पिता का स्नेह, प्रेम एवं स्वीकृति ज्यादा होती है। इसी प्रकार सबसे छोटे बालक को भी लाड़–प्यार अधिक मिलता है। किन्तु मध्यक्रम में जन्म लेने वाले बालक प्रायः स्वयं को उपेक्षित व तिरस्कृत महसूस करते हैं। जिसके कारण उनके एवं अभिभावकों के मध्य संबंधों में कभी–कभी तनाव प्रदर्शित होता है।

सन्धु एवं भार्गव (1987) ने अपने अध्ययन में पाया कि, तिरस्कृत बालकों के व्यक्तित्व पर पारिवारिक कारक, जैसे – परिवार का आकार, पारिवारिक प्रतिमान, लिंग, जन्मक्रम आदि सार्थक रूप से प्रभाव डालते हैं।

फ्लावन (1968) ने अपने अध्ययन में पाया कि, कम आयु वाले युवा अभिभावक अपनी संतान के प्रति अधिक उत्तरदायी होते हैं तथा उनका बालक के साथ अच्छा समायोजन होता है, जबकि प्रौढ़ अभिभावक अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह भली भाँति नहीं कर पाते तथा बालकों के साथ उनके संबंध भी अधिक मधुर नहीं होते।

परिवार का आकार भी अभिभावक–बालक संबंधों पर प्रभाव डालता है।

हरलॉक (1967) ने अपने एक अध्ययन में पाया कि, छोटे परिवारों में अभिभावक अधिक समय व ध्यान देते हैं। छोटे परिवारों में सुख सुविधाएँ अच्छी होती हैं,सदस्यों के मध्य संबंध मधुर होते हैं, अनुशासन अच्छा होता है एवं वातावरण भी प्रजातांत्रिक होता है। इसके विपरीत बड़े परिवारों में सुख–सुविधाएँ पर्याप्त नहीं होती,सदस्यों पर अनुशासन और नियंत्रण कम होता है व अभिभावक–बालकों के मध्य संबंधों में भी निकटता अपेक्षाकृत कम रहती है। – *Adolescent Development : E. B.Hurlock,1967*

जेम्स, एच.एस. बोसार्ड (1948) के अनुसार – ''परिवार में अकेला बालक अपने माता–पिता को आदर्श रूप में स्वीकार करता है, तथा अकेला होने के कारण वह अपना अधिक समय घर में ही व्यतीत करता है, जिससे वह माता–पिता के अधिक निकट होता है तथा उनके साथ उसके संबंध भी घनिष्ठ होते हैं।''

– *Sociology of Child Development : James H.S. Bossard, 1948*

अभिभावकों का अपनी संतान के साथ संबंधों पर लिंग भेद भी प्रभाव डालता है। भारतीय परिवारों में माँ अपनी बेटियों की अपेक्षा बेटों से अधिक स्नेह करती हैं, जबकि पिता का स्नेह बेटियों पर अधिक होता है। जिन परिवारों में पुत्र की चाह होने पर पुत्री का जन्म हो जाता है, वहाँ भी संबंधों में मधुरता नहीं रहती।

बॉलर एवं कैलन (1990) ने भी अपने अध्ययन 'Adolescents Perceptions of the Nature of their Communication with Parents' में पाया कि, लिंग भेद अभिभावकीय संबंधों को प्रभावित करता है। उन्होंने देखा कि किशोर बालकों की तुलना में किशोर बालिकाएँ अपने माता–पिता के साथ संप्रेषण में कम संतुष्ट होती हैं।

– *Journal of Youth & Adolecent 19(4)349-362*

इसके विपरीत **फॉरहैण्ड (1993) तथा पॉलसन एवं स्पूता (1996)** ने अपने अध्ययन 'Patterns of parenting during adolescence' में बालक अभिभावक संबंधों पर लिंगभेद का कोई प्रभाव नहीं पाया। – Adolescence,31 (122) 369-381

आसुबेल (1958) ने भी अपने अध्ययन में देखा कि, लड़कों की अपेक्षा लड़कियाँ माता–पिता द्वारा स्वीकृति अधिक अनुभव करती हैं।

– *Theory & Problems of Child Development, 1958*

अलग–अलग अवस्थाओं में भी अभिभावक–बालक संबंधों में परिवर्तन आता है। जब बालक छोटे होते हैं, तो वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पूर्ण रूप से अपने माता–पिता पर ही आश्रित होते हैं। तब उनके मध्य प्रेम एवं स्नेह की पराकाष्ठा होती है, किन्तु जैसे–जैसे बालक बड़े होते जाते हैं, उनकी माता–पिता पर निर्भरता कम होती जाती है। अतः माता–पिता को भी किशोरों पर नियंत्रण कुछ कम कर देना चाहिए अन्यथा किशोरों एवं अभिभावकों के मध्य संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है।

लीविस एवं बीलर (1963) का भी मानना है कि, ''जब अभिभावकों में यह समझदारी आ जाती है कि, किशोरों को भी सीमित स्वतंत्रता चाहिए तो उनके संबंध तनावपूर्ण नहीं रहते।'' – *व्यक्तित्व मनोविज्ञान : सीताराम जायसवाल,1974*

कई अभिभावक बालकों को अति–सुरक्षा प्रदान करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप बालकों में आत्मविश्वास की कमी, पराश्रित वृत्ति, निर्णय लेने की अयोग्यता आदि उत्पन्न हो जाते हैं। इसके विपरीत कई अभिभावक, बालकों को कड़े अनुशासन में रखकर तानाशाही प्रवृत्ति द्वारा अति नियंत्रण रखते हैं, जिसके फलस्वरूप बालकों में उद्‌दण्डता, कुतर्क तथा विद्रोह की भावना जन्म ले लेती है।

उक्त दोनों ही परिस्थितियों में अभिभावक–बालक संबंधों में कटुता आती है। इस संबंध में हुए बहुत से अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि माता–पिता प्रायः अपने बालक–बालिकाओं के साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं, जैसा व्यवहार उनके माता–पिता ने उनके साथ किया था।

सायमण्ड्स (1939) ने अपने अध्ययनों में देखा कि, जो माता–पिता बच्चों को प्रेम व सुरक्षा प्रदान करते हैं, उनके माता–पिता ने भी उन्हें प्रेम और सुरक्षा प्रदान की थी। तथा जो माता–पिता तानाशाही रवैया अपनाते हैं, उन्हें भी अपने बाल्यकाल में वही तानाशाही रवैया प्राप्त हुआ था। माता–पिता घर में अनुशासन का वही तरीका अपनाते हैं, जिसका अनुभव उन्होंने अपने बाल्यकाल में किया था।

— *The Psychology of Parent-Child Relationship, New York, 1939*

माता–पिता के व्यक्तित्व एवं अभिवृत्तियों का प्रभाव उनके व्यवहार पर पड़ता है तथा व्यवहार का प्रभाव बालकों के साथ उनके संबंधों पर पड़ता है।

सियर्स, मैकोली एवं लेविन तथा **फैलस** के अनुसार – ''अभिभावक–बालक संबंधों पर प्रभाव डालने वाला महत्वपूर्ण तत्व घर का स्नेहपूर्ण वातावरण होता है।''

— *Patterns of Child Rearing, 1957*

परन्तु कभी–कभी किन्हीं परिवारों में माता–पिता के मध्य निरन्तर संघर्ष से घर का वातावरण अशांत एवं तनावपूर्ण होता है। ऐसे वातावरण में बच्चे खिन्न, असंतुष्ट एवं उदासीन हो जाते हैं तथा उनके माता–पिता के साथ संबंधों में कटुता आ जाती है।

श्रीमती निर्मला शेर जंग (1997) ने अपनी पुस्तक **'बाल विकास और उसकी समस्याएँ'** में भी यही बात कही है। उनके अनुसार – ''जहाँ माता–पिता में परस्पर झगड़ा रहता है, उस परिवार के बच्चों की दशा अत्यंत शोचनीय हो जाती है। वे कभी माता के प्रति कटु हो जाते हैं तो कभी पिता के प्रति।''

इसी प्रकार भग्न परिवार भी अभिभावक–बालक संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। माता–पिता के मध्य संबंध विच्छेद अथवा दोनों में से किसी एक के निधन होने की स्थिति में बालकों का सारा उत्तदायित्व एकल–अभिभावक (single parent) पर पड़ जाता है। वे कार्य के बोझ, तनाव एवं चिड़चिड़ाहट से ग्रसित रहते हैं, जिससे बालकों के साथ उनके संबंध सामान्य नहीं रह पाते। माता अथवा पिता

के पुनर्विवाह से भी अभिभावक–बालक संबंधों में परिवर्तन आ जाता है। उनमें निकटता का अभाव हो जाता है।

बोसार्ड (1948) ने अपने अध्ययन में परिभाषित किया कि ''जब बालक चाहता है कि अभिभावक उसकी ओर ध्यान दें और अभिभावक बालक की अपेक्षाओं के अनुसार व्यवहार नहीं करते तो अभिभावक बालक संबंधों में दरार आ जाती है।''

– The Sociology of Child Development : James H.S.Bossard, 1948

विकलांग बालक व अभिभावकीय संबंध

माता–पिता एवं बालकों के मध्य संबंधों को एक और महत्वपूर्ण कारक तीव्रता से प्रभावित करता है, वह है बालक की विकलांगता। कई बार बालक किसी शारीरिक, मानसिक अथवा संवेगात्मक दोष से ग्रसित होते हैं, जिसे अधिकांश अभिभावक स्वीकार नहीं कर पाते। अस्वीकृति की स्थिति में अभिभावकों एवं बालकों के मध्य संबंध तनावपूर्ण हो जाते हैं। अभिभावक बच्चों में रूचि नहीं लेते, उन्हें दण्ड देते हैं, उनकी उपेक्षा करते हैं, उनकी तुलना अन्य बालकों से कर उन्हें हीनता महसूस कराते हैं, उन्हें बात–बात पर झिड़कते या डाँटते हैं तथा कभी कभी मज़ाक भी उड़ा देते हैं। ऐसी स्थिति समस्याप्रद हो जाती है, जिससे संबंधों में एक गहरी खाई निर्मित हो जाती है तथा बालक अनेक प्रकार की संवेगात्मक समस्याओं का भी शिकार हो जाते हैं।

सोमर्स (1998) ने अपने शोध 'बाधित बालकों की संवेगात्मक समयोजनशीलता पर पारिवारिक अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन' द्वारा यह निष्कर्ष निकाला कि, जिन अभिभावकों को अपने बालकों की शारीरिक विकलांगता पर लज्जा का अनुभव होता है, उन बालकों में संवेगात्मक समस्याएँ अधिक पाई जाती हैं तथा उनमें समायोजन का अभाव भी पाया जाता है। *– International Journal of Special Education ,2011*

शर्मा एवं पांडे (1994) ने भी अपने अध्ययन में पाया कि, अभिभावकों द्वारा विकलांग बालकों के अस्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव उनके समायोजन एवं संज्ञानात्मक क्षमता पर पड़ता है।

1.6 समायोजन

समायोजन से तात्पर्य व्यक्ति की विभिन्न आवश्यकताओं तथा उन आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली परिस्थितियों में सामंजस्य तथा संतुलन स्थापित करने की प्रक्रिया से है।

यह तो सर्वविदित है कि, प्रत्येक जीवित प्राणी की अनेक आवश्यकताएँ होती हैं। यही आवश्यकताएँ व्यक्ति को लक्ष्य प्राप्ति की ओर प्रेरित करती हैं। जब व्यक्ति अपने प्रयासों से परिस्थितियों के अनुकूल रहकर लक्ष्य प्राप्ति में सफल हो जाता है, तो वह संतुष्ट और समायोजित हो जाता है, किन्तु यदि वह लक्ष्य प्राप्ति की बाधाओं को दूर करने में असफल होता है, तो वह कुसमायोजन का शिकार हो जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि **समायोजन** – संतुलन की तथा **कुसमायोजन** – असंतुलन की दशा होती है।

आइज़नेक (1972) के अनुसार – ''समायोजन वह अवस्था है, जिसमें एक ओर व्यक्ति की आवश्यकताएँ तथा दूसरी ओर वातावरण के अधिकारों में पूर्ण संतुष्टि होती है अथवा यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा इन दो अवस्थाओं में संतोषजनक सामंजस्य प्राप्त होता है।'' – *आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान : प्रीति वर्मा, 2012*

स्मिथ (1961) के अनुसार – ''एक अच्छा समंजन वह है, जो यथार्थपूर्णता के साथ–साथ व्यक्ति को संतोष प्रदान करता है। अन्ततोगत्वा यह व्यक्ति की कुण्ठाओं, उसके तनावों एवं चिंताओं, जिन्हें उसे सहन करना पड़ता है, को न्यूनतम बना देता है। – *Personality Adjustment : H.C.Smith, 1961*

नॉर्मन एल. मन (1969) के अनुसार – ''समंजन स्थिर एवं नियत होने की अपेक्षा एक ऐसी अविराम प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को संतुष्ट करता है तथा यह मानवीय व्यवहार के वस्तुतः सभी पक्षों से संबंधित रहती है।''

– *Introduction to Psychology (Third Edition): Munn N.L., 1969*

वास्तव में समायोजन एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक परिवर्त्य है, जिसे मनोवैज्ञानिकों ने एक प्रक्रिया के रूप में विश्लेषित किया है। यह एक गतिशील प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति और पर्यावरण दोनों के मध्य निरंतर अंतःक्रिया होती है। समायोजन हेतु कई बार व्यक्ति स्वयं को बदलता है, तो कभी वह वातावरण को बदलने का प्रयास करता है। ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं, जब व्यक्ति ने समायोजन की प्रक्रिया में स्वयं एवं वातावरण दोनों को परिवर्तित किया है।

डॉ. इन्दु दवे (1971) के अनुसार – ''जीवन और समायोजन सहभागी प्रक्रिया हैं और अन्योन्याश्रित भी। व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में शारीरिक तनावों को दूर करने के लिए जो भी स्वाभाविक क्रियाएँ करता है, यथा–आहार, निद्रा, विश्राम, उत्सर्जन आदि सभी मूलतः समायोजन की ही प्रक्रियाएँ हैं। इसके अतिरिक्त प्राणी अपने वातावरण के प्रति भी सहज प्रतिवर्ती क्रिया करता है, जिसके अंतर्गत कभी उसका व्यक्तित्व परिवर्तन होता है, तो कभी वातावरण परिवर्तन।''

– शिक्षा के मनावैज्ञानिक आधार : डॉ. इन्दु दवे, 1971, P 296-297

जीन पियाजे (1967) ने समायोजन पर विभिन्न अध्ययन किए तथा समायोजन हेतु स्वयं बदलने के लिए आत्मसात्करण एवं वातावरण को बदलने के लिए व्यवस्थापन पदों का प्रयोग किया। उनके अनुसार व्यक्ति को समायोजित होने के लिए दोनों युक्तियों का प्रयोग करना होता है। **-** *Notes on learning (Saturday Review), 1967*

सरकॉफ (1984) मानते हैं कि, ''समायोजन कभी पूर्ण नहीं होता, जिसे सदैव के लिए हासिल कर लिया जाए, बल्कि परिस्थितियों के अनुरूप इसे बार–बार हासिल करना पड़ता है।''

समायोजन के कुछ विशिष्ट क्षेत्र होते हैं, जहाँ व्यक्ति को संतुलन स्थापित करना आवश्यक होता है, यथा–गृह समायोजन, शैक्षिक समायोजन, संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन आदि। किन्तु व्यक्ति के जीवन में कई ऐसे कारक भी उपस्थित हो जाते हैं, जो समायोजन स्थापित करने में कठिनाई उत्पन्न करते हैं।

समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों में सबसे महत्वपूर्ण है – किशोरावस्था। चूंकि किशोरावस्था अनेक शारीरिक, मानसिक व संवेगात्मक परिवर्तनों की अवस्था है, अतः इस अवस्था में किशोरों में समायोजन की समस्या सबसे अधिक आती है।

परमेश्वरन (1957) ने किशोरों और वयस्कों की तुलना विभिन्न व्यक्तित्व परिवर्त्यों के आधार पर की। इस अध्ययन में देखा गया कि विभिन्न क्षेत्रों, जैसे–परनिर्भरता, प्रभावशीलता, आज्ञापालन आदि में किशोरों की अपेक्षा वयस्क अधिक समायोजित होते हैं।

एस.डी सिंह (1961) ने अपने अध्ययन में देखा कि, अधिकांश किशोर नैतिक तथा धार्मिक समायोजन नहीं कर पाते हैं।

कक्कड़ (1967) ने अध्ययन में पाया कि, किशोरों में समायोजन की समस्याएँ स्कूल की चिंता के कारण भी होती हैं।

यद्यपि चिंता एक सामान्य लक्षण है, जिसे कोलमैन ने ''भय और आशंका की सामान्यीकृत अनुभूति'' के रूप में परिभाषित किया है। यह प्रायः सभी व्यक्तियों में पाई जाती है, तथापि किशोरावस्था में इसकी मात्रा अन्य अवस्थाओं से अधिक पाई जाती है। किशोरों को शिक्षा, व्यवसाय, धन, विवाह, मित्र, प्रेम संबंधों, भविष्य आदि बहुत सी चिंताएँ सताती हैं, जो उनमें कुसमायोजन को जन्म देती हैं।

डी. एन. श्रीवास्तव (1975) ने अपने अध्ययन में देखा कि, उच्च चिंता युक्त प्रयोज्यों का समायोजन सभी क्षेत्रों में दुर्बल था। दूसरी ओर जिन प्रयोज्यों में चिंता की मात्रा कम थी, उनका समायोजन सभी क्षेत्रों में बेहतर था।

किशोरों के लिए शैक्षिक उपलब्धि बहुत महत्वपूर्ण होती है। अच्छी शैक्षिक उपलब्धि, जहाँ उन्हें सम्मान और संतुष्टि देती है, वहीं निम्न शैक्षिक उपलब्धि उनमें समायोजन की समस्या उत्पन्न कर देती है।

नारायण राव (1967) एवं **डी. एन. श्रीवास्तव (1975)** ने शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन संबंधी अध्ययन में 'Trivarient Analysis' के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि, समायोजन संबंधी समस्याएँ निम्न उपलब्धि प्राप्त करने वाले व्यक्तियों से अधिक संबंधित होती हैं तथा उच्च शैक्षिक उपलब्धि, उच्च समायोजन में सहायक होती है।

किशोरावस्था में विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों का आकांक्षा स्तर भी समायोजन को प्रभावित करता है। देखा गया है कि, यदि किशोर स्वयं अथवा उसके माता–पिता, उसकी योग्यताओं से अधिक आकांक्षाएँ स्थापित कर लेते हैं, तो वे लक्ष्य प्राप्ति में असफल हो जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वे तनाव, कुण्ठा एवं अवसाद से ग्रसित होकर कुसमायोजन का शिकार हो जाते हैं।

शायद यही कारण है कि कोटा जैसी शैक्षिक नगरी में प्रतिवर्ष हजारों बच्चे आई.आई.टी. एवं मेडिकल जैसे क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने की आकांक्षा लेकर आते हैं, किन्तु कई विद्यार्थियों की आकांक्षाएँ उनकी योग्यता स्तर के अनुरूप नहीं होने के कारण वे कुसमायोजित होकर आत्महत्या जैसे कुमार्ग को अपना लेते हैं।

इसके विपरीत अपनी रूचियों एवं योग्यताओं के अनुरूप आकांक्षाएँ निर्धारित करने वाले किशोरों का समायोजन बेहतर होता है।

चूँकि समायोजन एक व्यक्तिगत परिवर्त्य एवं अर्जित प्रक्रिया है, जिसे व्यक्ति वातावरण में रहकर सीखता है, अतः किशोरों की समायोजनशीलता पर उनके पारिवारिक वातावरण एवं अभिभावकीय संबंधों का महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

कुप्पुस्वामी (1963) का मानना है कि, जिन माता–पिता में निरंतर संघर्ष होता रहता है, वे समायोजन की समस्या वाले बालकों में अत्यधिक प्रतिशत का कारण होते हैं।

— *Advanced Educational Psychology : Kuppuswamy B., 1963, P-386*

रैडके (1946) कहते हैं कि, ''जिन परिवारों का वातावरण अतिरक्षणपरक होता है, उनमें रहने वाले किशोरों को समायोजन संबंधी समस्याएँ आती हैं।

—*The Relation of Parental Authority to Children's Behaviour & Attitudes:Radke,1946*

सागर शर्मा (1971) तथा **पी.वर्मा (1974)** ने अपने अध्ययनों में देखा कि, परिवार का आर्थिक स्तर समायोजन को महत्त्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है। जिन बच्चों के माता–पिता उच्च प्रतिष्ठा वाले थे उनका समायोजन अच्छा पाया गया।

समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों में एक और अत्यंत महत्त्वपूर्ण कारक है – शारीरिक निर्योग्यता या विकलांगता, जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

कुप्पुस्वामी (1963) के अनुसार – ''गंभीर शारीरिक दोष बालक में हीनता की भावनाएँ उत्पन्न करके, समायोजन की समस्याएँ उत्पन्न कर सकते हैं।''

– *Advanced Educational Psychology: Kuppuswamy,1963*

वेबर (1953) के अनुसार – ''शारीरिक निर्योग्यता और सामान्य वैयक्तिक समायोजन में घनिष्ठ संबंध होता है। किसी भी प्रकार की शारीरिक–मानसिक अक्षमता समायोजन में बाधक होती है।''

शारीरिक विकलांगता से ग्रसित बालक इस भावना से विक्षुब्ध होते हैं कि, वे एक अलपसंख्यक समूह के सदस्य हैं, जो समाज में उपेक्षित हैं। ये उपेक्षा एवं हीनता की भावना उनके समायोजन को प्रभावित करती है।

एम. रेड्डी (1971) ने अपने अध्ययन में देखा कि, दुर्बल आत्म प्रत्यय एवं हीनता की भावना किशोरों के समायोजन को महत्त्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करते हैं।

चूँकि हीनता एवं उपेक्षा की भावना विकलांग बालकों में अधिक पाई जाती है, अतः वे एकाकी जीवन व्यतीत करना अधिक पसन्द करते हैं।

आर.डी. पाठक (1972) ने अपने अध्ययन में देखा कि, एकाकी जीवन व्यतीत करने वाले बालकों का समायोजन सामान्य बालकों की तुलना में बहुत भिन्न होता है।

बार्कर, गैरेट एवं गैरीसन (1983) द्वारा किए गए अध्ययनों में भी पाया गया कि, शारीरिक विकलांग बालकों में सामान्य बालकों की अपेक्षा समायोजन, आत्मविश्वास और सामाजिक स्वीकृति भी कम होती है। –*Educational Psychology,1990*

पूर्व अध्ययनों में विकलांग बालकों की पारिवारिक अस्वीकृति प्रकाश में आई है। सामान्यतः यह देखा गया है कि विकलांग बालक परिवार, विद्यालय, समाज आदि में कम स्वीकार किए जाते हैं। ये अस्वीकृति भी समायोजन को प्रभावित करती है।

कक्कर (1999) ने अपने अध्ययन में पाया कि, किशोरों के प्रति अभिभावकों का स्वीकरण एवं अस्वीकरण उनकी समायोजन संबंधी समस्याओं से सार्थक रूप में संबंधित था। – *Indian Journal of Psychometry & Education, 30, 23-30*

विकलांग बालकों की निर्योग्यताएँ, जैसे – दृष्टिहीनता, मूक–बधिरता, अपंगता आदि की उपस्थिति में वे स्वयं को जीवन संघर्ष में दूसरों से हीन पाते हैं। हीनता की भावना उन्हें लक्ष्य प्राप्ति में असफल बना देती है। असफलता एवं हीनता मिलकर उन्हें कुण्ठित बनाती है तथा कुण्ठा कुसमायोजन का लक्षण होती है।

ब्राउन एवं फार्बर (1951) काउसन एवं मार्क्स (1958) तथा एमसेल (1962) ने भी कुण्ठा और समायोजन के मध्य नकारात्मक सहसंबंध की पुष्टि की है।

कुण्ठा जहाँ समायोजन को प्रभावित करती है, वहीं आक्रामकता को भी प्रोत्साहित करती है।

1.7 आक्रामकता

आक्रामकता, वास्तव में क्रोध की परिणति है। क्रोध एक अत्यधिक प्रचलित संवेग हैं। जब क्रोध क्षणिक होता है, तो तात्कालिक स्थिति के समाप्त होने पर तुरंत समाप्त हो जाता है, किन्तु क्रोध के दीर्घकालीन एवं प्रबल होने पर वह आक्रामकता का रूप धारण कर लेता है।

आक्रामकता का आशय उस उत्तेजित व्यवहार से लगाया जा सकता है, जिसमें व्यक्ति शारीरिक अथवा शाब्दिक असामान्यताओं को प्रदर्शित करता है। जैसे – चीखना, मारना, तोड़फोड़ करना, अपमानजनक शब्दों का प्रयोग करना आदि।

शॉ, गिलियन एवं गिओवैमिली (2000) के अनुसार – ''आक्रामकता किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के प्रति किया गया वह व्यवहार है, जो उसे नुकसान पहुँचाने या डराने के उद्देश्य से किया गया हो।''

- Aggressive Behaviour Disorders : Handbook of Infant Mental Health, vol. 2, P-397

आक्रामक व्यवहार मानवीय विकास की प्रारंभिक अवस्था में ही दिखाई देने लगता है। प्रायः देखा गया है कि आवश्यकताओं की पूर्ति न होने पर बालक स्व–नियंत्रण खोकर क्रोध की अभिव्यक्ति उग्र रूप में करते हैं। क्रोध आने पर वे जोर से चीखते हैं, अपने खिलौने आदि वस्तुओं को तोड़ देते हैं तथा अन्य को नोचने, काटने एवं मारने जैसे व्यवहारों का भी प्रदर्शन करते हैं। कई बार दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए भी बालक क्रोध का सहारा लेते हैं।

कई मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि बच्चों का आक्रामक व्यवहार एक सामान्य एवं सार्वभौमिक व्यवहार है।

लॉर्टन (1979) के अनुसार–''पूर्व विद्यालयी अवस्था में बालकों की प्रकृति अहम्–केन्द्रित होती है। जिसके कारण अपने संवेगों के प्रदर्शन हेतु वे कभी–कभी आक्रामकता का उपयोग कर लेते हैं।''

– *Introduction to Early Childhood Education : Lortan John W., 1979, P 41-46*

आक्रामकता संवेगों को बाहर निकालने अथवा संवेगों के प्रदर्शन का एक तरीका होता है। इसे अनेक कारक प्रभावित करते हैं, यथा–किशोरावस्था, परिवार अथवा विद्यालय का वातावरण, अभिभावकीय व्यवहार, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, अपूर्ण आवश्यकताएँ, शारीरिक विकलांगता, कुण्ठा, लिंगभेद, संप्रेषण तकनीकी आदि।

आक्रामकता का सर्वाधिक प्रदर्शन किशोरावस्था में दिखाई देता है। चूँकि किशोरावस्था, संवेगात्मक–अस्थिरता की अवस्था है, जहाँ किशोरों का अपने संवेगों पर नियंत्रण नहीं रहता, अतः इस अवस्था में वे अपने क्रोध के प्रदर्शन हेतु आक्रामकता को अपनाते हैं। इस अवस्था में चिंता व तनाव की अधिकता के साथ–साथ आक्रामकता की भावना भी किशोरों में अधिक पाई जाती है।

सायमण्ड्स (1980) ने अपने अध्ययन 'Inventory of Themes in Adolescent, Fantasy' में पाया कि, किशोरों में आक्रामकता की कल्पनाएं सामान्य कल्पनाओं से 4:1 अनुपात में थी।

परिवार का वातावरण एवं अभिभावकीय व्यवहार भी किशोरों के व्यवहार को बहुत अधिक प्रभावित करता है। किशोरों में आक्रामकता, अधिकांशतः अपने माता–पिता के विरूद्ध प्रदर्शित होती है।

यंग, मिलर, नार्टन एवं हिल (1995) ने अपने अध्ययन में पाया कि, माता पिता के अपर्याप्त समर्थन से किशोरों में लड़ाई की भावना व आक्रामकता अधिक पाई जाती है। — *Journal of Marriage & the Family,57,813-822*

चार्ल्स कार्लिस (2009) तथा **बन्डूरा एवं वॉलवेल्स** ने अपने अध्ययनों में पाया कि, उन किशोरों में आक्रामकता अधिक पाई जाती है, जिनके माता–पिता द्वारा उनके अमान्य व्यवहार के विरूद्ध शारीरिक दण्ड दिया जाता है, जैसे–मारना, पीटना आदि। — *Journal of Research & Extension in Education, July 2011,6(2), P-183*

रंजना भाटिया (2011) ने अपने लेख 'Aggression in Children : Reason & Remedies' में बालकों के आक्रामक व्यवहार में परिवार के वातावरण को बहुत महत्वपूर्ण बताया है। उनके अनुसार "जिन परिवारों का वातावरण तनावपूर्ण होता है, माता–पिता में बहुत अधिक बहस व लड़ाई–झगड़े होते हैं अथवा माता–पिता में संबंध विच्छेद हो जाता है, वहाँ पर बच्चे भी आक्रामक व्यवहार अपने माता पिता से ही सीख लेते हैं। — *Journal of India Education, vol xxxvi No.4, Feb 2011*

पारिवारिक वातावरण, सामाजिक–आर्थिक स्थिति से बहुत ज्यादा प्रभावित होता है तथा आर्थिक स्थिति भी आक्रामकता को जन्म दे सकती है।

डेविस और हैविंगहर्स्ट (1947) तथा मालवीय (1969) ने आक्रामक–कुण्ठा प्रतिक्रियाओं के अध्ययन में पाया कि, निम्न जाति अथवा निम्न आर्थिक स्तर वाले

लोगों में आक्रामकता अधिक पाई जाती है, जबकि उच्च जाति एवं उच्च आर्थिक स्तर वाले कम झगड़ालू और अधिक आत्मविश्वासी होते हैं।

— आधुनिक सामान्य मनोवविज्ञान : डॉ. प्रीति वर्मा, 2001, P-529

इसके विपरीत **डी0 एन0 श्रीवास्तव (1987)** के अनुसार – ''उच्च जाति एवं उच्च आय वाले छात्र–छात्राओं में कुण्ठा एवं आक्रामकता अधिक मात्रा में पाई जाती है। संभवतः उच्च जाति एवं उच्च आय वाले छात्रों में अन्य की अपेक्षा श्रेष्ठता की भावना अधिक पाई जाने के कारण ही उनमें आक्रामकता भी अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में पाई जाती है। *— मनावैज्ञानिक निर्धारण : डी एन. श्रीवास्तव, 1987*

इसी क्रम में व्यक्ति की अपूर्ण आवश्यकताएँ एवं अतृप्त इच्छाएँ भी आक्रामक व्यवहार उत्पन्न करती हैं।

मॉस्लो (1962) के अनुसार–''आक्रामकता, मानवीय प्रकृति का एक अनिवार्य हिस्सा नहीं है,बल्कि यह उन परिस्थितियों का प्रतिक्रियात्मक व्यवहार है, जिनमें व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो पाती *—Journal of India Education,Feb2011, P-45*

रंजना भाटिया (2011) ने भी आक्रामकता के कारणों में व्यक्ति की अपूर्ण इच्छाओं को महत्वपूर्ण कारण बताया। *–Aggression in Children:Reasons & Remedies, 2011*

जब व्यक्ति की इच्छाएँ एवं आवश्यकताएँ अपूर्ण रह जाती हैं, तो स्वाभाविक तौर पर उनमें कुण्ठा व तनाव उत्पन्न होते हैं। व्यक्ति के समक्ष आने वाली भौतिक बाधाएँ, उच्च–प्रतिस्पर्धाएँ, विफलताएँ आदि उसे कुण्ठित बना देते हैं, जिसकी प्रतिक्रिया कभी कभी आक्रामक व्यवहार के रूप में भी दिखाई देती है।

फ्रायड (1933) का विचार है कि, ''आक्रमण एक प्रकार से कुण्ठा की ही अभिव्यक्ति है।'' उनके अनुसार व्यवहार संबंधी विकारों में आक्रमण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कुण्ठा की उपस्थिति, जहाँ आक्रामकता का संकेत देती है, वहीं आक्रामकता की उपस्थिति, कुण्ठा का संकेत देती है। इसी तथ्य पर उन्होंने कुण्ठा–आक्रमण सिद्धांत का भी विकास किया। *— Advanced Clinical Psychology : Arun Kumar Singh,2011*

मिलर (1941) का विचार है कि, ''व्यक्ति में आक्रामक व्यवहार कितनी मात्रा में होगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि, कुण्ठा प्रत्युत्तर कितना शक्तिशाली है तथा कुण्ठा प्रत्युत्तरों में क्या ौर कितनी बआधाएँ हैं।''

बूस एवं पैरी (1992) का भी मानना है कि, ''अपमान, झुंझलाहट तथा अन्य अनिष्टकारी उद्दीपक भी कुण्ठा की उपस्थिति में व्यक्ति में आक्रामक व्यवहार उत्पन्न कर सकते हैं। ''   – *Journal of Personality & Social Psychology,78*

इस दिशा में हुए अध्ययनों में यह भी देखा गया है कि, जब कुछ विशेष परिस्थितियों में व्यक्ति अपनी आक्रामकता अभिव्यक्त कर लेता है, तब उसका तनाव कम या समाप्त हो जाता है। यह वास्तव में एक समायोजन तंत्र के रूप में कार्य करता है।

विकलांग बालक व आक्रामकता

उपरोक्त सभी कारणों का एक मिश्रित फलित एवं महत्त्वपूर्ण कारण बालक की मनोशारीरिक बाधा अथवा विकलांगता है। शारीरिक अथवा मानसिक दोष व्यक्ति के व्यवहार को आक्रामक बना देते हैं। बालकों की शारीरिक निर्योग्यताएँ, यथा– दृष्टिहीनता, मूक बधिरता, अपंगता, हकलाना, तुतलाना, कोई गंभीर असाध्य रोग अथवा इसी प्रकार की अन्य जन्मजात या जन्म के उपरांत उत्पन्न अयोग्यताएँ, उन्हें हीन भावना से ग्रसित बना देती हैं। शारीरिक दोष के परिणामस्वरूप, उनकी कई आवश्यकताएँ अपूर्ण रह जाती हैं। उन्हें अपमानजनक व्यवहार, उपेक्षा व विफलताओं का भी सामना करना पड़ता है, जो कुण्ठा को उत्पन्न करते हैं। तथा इसकी परिणति क्रोध, चिड़चिड़ापन व अंत में आक्रामक व्यवहार के रूप में सामने आती है।

कार्लो डी. (1989) ने मूक–बधिर बालकों पर अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि, मूक–बधिर बालक सामान्य बालकों की तुलना में अधिक आक्रामक होते हैं।

एम. रामाराव (2005) ने भी समस्याग्रस्त बालकों का अध्ययन किया और पाया कि समस्याग्रस्त बालक अनुशासनहीन, अविश्वासी, क्रोधी तथा उद्दण्ड होते हैं।

शारीरिक दोषों के साथ लिंग भेद भी आक्रामकता को प्रभावित करता है।

ऑल्विन्स (1979) ने अपने अध्ययन 'Stability of Aggressive Patterns in Males : A Review' में पाया कि पुरूष, स्त्रियों की अपेक्षा अधिक आक्रामक होते हैं तथा उनका आक्रामक व्यवहार स्त्रियों की तुलना में अधिक लंबे समय तक स्थिर बना रहता है।

— *Psychology Bulletin (86), P 852-875*

क्रिस्टी. एम. एवं कैरिन (1994) ने भी अपने अध्ययन 'Sex Differenas in Covert Aggression' के परिणामों से ज्ञात किया कि पुरूष, स्त्रियों की तुलना में शीघ्र आक्रामक हो जाते हैं तथा उनका आक्रामक व्यवहार शारीरिक रूप में अधिक प्रदर्शित होता है। — *Aggressive Behaviour 20(2), P 27-33*

कोय एवं डॉज (1997) ने भी अपने अध्ययन 'Aggression & Anti Social Behaviour' में पुरूषों की तुलना में स्त्रियों को कम आक्रामक पाया।

— *Handbook of Child Psychology, vol.3*

इन सभी कारणों के अतिरिक्त विगत कुछ वर्षों में आक्रमकता को बढ़ावा देने में संप्रेषण तकनीकी या जनसंचार के साधनों का नाम बड़े पैमाने पर सामने आया है।

यूनेस्को (1996–97) ने 23 देशों के 12 वर्ष के 5000 बालक–बालिकाओं पर अध्ययन कर यह पाया कि, जो बच्चे बहुत अधिक मात्रा में हिंसक टी.वी. प्रोग्राम देखते हैं, वे अपनी समस्याओं को हल करने में हिंसक एवं आक्रामक तरीकों को ही अपनाते हैं। — *Journal of India Edu., Vol xxxvi (4), Feb 2011*

इसी क्रम में Centre for Advocacy & Research (CFAR) ने भी 2001 में अपने अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष निकाला कि, हिंसक जनसंचार साधनों के प्रभाव से आक्रामक व्यवहार में महत्त्वपूर्ण वृद्धि होती है।

कैरॅन, क्रैग एवं एण्डरसन (2000) के शोध अध्ययन 'Video Games & Aggressive Thoughts, Feelings & Behaviour in Life.' में पाए गए परिणाम भी समानता लिए हुए हैं कि, हिंसक वीडियोग्राफ, हिंसक फिल्में, हिंसक टी.वी. कार्यक्रम और इन्टरनेट आक्रामक व्यवहार में वृद्धि करने वाले और सार्थक प्रभाव डालने वाले होते हैं।

— *Journals of Personality & Social-Psycho, vol. 78(4)*

1.8 आत्म अवधारणा (आत्म प्रत्यय)

जिज्ञासा मानव की मूल प्रवृत्ति है। इसी प्रवृत्ति के फलवरूप व्यक्ति स्वयं को तथा अन्य व्यक्तियों को जानने की चेष्टा करता रहता है। इस प्रक्रिया में जहाँ वह अन्य व्यक्तियों के व्यवहारों के आधार पर उनके व्यक्तित्व का अनुमान लगाता है, वही अपने व्यवहारों व विशेषताओं का विश्लेषण करने के लिए आत्मचिंतन भी करता है। आत्मचिंतन के परिणामस्वरूप ही वह स्वयं के संबंध में कुछ धारणाएँ या प्रत्यय विकसित कर लेता है।

वास्तव में स्वयं के संबंध में धारणाएँ या प्रतिमाएँ विकसित करना ही आत्म प्रत्यय या आत्म अवधारणा कहलाती है। यानि व्यक्ति स्वयं के गुणों और व्यवहार के संबंध में जो मत रखता है, अर्थात् जिस प्रकार वह स्वयं का प्रत्यक्षीकरण करता है, वहीं उसकी आत्म अवधारणा है।

आइज़नेक और उनके साथियों (1972) ने आत्म प्रत्यय को परिभाषित करते हुए लिखा है कि – ''व्यक्ति के व्यवहार योग्यताओं और गुणों के संबंध में उसकी अभिवृत्ति, निर्णयों और मूल्यों के योग को ही आत्म प्रत्यय कहते हैं।''

– *व्यक्तित्व मनोविज्ञान : सीताराम जायसवाल, 1974*

कोम्ब एवं स्निग के अनुसार – ''आत्म अवधारणा व्यक्ति का अपना प्रत्यक्षीकरण या स्वयं के बारे में धारणा है।''

– *शिक्षा मनोविज्ञान एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण : प्रवीन शर्मा, 2010, P-63*

वुलफोल्क (2001) ने आत्म अवधारणा को इस प्रकार परिभाषित किया है कि, ''आत्म प्रत्यय से तात्पर्य व्यक्ति के आत्म–मूल्यन से है, जो वह स्वयं की विशेषताओं, गुणों, योग्यताओं एवं क्रियाओं के आधार पर निर्धारित करता है।''

– *Journal of Psychometry, July-Dec.,2010, vol.24(2), P-57*

लाबिन ग्रैन (2005) के अनुसार – ''आत्म अवधारणा व्यक्ति के द्वारा उसके शारीरिक सौंदर्य, पहचान, पृष्ठभूमि, योग्यताओं, संसाधनों, विशेषकों एवं भावनाओं का समग्र आकलन है, जो उसके व्यवहारों को निर्देशित करती है।''

– *Study of Self Concept Among Children, 2005*

'आत्म अवधारणा' का उद्भव व्यक्तित्व के आरंभिक सिद्धांतों में हुआ। सर्वप्रथम **'रेन डेसकार्टेस'** ने **Cognito (संज्ञान)** अर्थात् व्यक्ति की स्वयं के अस्तित्व की जागरूकता के सन्दर्भ में चर्चा की थी।

तत्पश्चात् **विलियम जेम्स (1890)** ने सर्वप्रथम अपनी पुस्तक Principles of Psychology में इस धारणा का विवरण प्रस्तुत किया। उनके अनुसार ''आत्म'' उन सब का योग है, जिसे मनुष्य अपना कहकर पुकारता है, यथा – उसका शरीर, उसके गुण एवं योग्यताएँ, उसकी भौतिक संपत्ति, उसका परिवार, मित्र एवं शत्रु तथा उसके उसके व्यवसाय एवं अन्य काम–धंधे।''

आत्म अवधारणा के निर्माण में व्यक्ति दो प्रकार की प्रतिमाओं का विकास करता है। इसी आधार पर **कैटल (1957) ने** आत्म अवधारणा के दो प्रकार बताए हैं :

(1) शारीरिक आत्म अवधारणा – जब व्यक्ति स्वयं को दर्पण में देखकर, अपने बाहरी रंग–रूप के आधार पर स्वयं के संबंध में कोई धारणा विकसित करता है तो वह शारीरिक अवधारणा कहलाती है। इसके अंतर्गत व्यक्ति का दर्पण–प्रतिबिम्ब, उसके रूपरंग, सौंदर्य, आकर्षण, लंबाई–चौड़ाई आदि को परिलक्षित करता है जिसको देखकर व्यक्ति स्वयं के संबंध में अच्छी या बुरी धारणा विकसित कर लेता है।

(2) मनोवैज्ञानिक आत्म अवधारणा – ये अवधारणा व्यक्ति स्वयं का विश्लेषण करके अथवा अन्य व्यक्तियों के संपर्क में आने पर अपने द्वारा किए गए व्यवहार के आधार पर विकसित करता है। इसमें व्यक्ति के विचार, भावनाएँ एवं संवेग सम्मिलित होते हैं, जैसे – साहस, डर, ईमानदारी, आत्मविश्वास, क्रोध आदि मनोवैज्ञानिक प्रत्यय हैं।

आत्म प्रत्यय के निर्माण में व्यक्ति की आकांक्षाएँ एवं उपलब्धियाँ सम्मिलित रहती हैं।

मरगोरी (1979) ने अपने अध्ययन में देखा कि, जब व्यक्ति की उपलब्धि और उसके लक्ष्य या आकांक्षा में अंतर अधिक होता है, तब उसका आत्म प्रत्यय ऋणात्मक रूप से प्रभावित होता है। *– नवीन शिक्षा मनोविज्ञान : के.पी.पाण्डेय, 2007*

मनोवैज्ञानिक अध्ययनों तथा शोधकार्यों से पता चलता है कि, बालक में आत्म अवधारणा का उद्भव शैशवावस्था से ही प्रारंभ हो जाता है। जीवन के प्रथम वर्ष के अंत तक वह अपने आपको एक अलग प्राणी के रूप में समझने लगता है।

हरलॉक (1978) के अनुसार – ''चूँकि शिशु स्वाभाविक रूप से अहम् केन्द्रित अथवा स्व–केन्द्रित होता है, अतः वह अन्य के संबंध में कोई धारणा बनाने से पूर्व, स्वयं के संबंध में धारणा विकसित कर लेता है।'' - *Child Development : Hurlock,1978*

बालक प्रारंभिक अवस्था में जो धारणा बनाते हैं, उन्हें प्राथमिक आत्म प्रत्यय कहा जाता है। यह आत्म प्रत्यय, वे अपने माता–पिता, परिवार के लोग तथा अन्य परिचितों की, अपने संबंध में बनाई गई धारणा के आधार पर बनाते हैं। उदाहरण के रूप में – यदि परिवार के लोग बच्चे को शैतान समझते हैं, तो वह स्वयं भी अपने संबंध में यही धारणा विकसित कर लेता है।

हरलॉक (1978) ने भी यही कहा है कि, “The child concept of himself as a person to a mirror image of what he believe significant people in his life, think of him.” - *Child Development : Elizabeth B. Hurlock, 1978*

बाल्यावस्था में निर्मित प्राथमिक आत्म प्रत्यय में स्थायित्व नहीं पाया जाता।

जरशील्ड (1971) के अनुसार, ''आत्म प्रत्यय व्यक्ति के विचारों और अनुभवों से बनता है। चूँकि विचार और अनुभव परिवर्तित होते रहते हैं, अतः आत्म प्रत्यय भी परिवर्तित होता रहता है।'' – *In Search of Self, 1971, New York*

लाइवली (1962), वार्चेल (1957) एवं कूपरस्मिथ (1959) ने भी अपने अध्ययनों के आधार पर यह स्पष्ट किया है कि, जीवन के प्रारंभिक वर्षों में आत्म प्रत्यय अस्थिर रहता है। आयु बढ़ने के साथ–साथ उसमें स्थिरता आती है तथा जिन लोगों का आत्म प्रत्यय अस्थिर होता है, उनका समायोजन अच्छा नहीं होता।

इस प्रकार बाल्यावस्था की अस्थिर अवधारणा, किशोरावस्था में स्थायित्व प्राप्त करने लगती है। ये स्थिरता इसीलिए आती है, क्योंकि किशोर आत्म अवधारणा का निर्माण अपनी योग्यताओं एवं अयोग्यताओं दोनों को ही ध्यान में रखकर करते हैं। अर्थात् स्थायी आत्म प्रत्यय, सकारात्मक प्रत्ययों की देन है, तो उसमें आत्मविश्वास एवं स्वाभिमान उच्च स्तरीय होता है। साथ ही उसकी सामाजिक स्वीकार्यता, सामाजिक समायोजन एवं सामाजिक समूहों में सक्रियता भी बेहतर होती है।

किशोरों का मुख्य संघर्ष उनकी भूमिका व स्वपहचान के बीच होता है। आत्म अवधारणा के अंतर्गत वे स्वयं की पहचान शारीरिक गुणों एवं मनोवैज्ञानिक अभिवृत्तियों के द्वारा करते हैं। जो किशोर आत्म अवधारणा विकसित नहीं कर पाते हैं, वे जीवन में अपनी भूमिका के प्रति भ्रमित रहते हैं।

रेयॉन एवं सिल्वरमैन का भी मानना है कि ''किशोरों का आत्मविश्वास एवं प्रशंसा (आत्म–पहचान) इस बात पर निर्भर करती है कि उसके समवयस्क उसके प्रति कैसी धारणा रखते हैं।''

मैरिस (1958) कूपरस्मिथ (1967) एवं सीयर्स (1970) ने अपने अध्ययनों में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि, व्यक्तियों में आत्म स्वीकृति जितनी अधिक होती है उनका समायोजन उतना ही अधिक होता है।

इसी प्रकार **मूसेन और पोर्टर (1959), जिम्बार्डो और डारमिका (1963), रिग एवं सहयोगी (1965), हरटप और कोट्स (1967) तथा मैकडोनाल्ड (1969)** ने भी अपने अध्ययनों में पाया कि, व्यक्ति के आत्म प्रत्यय की शुद्धता उसके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के समायोजन को सार्थक ढंग से प्रभावित करती है।

कैटल (1967), कार्टराइट (1963) तथा हरलॉक (1974) ने अपने अध्ययनों में निष्कर्षतः देखा कि, आत्म प्रत्यय जितना अधिक अस्थिर होता है, विभिन्न क्षेत्रों का समायोजन उतना ही दुर्बल होता है।

आत्म अवधारणा एवं समायोजन के मध्य निकटतम संबंधों को ज्ञात करने के पश्चात् यह भी देखा गया कि, अभिभावक–बालक संबंध आत्म प्रत्यय के महत्वपूर्ण निर्धारण होते हैं। बालक के आत्म प्रत्यय पर माता–पिता के आत्म प्रत्यय, दृष्टिकोणों एवं अभिवृत्तियों का भी उल्लेखनीय प्रभाव पड़ता है। बालक स्वयं को उसी रूप में प्रत्यक्षीकृत करता है, जिस रूप में उसके माता–पिता अपने आपको देखते हैं।

डॉ. सिंह (2005) के अनुसार, ''शोध अध्ययन बताते हैं कि प्रतियोगी भावना रखने वाले माता पिता की संतानों में विजय प्राप्त करने की भावना अधिक तीव्र होती है।

— *Psychology of Learning, 2005, P-339*

कूपरस्मिथ (1967) ने अपने अध्ययन में पाया कि, जिन परिवारों के अभिभावकों की आत्म अवधारणा उच्च थी तथा वे अपने बालकों को एक उत्तरदायी व्यक्तित्व के रूप में मानते थे, उनके विद्यालय जाने वाले बालकों की आत्म अवधारणा भी उच्च थी।

— *The Anticedents of Self Esteem, San Francisco,1967*

अभिभावक–बालक संबंधों के साथ–साथ पारिवारिक वातावरण भी आत्म प्रत्यय की नींव तैयार करते हैं।

विश्वास एवं सरकार (2004) ने अपने अध्ययन 'A Correlational Study Between Anxiety & Self Concept' में देखा कि, जिन परिवारों का वातावरण तनावपूर्ण था, वहाँ पर बालकों के आत्म प्रत्यय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा तथा उनके चिंता स्तर एवं आत्म प्रत्यय के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया।

— *Indian educational abstracts (NCERT), Jan.2006*

सुंदराजन, सबेसान एवं इथिराज (1994) ने अपने अध्ययन में माता–पिता के आर्थिक स्तर को बालक की आत्म अवधारणा से सार्थक रूप में सहसंबंधित पाया। उच्च आय–वर्गीय बालकों की अवधारणा निम्न आय वर्गीय बालकों से उच्च पाई गई।

— *Sixth Survey of Educational Research, P-308*

आत्म अवधारणा का प्रत्यक्ष संबंध व्यक्तित्व गुणों से भी होता है।

कैटल (1957) के अनुसार, “Self-concept is keystone of personality”

अतः व्यक्ति के व्यवहार, गुणों, योग्यताओं, अभिवृत्ति, निर्णयों और मूल्यों का आत्म प्रत्यय पर निश्चित ही प्रभाव पड़ता है।

रॉबिन्स, ट्रेसी एवं पॉटर (2001) ने अपने अध्ययन ‘Personality Correlates of Self-Esteem’ में देखा कि, निम्न आत्म प्रत्यय वाले बालकों की तुलना में उच्च आत्म प्रत्यय वाले बालक, स्वयं को अधिक बेहतर, श्रेष्ठ एवं योग्य समझते थे तथा संवेगात्मक रूप से भी वे अधिक स्थिर, बहिर्मुखी व्यक्तित्व, समन्वयक एवं अनुकूल पाए गए।

कुण्ठा एवं आक्रामकता भी आत्म अवधारणा को प्रभावित करते हैं।

दीक्षित (1987) ने अपने अध्ययन ‘Reactions to Frustration Scale’ के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि, किशोरों के आत्म प्रत्यय को कुण्ठा एवं कुण्ठा के विभिन्न प्रत्यय महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करते हैं।

बेरी (1974), टोनीबेथ (1980), थॉमस (1982) ने यह सिद्ध किया कि, व्यक्ति जितना कम आक्रामक होता है, उसका आत्म प्रत्यय उतना ही अधिक उच्च होता है।

आत्म अवधारणा के विभिन्न निर्धारकों के अंतर्गत एक अत्यंत महत्वपूर्ण निर्धारक व्यक्ति का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य भी होता है। किसी भी क्षेत्र में दक्षता एवं अच्छे निष्पादन के लिए उत्तम स्वास्थ्य का होना आवश्यक है। क्योंकि

उत्तम स्वास्थ्य व्यक्तित्व पर सकारात्मक प्रभाव डालता है, जिससे आत्म संप्रत्यय भी सकारात्मक बनता है।

किन्तु यदि व्यक्ति किसी शारीरिक–मानसिक दोष से ग्रसित होगा, तो निश्चित ही उसमें हीनता, कुण्ठा एवं असुरक्षा की भावना पाई जाएगी, जिससे उसका आत्म प्रत्यय भी निम्न हो जाएगा।

शारीरिक विकलांगता व्यक्ति के सामान्य कार्यों को भी सीमित कर देती है। जिसके कारण उनमें आत्म विश्वास का भी अभाव पाया जाता है। और चूँकि आत्म विश्वास, आत्म अवधारणा का ही एक कारक है, अतः उनमें आत्म प्रत्यय की निम्नता निश्चित तौर पर दिखाई देती है।

साहू (1991) ने मूक बधिर, नेत्रहीन एवं सामान्य बालकों की व्यवहारिक विशेषताओं के मध्य तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि, सामान्य बालकों का व्यवहार एवं आत्म प्रत्यय, नेत्रहीन व मूक–बधिर बालकों की तुलना में उच्च था।

– *Indian Psychological Abstracts and Review, 1994-95, Jan. 2008*

विश्वैश्वरैया (2004) ने अपने अध्ययन में देखा कि, विकलांग बालकों में चिंता, डर, अपनी बात से हट जाने की प्रवृत्ति, अधिक पाई गई तथा आत्मविश्वास एवं आत्म प्रत्यय कम पाया गया। – *Indian Educational Abstracts, Jan. 2008*

और अंत में आत्म प्रत्यय को प्रभावित करने वाले कारकों में लिंग भेद को भी स्थान दिया गया है। देखा गया है कि पुरूषोचित् एवं स्त्रियोचित् मूलभूत विशेषताएँ भी आत्म प्रत्यय के विकास को प्रभावित करती हैं।

मूंग (1973), मैकोबी एवं जैकलिन (1974), मार्श (1985) तथा विलियम्स (1984) ने अपने अध्ययनों में पाया कि, स्त्रियों में पुरूषों की अपेक्षा आत्म प्रत्यय उच्च होता है साथ ही वे अन्य व्यक्तियों के साथ मधुर संबंधों के निर्माण एव निर्वहन में भी पुरूषों की तुलना में अधिक पाई गई।

– *Bombay Psychologists,2011,vol xxvi(1-2), P-129*

स्टेक (1992) ने अपने अध्ययन 'Development & Validation of the Sir Factor Self Concept for Adults, Chicago Univ.' में स्त्रियों एवं पुरूषों की दृढ़ विशेषताओं एवं सामाजीकरण प्रक्रियाओं के कारण आत्म अवधारणा में लिंग विभेदता में समरूपता पाई। *—Bombay Psychologists, 2011, P-129*

करूणानिधि एवं नंदिनी (1999) ने भी आत्म अवधारणा के विकास में लिंगभेद का प्रभाव ज्ञात किया। उनके अध्ययन में किशोरियों में किशोरों की अपेक्षा कम समस्याएँ एवं उच्च आत्म अवधारणा पाई गई। *— Sixth Survey of Educational Research*

1.9 समस्या का औचित्य

यद्यपि जीवन की प्रत्येक अवस्था में समस्याएँ उत्पन्न होती रहती हैं, तथापि किशोरावस्था एक ऐसी अवस्था है, जिसमें किशोरों में शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक परिवर्तन होने के कारण यह माता—पिता एवं स्वयं किशोरों के लिए सर्वाधिक समस्याप्रधान हो जाती है। किशोरावस्था को ठीक प्रकार से न समझ पाने के कारण माता—पिता का असंयमित व्यवहार किशोरों में अनेक समस्याओं को जन्म दे रहा है। वर्तमान में किशोरों मे उत्पन्न तीव्र असंतोष, अनुशासनहीनता, आक्रामकता, कुसमायोजन आदि के पीछे एक महत्वपूर्ण कारण, माता—पिता और किशोरों के मध्य तनावपूर्ण संबंध भी हो सकते हैं।

वीज एवं शैवेज़ (1996) ने 'अभिभावकीय प्रकारों एवं किशोरों के व्यक्तित्व तथा समायोजन के मध्य संबंधों के अध्ययन' में देखा कि, जिन परिवारों में किशोरों को अधिकार एवं स्वतंत्र वातावरण उपलब्ध कराया गया वे अधिकार रहित वातावरण में रहने वाले किशोरों की तुलना में अधिक योग्य एवं सक्षम पाए गए तथा उनका समायोजन स्तर भी उच्च था।इसके विपरीत **बोरोसन (2001)** ने अपने अध्ययन में देखा कि, किशोरों की अति स्वतंत्रता से किशोर अनियंत्रित हो जाते हैं तथा इससे अभिभावक—किशोर संबंधों में भी बिगाड़ आ जाता है।

ये समस्या तब और भी विकराल रूप धारण कर सकती है, जब किशोर किसी शारीरिक–मानसिक दोष से पीड़ित हो। मूक–बधिरता भी एक शारीरिक दोष है, जो बालकों में अनेक मानसिक–संवेगात्मक ग्रंथियों को उत्पन्न कर उनके व्यक्तित्व को असंतुलित बना देता है।

शुभ्रा चतुर्वेदी (2002) ने भी अपने अध्ययन में पाया कि, विकलांग बालकों को यदि घर पर अधिक देखभाल मिलती है, तो वे सामान्य बालकों की तुलना में अधिक पराश्रित होते हैं, जिसके फलस्वरूप हीन–भावना तथा भय से ग्रसित हो जाते हैं तथा उनमें सामान्य बालकों की अपेक्षा स्नायुदौर्बल्य की प्रवृत्तियाँ भी अधिक पाई जाती हैं।

इसके विपरीत **नलिनी राय (2005)** ने अपने अध्ययन में पाया कि, जिन विकलांग बालकों को परिवार में अस्वीकरण मिलता है उनमें हीन भावना अधिक व समायोजन का अभाव पाया जाता है।

विभिन्न शोध अध्ययनों के परिणामों की भिन्नता की वास्तविकता जानने के उद्देश्य से शोधकत्री द्वारा प्रस्तुत समस्या का चयन किया गया।

साथ ही संबंधित साहित्य के अध्ययन द्वारा यह तथ्य भी सामने आया कि, सामान्य किशोरों पर तो अनेक शोध किए गए हैं, किन्तु विकलांग किशोरों, विशेषकर मूक–बधिर किशोरों से संबंधित शोध अध्ययनों की संख्या नगण्य ही है। अतः इस अछूते क्षेत्र में शोध कार्य अपेक्षित है, ताकि मूक–बधिर किशोरों को अन्य सामान्य किशोरों के समान ही सहभागित्व प्राप्त हो सके तथा उनमें उत्पन्न असंतोष, कुण्ठा, आक्रामकता, अनुशासनहीनता एव कुसमायोजन जैसी समस्याओं का निवारण हो सके। साथ ही मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों में उनकी शिक्षा व भविष्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जा सके।

इसी उद्देश्य से शोधकत्री ने मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकीय संबंधों का उनके समायोजन, आक्रामकता एवं आत्म अवधारणा पर प्रभाव के अध्ययन की योजना बनाई।

1.10 समस्या कथन

किसी भी शोध कार्य के लिए समस्या कथन महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि यह मात्र शोध प्रबंध का शीर्षक ही नहीं होता, बल्कि यह सुस्पष्ट लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास भी करता है। समस्या का अभिकथन मोटे तौर पर यह बताता है कि संपूर्ण शोध में क्या किया गया है।

समस्या कथन के कई रूप हो सकते हैं। इसे एक कथन के रूप में लिखा जा सकता है या एक प्रश्न के रूप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है।

करलिंगर ने एक समस्या के कथन की निम्न कसौटियाँ बताई हैं :

1. समस्या का कथन पूर्णतयाः स्पष्ट एवं सुनिश्चित होना चाहिए।
2. समस्या से संबंधित स्वतंत्र चर एवं आश्रित चर पूर्णतः स्पष्ट होने चाहिए।
3. समस्या का कथन ऐसा होना चाहिए, जिससे संबधित चरों का अध्ययन अनुपातिक आधार पर किया जा सके।

इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, प्रस्तुत शोध में शोधकत्री ने समस्या का कथन इस प्रकार किया है :

''मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकीय संबंधों का उनके समायोजन, आक्रामकता एवं आत्म अवधारणा पर प्रभाव का एक अध्ययन''

1.11 शोध अध्ययन के उद्देश्य

उद्देश्य एक ऐसा निर्धारक है, जो किसी भी प्रकार की क्रिया को सुनिश्चितता प्रदान करता है। कोई भी कार्य, पूर्व निर्धारित उद्देश्यों के बिना सफलतापूर्वक संपादित नहीं किया जा सकता। उद्देश्यों का कार्य है– मार्ग प्रेषित करना, आदर्श निश्चित करना तथा समस्या के समाधान प्रस्तुत करना। उद्देश्यों के निर्धारण के साथ ही व्यक्ति विश्वासपूर्वक उस दिशा में प्रेरित होकर, निरंतर प्रयास

करने में लग जाता है और उस निश्चित अंतिम बिन्दु तक पहुँचकर अपनी सफलता या विफलता का मूल्यांकन करता है।

सी.वी. गुड के अनुसार ''उद्देश्य एक पूर्व निर्धारित साध्य है, जो किसी क्रिया योजना एवं कार्य का मार्गदर्शन करता है।''

अतः शोध जैसे महत्वपूर्ण कार्य में सफलता हेतु भी उद्देश्यों को निर्धारित करना अत्यंत आवश्यक है। निरूद्देश्य शोध की कल्पना मात्र भी असंभव है। उद्देश्यों की स्पष्टता, जहाँ अनुसंधान को सरल एवं सहज बना देती है वहीं उद्देश्यों के आधार पर शोधकार्य को योजनाबद्ध कर, उसके मूल्यांकन को भी संभव बनाती है।

इस प्रकार प्रत्येक शोधकर्ता अपने कार्य की प्रगति एवं सफलता हेतु शोध उद्देश्यों के अनुसार योजनाबद्ध कार्य करता है। अतः शोध के उद्देश्य निर्धारित करना अत्यंत आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :

1. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके पिता, माता एवं अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों का अध्ययन करना।
2. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन करना।
3. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के आक्रामकता स्तर का अध्ययन करना।
4. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की आत्म अवधारणा का अध्ययन करना।
5. मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

6. मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

7. मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

8. मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

9. मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

10. मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

11. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

12. मूक–बधिर किशोरों के पिता, माता एवं अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

13. मूक–बधिर किशोरियों के पिता, माता एवं अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

14. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

15. मूक–बधिर किशोरों के पिता, माता एवं अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

16. मूक–बधिर किशोरियों के पिता, माता एवं अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

17. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

1.12 शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

परिकल्पना किसी समस्या का वह अनुमानित उत्तर है, जिसकी वैद्यता का सत्यापन किया जाना शेष होता है। ये उत्तर वे अंतरिम, प्रारंभिक अथवा प्रायोगिक कथन होते हैं, जो सामान्यतया किसी विचार, अनुमान, निष्कर्ष या सिद्धांत पर आधारित होते हैं। परिकल्पनाएँ सत्याभासी, तर्कयुक्त एवं परीक्षण योग्य होती हैं। शोध की शेष प्रक्रिया इन परिकल्पनाओं पर ही निर्भर होती है। उपयुक्त परीक्षणों व अन्य अभिकरणों का चयन, दत्त संग्रह, विश्लेषण, निर्वचन आदि इन परिकल्पनाओं को केन्द्रित करके ही अग्रसर होते हैं। शोध के परिणामों के आधार पर परिकल्पनाओं को स्वीकृत अथवा अस्वीकृत करके ही शोध के निष्कर्ष के रूप में सिद्धांत व नियम बनते हैं।

करलिंगर के अनुसार ''एक परिकल्पना दो या अधिक चरों के संबंध में एक कल्पनात्मक कथन होता है।'' – *अनुसंधान विधियाँ : कपिल, 1998–99*

गुड तथा हैट के अनुसार ''परिकल्पना इस बात का वर्णन करती है कि हम क्या देखना चाहते हैं। वह भविष्य की ओर देखती है। यह एक ऐसा तर्कपूर्ण वाक्य है, जिसकी वैद्यता की परीक्षा की जानी है। यह सही भी सिद्ध हो सकती है और गलत भी।'' – *Practical Statistics : S.P.Gupta, 2005*

किसी भी शोध कार्य के लिए परिकल्पनाओं का निर्माण करना अत्यंत आवश्यक एवं चुनौतीपूर्ण कार्य है। एक ओर, जहाँ परिकल्पनाएँ अनुसंधान कार्य का उद्देश्य स्पष्ट करके उसे सुनिश्चित दिशा प्रदान करती हैं, वहीं दूसरी ओर, निष्कर्षों तक पहुंचने में सहायक सिद्ध होने के साथ–साथ नियमों व सिद्धांत–निर्माण का आधार भी बनती हैं।

परिकल्पनाओं की रचना इस प्रकार करनी चाहिए कि, उसमें निम्नलिखित गुण समाविष्ट हो सकें :

परिकल्पना स्पष्ट, अर्थपूर्ण, तार्किक, सत्याभासी तथा परीक्षण एवं प्रमाणित करने योग्य होनी चाहिए। यह प्रकृति के ज्ञान नियमों के अनुकूल तथा शोध को सामान्यीकरण से विशिष्ट एवं विस्तार से सीमित करने वाली होनी चाहिए। साथ ही परिकल्पना को शोध की अन्य उपकल्पनाओं से सामान्य तारतम्य भी होना चाहिए।

उपर्युक्त विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकत्री द्वारा अपनी कल्पना, अध्ययन तथा परिस्थितियों पर आलोचनात्मक दृष्टि से विचार करते हुए निम्न शून्य परिकल्पनाएँ निर्मित की गईं :

1. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके पिता, माता एवं अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
3. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के आक्रामकता स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
4. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की आत्म अवधारणा में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

5. मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

6. मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

7. मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

8. मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

9. मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

10. मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

11. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

12. मूक–बधिर किशोरों के पिता, माता एवं अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

13. मूक–बधिर किशोरियों के पिता, माता एवं अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

14. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

15. मूक–बधिर किशोरों के पिता, माता एवं अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

16. मूक–बधिर किशोरियों के पिता, माता एवं अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

17. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

1.13 शोध अध्ययन का परिसीमन

परिसीमन से तात्पर्य है – सीमाएँ अथवा परिधि निश्चित करना। किसी शोध अध्ययन का परिसीमन उस अध्ययन के वैद्य उद्देश्यों पर अपना ध्यान केन्द्रित करने में सहायता प्रदान करता है।

प्रत्येक समस्या का एक निश्चित क्षेत्र होता है। अतः समस्या चयन के पश्चात् उस क्षेत्र का स्पष्टीकरण आवश्यक होता है। इससे शोध अध्ययन में सुविधा तो होती ही है, साथ ही अध्ययन को गहनता भी प्राप्त होती है। परिसीमन के अभाव में शोधकार्य विस्तृत एवं असीमित हो जाता है। अतः अनुसंधान कार्य को

विश्वसनीय एवं वैद्य बनाने तथा परिणामों तक पहुँचाने के लिए शोध परिसीमन आवश्यक हो जाता है।

परिसीमन के द्वारा शोधार्थी अपनी समस्या के क्षेत्र को, विभिन्न लक्षणों में अंतर के आधार पर, अन्य संबंधित किन्तु अनावश्यक परिस्थितियों से सजगतापूर्वक पृथक् कर लेता है। परिसीमन द्वारा आवश्यकता से अधिक सामान्यीकरण हो जाने के संशय भी कम हो जाते हैं।

कोई शोधकर्ता कितना ही उत्साही क्यों न हो, शोध कार्य में परिसीमाओं का बंधन अनिवार्य है।

शोध सीमाएँ, विषय–पक्ष, जनसंख्या, शोध के चर, भौगोलिक विस्तार, मापन–उपकरण आदि किसी भी एक बिन्दु अथवा अनेक बिन्दुओं से संबंधित हो सकती हैं।

उपर्युक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध अध्ययन को शोधकत्री द्वारा निम्न रूप में परिसीमित किया गया है :

1. **भौगोलिक विस्तार** – शोध कार्य राजस्थान राज्य के कोटा, जयपुर एवं उदयपुर शहरों तक सीमित रखा गया है।
2. **जनसंख्या** – शोध कार्य मूक–बधिर विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के किशोरों एव किशोरियों तक सीमित रखा गया है।
3. **न्यादर्श** – शोध कार्य हेतु न्यादर्श 300 मूक–बधिर विद्यार्थियो तक सीमित रखा गया है, जिसमें 150 किशोर एवं 150 किशोरियाँ हैं।
4. **चर** – शोध कार्य को स्वतंत्र चर के अंतर्गत किशोर–अभिभावक संबंध एवं परतंत्र चर के अंतर्गत समायोजन, आक्रामकता एवं आत्म अवधारणा तक सीमित रखा गया है।
5. **मापन उपकरण** – शोध कार्य को तीन मानकीकृत एवं एक स्वनिर्मित उपकरण के प्रयोग द्वारा परिसीममित किया गया है।

1.14 शोध अध्ययन में प्रयुक्त मुख्य तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

शोध में प्रयुक्त उन सभी मुख्य तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण अत्यंत आवश्यक होता है, जिनकी त्रुटिपूर्ण व्याख्या किए जाने की संभावनाएँ विद्यमान हैं। इससे शोध समस्या के सन्दर्भ में सही ढ़ाँचे की स्थापना करने में सहायता मिलती है। साथ ही भाषा स्पष्ट एवं सुग्राह्य भी हो जाती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन मे प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण निम्न रूप में किया जा रहा है :

1. **किशोरावस्था** – यह अवस्था, बाल्यावस्था तथा युवावस्था के मध्य का वह संधिकाल है, जो बालकों में लगभग 13 से 19 वर्ष तक तथा बालिकाओं में लगभग 12 से 18 वर्ष तक माना जाता है। किशोरावस्था, प्रत्येक व्यक्ति के जीवन मे वह काल है, जो बाल्यावस्था के अंत में आरंभ होता है तथा युवावस्था के आरंभ में समाप्त हो जाता है। इस अवस्था के आरंभ होने की आयु, व्यक्ति के लिंग, प्रजाति, जलवायु, संस्कृति, पौष्टिक भोजन तथा उसके स्वास्थ्य आदि पर निर्भर करती है। ठण्डे प्रदेशों की अपेक्षा गर्म प्रदेशों में किशोरावस्था एक वर्ष पहले आरंभ हो सकती है।

किशोरावस्था में शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक परिवर्तन तीव्र गति से होने के कारण किशोरों के व्यवहार, रूचियों एवं अभिवृत्तियों में भी परिवर्तन दिखाई देता है। इस अवस्था की प्रमुख विशेषता–मानसिक एवं संवेगात्मक अस्थिरता एवं समायोजन का अभाव होता है। किशोरावस्था में संवेगात्मक व्यवहारों की भिन्नता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इसीलिए इस अवस्था को दबाव, तनाव एवं तूफान की अवस्था भी कहा जाता है।

2. **मूक–बधिर** – मूक–बधिरता एक शारीरिक विकार है। अतः इससे ग्रसित बालक भी शारीरिक विकलांगता की श्रेणी में आते हैं। वास्तव में मूक–बधिर बालक, वे श्रवण दोषयुक्त बालक होते हैं, जिन्हें कानों द्वारा सुनने में कठिनाई होती है अथवा वे पूर्णतया बहरे होते हैं। चूँकि भाषा विकास के लिए ध्वनि का सुनाई देना

आवश्यक होता है और बधिर बालक किसी भी प्रकार की ध्वनि को सुनने में असमर्थ होते हैं, अतः वे स्वाभाविक भाषा अर्जित नहीं कर पाते और श्रवण दोष के साथ–साथ वाणी दोष अथवा मूकता का भी शिकार हो जाते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मूक–बधिर बालक, श्रवण एवं वाणी दोष युक्त वे बालक होते हैं, जो शाब्दिक अभिव्यक्ति में अक्षम होते हैं। तथा उनकी श्रवण एवं वाणी योग्यता सामान्य व्यक्तियों से इतनी अधिक भिन्न होती है कि, वह संवाद में बाधा बनकर श्रोता तथा वक्ता दोनों की परेशानी और उलझन का कारण बनती है। अर्थात् मूक–बधिर बालक सामान्य बालकों की तुलना में बोलने एवं सुनने में निर्योग्यता लिए हुए होते हैं।

3. समायोजन – समायोजन को प्रचलित रूप में सामंजस्य, व्यवस्थापन या अनुकूलन भी कहते हैं। समायोजन दो शब्दो से मिलकर बना है – सम् तथा आयोजन। यहाँ सम् का अर्थ है – समान रूप से तथा आयोजन का अर्थ है – व्यवस्था। अर्थात् भली–भाँति या समान रूप से व्यवस्था करना। अतएव समायोजन का अर्थ हुआ सुव्यवस्थित ढंग से परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की प्रक्रिया, जिससे व्यक्ति की आवश्यकताएँ पूरी हो जाएँ और मानसिक द्वन्द्व तथा तनाव न होने पाए।

इस प्रकार सामान्य शब्दों में कहा जा सकता है कि, समायोजन व्यक्ति की संतुलित अवस्था एवं कुसमायोजन असंतुलित अवस्था होती है।

4. आक्रामकता – आक्रामकता से तात्पर्य उत्तेजित अवस्था में किए गए उस शाब्दिक अथवा शारीरिक व्यवहार से है, जिसमें वह अन्य को नुकसान पहुँचाता है अथवा डराता है। जैसे – मारना, नोचना, काटना, जोर से चिल्लाना, वस्तुएँ उठाकर फेंक देना, तोड़–फोड़ करना, गाली–गलौज करना आदि।

वास्तव में यह एक असामान्य व अनैतिक संवेगात्मक व्यवहार की दशा है, जो व्यक्ति के दीर्घकालिक क्रोध अथवा कुण्ठा की अभिव्यक्ति होती है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि, जब व्यक्ति की आवश्यकताओं, इच्छाओं व रूचियों में किसी प्रकार की बाधा पहुँचती है, तब वह क्रोध और कुण्ठा का शिकार हो जाता है तथा क्रोध एवं कुण्ठा जैसे संवेगो को बाहर निकालने अथवा प्रदर्शित करने के लिए वह आक्रामकता के तरीके को अपना लेता है।

5. आत्म अवधारणा – आत्म अवधारणा दो शब्दों से मिलकर बना है – आत्म एवं अवधारणा। अर्थात् आत्म या स्वयं के संबंध मे धारणा।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी शारीरिक–मानसिक योग्यताओं, बाहरी रंग–रूप सामाजिक कौशलों, मनोवैज्ञानिक व आध्यात्मिक विशेषताओं आदि से भली–भाँति परिचित होते हैं। यद्यपि वह अन्य के सामने दोहरे व्यक्तित्व का प्रदर्शन कर सकते हैं, तथापि वह आत्म प्रत्यक्षीकरण एवं आत्म मूल्यांकन द्वारा स्वयं के संबंध में एक निश्चित धारणा अवश्य निर्मित करते हैं। यही आत्म अवधारणा अथवा आत्म प्रत्यय कहलाती है।

आत्म अवधारणा के अंतर्गत व्यक्ति स्वयं के संबंध में दो प्रकार के प्रत्ययों का निर्माण करता है – शारीरिक प्रत्यय एवं मनोवैज्ञानिक प्रत्यय।

1.15 शोध कार्य प्रस्तुतीकरण की योजना

किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक संपादित करने हेतु उसकी पूर्व योजना बनाना एवं संपूर्ण कार्य को योजनानुसार क्रियान्वित करना अत्यंत आवश्यक होता है। योजना के अभाव में कार्य की सफलता संदिग्ध हो सकती है। एक ओर, योजना जहाँ कार्य को व्यवस्थित एवं संगठित रूप प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर कार्य हेतु उचित दिशा निर्देश एवं अभिप्रेरणा भी प्रस्तुत करती है।

इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध कार्य प्रस्तुतीकरण की योजना तैयार की गई है एवं शोध कार्य प्रतिवेदन को अग्रलिखित पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है :

प्रथम अध्याय – इस अध्याय में शोध समस्या के समस्त प्रक्रमों का वर्णन विस्तृत रूप में किया गया। यथा–शोध की प्रस्तावना, समस्या का औचित्य, समस्या कथन, शोध के उद्देश्य, शोध की परिकल्पनाएँ, शोध अध्ययन का परिसीमन, शोध में प्रयुक्त मुख्य तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण तथा शोध कार्य प्रस्तुतीकरण की योजना।

द्वितीय अध्याय – इस अध्याय मे शोध समस्या से संबंधित पूर्व मे किए गए शोध अध्ययनों का उल्लेख किया गया। संबंधित साहित्य के अध्ययन के उद्देश्य एवं महत्त्व को प्रस्तुत करने के साथ–साथ उन विदेशी एवं भारतीय शोध कार्यों का संक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत किया गया, जो प्रस्तुत शोध समस्या के किसी भी चर से संबंधित हैं, यथा – मूक बधिर, किशोर–अभिभावक संबंध, समायोजन, आक्रामकता एवं आत्म अवधारणा से संबंधित शोध अध्ययन।

तृतीय अध्याय – इस अध्याय में शोध अध्ययन की संपूर्ण योजना एवं कार्यविधि का उल्लेख किया गया। इसके अंतर्गत अध्ययन में अपनाई जाने वाली शोध विधि, जनसंख्या निर्धारण एवं न्यादर्श का चयन, शोध में प्रयुक्त उपकरण एवं प्रदत्त संकलन कार्य का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया।

चतुर्थ अध्याय – इस अध्याय में शोध समस्या से संबंधित कक्षा–कक्ष वातावरण में संकलित समस्त उपयोगी प्रदत्तों का उद्देश्यवार वर्गीकरण, सारणीयन, विश्लेषण एवं विवेचन प्रस्तुत किया गया। साथ ही आलेखीय प्रस्तुतीकरण को भी महत्त्व दिया गया।

पंचम् अध्याय – इस अध्याय में विश्लेषण प्रक्रिया से प्राप्त परिणामों एवं निष्कर्षों को प्रस्तुत करने के साथ ही शोध की उपादेयता व भावी शोध हेतु कुछ सुझाव भी प्रस्तुत किए गए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का पुनर्निरीक्षण

''मुद्रित साहित्य के अपार भण्डार की कुँजी अर्थपूर्ण समस्या और विश्लेषणीय परिकल्पना के स्त्रोत का द्वार खोल देती है।''

- चार्टर वी० गुड

संबंधित साहित्य का पुनर्निरीक्षण

2.1 प्रस्तावना

वास्तव में समस्त मानवीय ज्ञान पुस्तकों तथा पुस्तकालयों में उपलब्ध हो सकता है। मनुष्य अतीत के संचित एवं आलेखित ज्ञान के सहारे ही पुनः नए सिरे से कार्य प्रारंभ करके नवीन ज्ञान का सृजन करता है। इस प्रकार मानवीय ज्ञान में अटूट क्रमिकता एवं प्रगतिशीलता पाई जाती है।

ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में उपयुक्त अध्ययन करने के लिए शोधकर्ता को अपनी समस्या से संबंधित साहित्य का पर्याप्त परिचय प्राप्त करना आवश्यक होता है। तदुपरान्त ही विशिष्ट ज्ञान के लिए प्रभावपूर्ण शोध संभव हो सकता है। यद्यपि संबंधित साहित्य का पुनर्निरीक्षण करना एक श्रम साध्य एवं समय साध्य कार्य है, तथापि यह शोध प्रक्रिया का अत्यंत ही उपयोगी पक्ष है। प्रत्येक शोधकर्ता को यह पूर्णरूप से ज्ञात होना चाहिए कि, उसके द्वारा चयनित समस्या के संबंध में सैद्धांतिक एवं क्रियात्मक दृष्टि से क्या कार्य हो चुका है तथा क्या होना शेष है। यह नवीनतम जानकारी शोधकर्ता को अनुसंधान हेतु मार्ग निर्देशित करने के साथ–साथ उसे कार्य करने हेतु परिपक्वता भी प्रदान करती है।

2.2 संबंधित साहित्य एवं उसके पुनर्निरीक्षण का अर्थ

संबंधित साहित्य से तात्पर्य शोध समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, ज्ञान–कोषों, शोध–प्रबंधों एवं अभिलेखों से है, जिनके अध्ययन द्वारा शोधकर्ता को अपनी समस्या के चयन, उसकी परिकल्पनाओं के निर्माण तथा अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने व शोध को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

पुनर्निरीक्षण शब्द का अर्थ है – शोध के विशेष क्षेत्र के ज्ञान की व्याख्या करना एवं ज्ञान को विस्तृत करना।

साहित्य पुनर्निरीक्षण शोध की एक आवश्यक सीढ़ी है, जिसके माध्यम से शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता है कि, उसके द्वारा प्रस्तावित शोध से संबंधित विषय पर विचारणीय कार्य पहले हो चुका है अथवा नहीं तथा उसके द्वारा किया जाने वाला अध्ययन इस क्षेत्र में उपयोगी होगा या नहीं।

बोर्ग ने संबंधित साहित्य के अध्ययन को निम्न कथन द्वारा प्रस्तुत किया हैः

''शैक्षिक अनुसंधान से संबंधित साहित्य का अध्ययन किसी अनुसंधानकर्ता के लिए किसी समस्या विशेष के मूल में पहुँचने का एक महत्वपूर्ण साधन है। ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में विशिष्ट ज्ञान की प्राप्ति तभी प्रभावपूर्ण हो सकती है, जब उस क्षेत्र से संबंधित संदर्भ सामग्री एवं साहित्य का अध्ययन भली भाँति हो सके।''

— शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी : सिंह एवं शर्मा, 2008

2.3 संबंधित साहित्य के पुनर्निरीक्षण के उद्देश्य

संबंधित साहित्य का पुनर्निरीक्षण शोध–प्रतिवेदन के द्वितीय अध्याय के लिए विषयवस्तु प्रदान करने के अतिरिक्त कुछ अन्य उद्देश्यों की भी पूर्ति करता है।

गुड, बार एवं स्केट्स ने संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण के लक्ष्यों का विश्लेषण निम्न रूप में किया है :

1. उपलब्ध साक्ष्यों एवं प्रमाणों द्वारा समस्या का समुचित समाधान प्रस्तुत करना।
2. समस्या के व्यवस्थापन की दृष्टि से उपयोगी विचार, सिद्धांत, व्याख्या अथवा उपकल्पनाएँ उपलब्ध कराना।
3. समस्या के अनुकूल शोध प्रणाली प्रस्तावित करना।
4. परिणामों की व्याख्या करने की दृष्टि से उपयोगी तथा तुलनात्मक प्रदत्तों की खोज करना।

2.4 शैक्षिक अनुसंधान में संबंधित साहित्य का महत्व

संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना शोधकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान हैं। इसके अभाव में वह सही दिशा में एक कदम भी आगे बढ़ने में असमर्थ होता है। क्योंकि जब तक उसको यह ज्ञात नहीं होगा कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से किया गया है तथा उसके क्या परिणाम आए हैं, तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही शोध की रूपरेखा तैयार कर सकता है। इसके अभाव में कार्य का संपादन भी मुश्किल है।

जॉन डब्ल्यू. बेस्ट व आर. गेज ने इसके महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा है कि, ''अनुसंधान कार्य की सफलता के लिए संबंधित साहित्य का अवलोकन अपरिहार्य है।''– *Methodology of Educational Research : Upadhyay & Others, 2005*

शैक्षिक अनुसंधान में संदर्भ साहित्य का महत्व निम्न रूपों में देखा जा सकता है :

1. अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचना।
2. समस्या के अध्ययन में सूझ पैदा करना।
3. समस्या के चयन, कथन, विश्लेषण एवं सीमांकन में सहायक होना।
4. समस्या के रूपरेखा निर्माण में सहायक होना।
5. वास्तविक उपलब्ध तथ्यों की सूचना प्रदान करना।
6. सभी प्रकार के विज्ञानों तथा शास्त्रों के अध्ययन को आधार प्रदान करना।
7. शोधकर्ता को त्रुटियों के प्रति सचेत करना।
8. शोधकर्ता के आत्मविश्वास में वृद्धि करना।
9. पूर्व एकत्रित आँकड़ों से वर्तमान में सहायता प्राप्त करना।
10. समय की बचत में सहायक होना।
11. आँकड़ों के सारणीयन, व्यवस्थापन तथा विश्लेषण में सहायक होना।
12. सांख्यिकी विधियों के प्रयोग तथा निष्कर्ष निकालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना।

2.5 संबंधित साहित्य प्राप्त करने के स्त्रोत

किसी भी शोध क्षेत्र में विद्यमान सूचना के स्त्रोत दो प्रकार के हो सकते हैं :

1. **प्रत्यक्ष अथवा प्राथमिक स्त्रोत** – शिक्षा साहित्य के रूप में सूचना के प्रत्यक्ष अथवा प्राथमिक स्त्रोत निम्नलिखित हो सकते हैं :

(i) पत्रिकाओं में उपलब्ध सामयिक साहित्य।

(ii) ग्रंथ, एक ही विषय पर निबंध पुस्तिकाएँ (Monographs), वार्षिक पुस्तकें तथा बुलैटिन।

(iii) स्नातक, डॉक्टरल तथा अन्य शोध–प्रबन्ध।

(iv) अन्य विविध स्त्रोत, जैसे – शासन के शिक्षा पर प्रकाशन आदि।

2. **अप्रत्यक्ष अथवा द्वितीयक स्त्रोत** – सूचना के अप्रत्यक्ष स्त्रोत अथवा शिक्षा साहित्य के लिए निर्देशिकाएँ निम्न रूप में प्राप्त हो सकती हैं :

(i) शिक्षा के विश्व ज्ञान–कोष (Encyclopedia of Education)

(ii) शिक्षा सूची पत्र (Education Indexes)

(iii) शिक्षा सार (Education Abstracts)

(iv) संदर्भ ग्रंथ सूची एव निर्देशिकाएँ (Bibliographies & Directories)

(v) जीवन–गाथा संबंधी सन्दर्भ (Biographical Refrences)

(vi) उद्धरण स्त्रोत (Quotation Sources)

(vii) अन्य विविध स्त्रोत।

2.6 प्रस्तुत शोध अध्ययन में संबंधित साहित्य के स्त्रोत

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकत्री द्वारा प्राप्त किए गए संदर्भ साहित्य के स्त्रोत अग्रलिखित हैं :

1. सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन।
2. एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजुकेशन।
3. समसामयिक पत्रिकाएँ, शोध प्रबंध, शोध प्रकाशन, मासिक पत्र–पत्रिकाएँ आदि।
4. अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशन (सरकारी व गैर सरकारी)।
5. विविध शिक्षा सार (Review of Edu. Research, Educational Abstracts etc.)
6. शिक्षा से संबंधित राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जरनैल (Educational Journals : National & International)
7. विश्वविद्यालय शोधार्थियों द्वारा प्रस्तुत किए गए पूर्व शोध प्रतिवेदन।
8. संदर्भ ग्रंथ सूचियाँ एवं निर्देशिकाएँ।
9. शिक्षाशास्त्रियों एवं विद्वानों द्वारा लिखित ग्रंथ।
10. इण्टरनेट।

2.7 प्रस्तुत शोध अध्ययन से संबंधित विदेशी अनुसंधान

(Research Conducted Abroad)

Shek Daniel T.L., 2000[1] *Springer-Link, (12-18)*

"Difference between fathers & mothers in the treatment of & relationship with their teenage children : Perception of Chinese adolescence."

Findings

Adolescent female as compared to males, perceived their parents to be more demanding but less harsh.

Robins R.W. Tracy J.L.; Trezesnewski K & Potter J., 2001[2]

Journal of Research in Personality, 29, (169-182)

"Personality correlates of self esteem."

Findings

(i) A person with high self esteem perceives himself or herself as better more capable & of greater worth than does someone with low self esteem.

(ii) High self esteem individuals are emotionally stable, extroverted & conscientious & are somewhat agreeable & open to experience.

Henderson A.T. & Mapp K., 2002[3]

Southwest Educational Development Lab.

"A new wave of evidence – The impact of school, family & community on student achievement."

Findings

(i) Parents with high involvement tended to have children with higher grades & test scores.

(ii) There are positive effects of parental support an achievement motivation.

Hines D.A. & Saudino K.J., 2003[4] *Violence & Victims,18 (197-217)*

"Gender differences in psychological, physical & sexual aggression among college students using the revised conflict tactics scales."

Findings

Females are not necessarily less aggressive but that they tend to show their aggression in less overt, less physical ways. They display more verbal & relational aggression such as social rejection.

Chen, 2005[5] *School Psychology International 29, (183-198)*

"Relations of parental, teacher & peer support to academic engagement & achievement among Hong-Kong Students."

Findings

Parents, Teachers & Peers perceive that academic support has the strongest influence on childs achievement.

Baillargeon R;Keenan K;Zoccolillo M;Cote S. & Perusses D., 2005[6] *Developmental Psychology, vol.3, (13-16)*

"Gender Differences in Physical Aggresion."

Findings

Males are generally physically aggressive, whereas females are verbally aggressive.

Archer J. & Parker S., 2006[7] *Aggressive Behaviour,vol.20(2),(101-114)*

"Social representations of aggression in children."

Findings

(i) There is a general sex difference in reactions to aggressive or hostile act.

(ii) Girls showed higher expressive scores than boys.

Burde K. & Jenson L., 2008[8] *Psychology in the Schools, 20(3),(370-375)*

"The self concept & aggressive behaviour among elementary school children from two socio-economic areas & two grade levels"

Findings

A significantly larger mean aggressiveness score among children with low self concepts when compared to children with medium & high self concepts.

Adeniyi S.O. (Federal college of Education, Akoka), Oyewumi A.M. & Fakolade O.A. (University of Ibadan), 2011[9]

International Journal of Special Education, vol.26, No.3, 2011

"An Assessment of the level of influence of family life & AIDS Education on knowledge, attitude & decision making among adolescents with hearing impairement in some status in Algeria."

Findings

(i) There will be no significant difference in the level of knowledge about AIDS as a result of family life & AIDS education between male & female participants.

(ii) There will be no significant difference in the decision making and attitude of the participants to AIDS as a result of family life & AIDS education.

Athina, Arampatzi; Katerina Mouratidou ; Christna; Eirini Koidou & Varsilis Barkoukis (Aristotle Univ. of Thessaloniki) 2011[10]

International Journal of Special Education, vol.26, No.2, 2011

"Social Development Parameters in Primary schools : Inclusive settings & gender differences on pupil's aggressive & social insecure behaviour & their attitudes towards disability."

Findings

(i) Regarding the evaluation of students social developmental aspects, results showed that levels of aggressive & social insecure behaviour were low.

(ii) Aggressive behaviour revealed a significant main effect on gender.

2.8 प्रस्तुत शोध अध्ययन से संबंधित भारतीय अनुसंधान

I. मूक–बधिर बालकों से संबंधित कुछ नवीन भारतीय शोध अध्ययन :

साहू पी., 2003[1] *Indian Educational Abstracts, Vol.4(1) Jan.2004 (67-68)*

''प्राथमिक स्तर के बधिर एवं सामान्य बालकों पर पठनीय योग्यता संवर्द्धन प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रभाव का एक अध्ययन।''

परिणाम

बधिर एवं सामान्य दोनों ही प्रकार के बालकों की पठनीय योग्यता पर प्रशिक्षण कार्यक्रम द्वारा सार्थक सुधार देखा गया, किन्तु बधिर बालकों की तुलना में सामान्य बालकों द्वारा सुधार कार्यक्रम से अधिक लाभ उठाया गया।

शर्मिष्ठा पी.एस., 2003[2] *Indicators of Quality Education (NCERT)(181-192)*

''बधिर बालकों की सफलता में उपलब्धि सूचक के रूप मे भाषा विज्ञान के प्रत्ययों का अध्ययन।''

परिणाम

बधिर बालकों पर प्रशिक्षण का सार्थक प्रभाव देखा गया किन्तु बधिर एवं सामान्य बालकों में भाषायी प्रत्ययों को सीखने में सार्थक अंतर देखा गया।

कौशिक एन. एवं सिंह, 2006[3] *Disabilities & Impairments,vol.20(2)(85-88)*

''श्रवण–निर्योग्य एवं सामान्य बालकों के समायोजन एवं आत्मप्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन।''

परिणाम

सामान्य बालकों की तुलना में श्रवण निर्योग्य बालकों का समायोजन स्तर एवं आत्म प्रत्यय दोनों ही निम्न पाए गए।

मुरली, 2006[4] *Anweshika : Indian Journal of Teacher Education (138)*

''विभिन्न श्रेणियों के विकलांग बालकों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य तुलनात्मक अध्ययन।''

परिणाम

(i) मूक–बधिर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि अन्य श्रेणी के विकलांग बालकों की तुलना में कम पायी गई।

(ii) केवल 10% मूक बधिर बालकों की शैक्षिक उपलबिध अच्छी एवं 90% मूक बधिर बालकों की शैक्षिक उपलब्धि औसत या औसत से कम पायी गई।

अग्रवाल आर., 2007[5]*Asian Journal of Psychology & Education, Vol.40,2007*

''सामान्य एवं विकलांग बालकों के मध्य उनके संवेगात्मक प्रदर्शन एवं नियंत्रण का तुलनात्मक अध्ययन।''

परिणाम

विकलांग बालकों की तुलना में सामान्य बालकों द्वारा उचित संवेगात्मक प्रदर्शन एवं नियंत्रण प्रदर्शित किया गया।

धींगरा मनहस एवं सेठी, 2007[6] *Disabilities & Impairments,vol.21(1)(19-25)*

''मूक–बधिर बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं सामाजिक समायोजन का एक अध्ययन।''

परिणाम

मूक बधिर बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं समायोजन स्तर के मध्य सार्थक संबंध पाया गया। जिन बालकों का पारिवारिक वातावरण अच्छा था, उनका समायोजन स्तर भी अच्छा पाया गया।

सोनी आर.बी.एल., 2008(7) *Indian Educational Abstracts, vol.8(1)Jan 2008*

''विकलांग बालकों एवं बालिकाओं के अभिभावकों, शिक्षकों एवं अन्य विद्यार्थियों का उनकी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।''

परिणाम

विकलांग बालक–बालिकाओं की शिक्षा के प्रति उनके अभिभावकों, शिक्षकों एवं अन्य विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

नायक ए.जयेश, 2009(8) *Journal of Edu. & Psychology, vol.66 (1)2009*

''माध्यमिक स्तर के मूक–बधिर बालकों की सृजनात्मकता का एक अध्ययन।''

परिणाम

(i) कक्षा 10 के मूक बधिर बालकों एवं बालिकाओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर पाया गया, किन्तु कक्षा नौ के मूक बधिर बालकों एवं बालिकाओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

(ii) शहरी एवं ग्रामीण मूक–बधिर बालकों के सृजनात्मकता प्राप्तांकों में सार्थक अंतर पाया गया।

अग्रवाल ऋतु, 2010(9) *Behavioural Scientist vol.11, (2), 2010, (129-134)*

''सामान्य एवं विकलांग बालकों की संवेगों की प्रतिक्रिया योग्यता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन।''

परिणाम

उच्च एवं निम्न दोनों ही सामाजिक आर्थिक स्तर के सामान्य बालकों द्वारा विकलांग बालकों की अपेक्षा संवेगात्मक प्रतिक्रिया योग्यता का अधिक अच्छा प्रदर्शन किया गया।

सरोज एम., 2011[10] *Asian Journal of Psycho. & Edu,vol.44 (3,4)2011(26-30)*

''उच्च एवं निम्न समायोजित मूक बधिर बालकों के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन।''

परिणाम

उच्च एवं निम्न समायोजन स्तर वाले मूक–बधिर बालकों के पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

II. अभिभावक–बालक संबंधों पर कुछ नवीन भारतीय शोध अध्ययन :

कौर हरप्रीत एवं कालारमणा, 2004[11] *Journal of Psychometry,Jul 2010(68)*

''किशोरों की आयु एवं लिंग के आधार पर उनके माता–पिता के साथ संबंधों का एक अध्ययन।''

परिणाम

पिता अपनी बेटियों की तुलना में बेटों को शारीरिक दण्ड देना अधिक पसंद करते हैं। वे अपनी बेटियों को भी दण्ड देने की अनुशंसा रखते हैं, किन्तु शारीरिक दण्ड नहीं।

सैनी एस., 2005[12] *Indian Educational Review, Vol.41(2) (87-94)*

''माता के कामकाजी एवं गैर–कामकाजी होने का किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं पारिवारिक वातावरण पर प्रभाव का एक अध्ययन।''

परिणाम

कामकाजी एवं गैर कामकाजी माता वाले परिवारों के वातावरण में सार्थक अंतर देखा गया। कामकाजी माता वाले किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि, गैर कामकाजी माता वाले किशोरों से अधिक पाई गई।

रानी एस.एवं कौशिक एन, 2005[13]

Journal of Psychological Researches,Vol.49(2), (89-94)

''किशोरों की उपलब्धि अभिप्रेरणा, पारिवारिक वातावरण एवं अभिभावकों के साथ संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन।''

परिणाम

(i) किशोरों एवं किशोरियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा उनके प्रति माता–पिता के प्रत्यक्षीकरण में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

(ii) किशोर–अभिभावक संबंध एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

महातो बबीता, 2009[14] *Indian Psychiatry, Vol.18(1) Jan-June 2009*

''मद्यपान करने वाले माता–पिता एवं मद्यपान नहीं करने वाले माता–पिता का अपने बालकों के साथ संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन।''

परिणाम

(i) मद्यपान नहीं करने वाले माता–पिता की तुलना में मद्यपान करने वाले माता–पिता द्वारा अपने बालकों को शारीरिक दण्ड एवं प्रतीकात्मक दण्ड देना अधिक पाया गया।

(ii) मद्यपान नहीं करने वाले माता–पिता की तुलना में मद्यपान करने वाले माता–पिता द्वारा अपने बालकों की उपेक्षा व अस्वीकरण अधिक पाया गया।

बासक तनुश्री एवं मुखर्जी तिलोत्तम, 2010[15]

Journal of Psychometry, Vol.24, No.2, Jul-Dec. 2010, (56-71)

''बालक अभिभावक संबंधों का किशोर बालक एवं बालिकाओं के आत्म प्रत्यय एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा पर प्रभाव का एक अध्ययन।''

परिणाम

माता पिता द्वारा दिए गए भौतिक पुरस्कार, प्रतीकात्मक पुरस्कार, स्नेह, प्यार आदि का किशोरों की उपलब्धि अभिप्रेरणा से सार्थक ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया जबकि किशोर बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा से सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

दीक्षित प्रियनंदिनी एवं शर्मा विभा रानी, 2010[16]

Indian Journal of Psychology & Education, 42(2), 2011, (198-202)

''किशोरों के पारिवारिक वातावरण का उनके मानसिक स्वास्थ्य एवं चिंता स्तर पर प्रभाव का एक अध्ययन।''

परिणाम

परिवार के अनुकूल एवं प्रतिकूल वातावरण का किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य एवं चिंता स्तर दोनों पर सार्थक अंतर देखा गया।

तिवारी ज्योति एवं नैथानी रेखा, 2011[17]

Indian Journal of Psychometry & Education , IJPE Patna, 42(1), 2011 (23-25)

''किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बालक अभिभावक संबंधों का अध्ययन।''

परिणाम

(i) अतिरक्षण परक एवं अधिकारपूर्ण अभिभावक–बालक संबंधों में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि कम पायी गई।

(ii) स्नेहपूर्ण अभिभावक–बालक संबंधों में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गई।

शर्मा मनदीप, नवरतन एवं यादव अमृता, 2011[18]

Jounal of Indian Academy of Applied Psychology,vol.37(1)Jan 2011(60-68)

''किशोरों में अवसाद एवं अभिभावकीय शैली : एक अध्ययन।''

परिणाम

(i) औसत से अधिक एवं कम दोनों ही प्रकार के अधिकार जताने वाले अभिभावकीय व्यवहार में किशोरों में अवसाद की मात्रा अधिकतम पाई गई।

(ii) कम सख्ती रखने वाले एवं अधिक छूट देने वाले अभिभावकीय व्यवहार की अपेक्षा अधिक सख्ती रखने वाले एवं कम छूट देने वाले अभिभावकीय व्यवहार में किशोरों में अवसाद की मात्रा अधिक पाई गई।

अन्नपूर्णा कुमारी, 2011[19]

Indian Journal of Psychometry & Education,42(1),2011(62-65)

''अभिभावकों के व्यवहार का बालकों के व्यक्तित्व पर प्रभाव का अध्ययन।''

परिणाम

बालकों के विशिष्ट व्यक्तित्व कारकों के विकास पर अभिभावकीय व्यवहार की गुणात्मकता एवं अभिभावकीय प्रकारों का सार्थक प्रभाव देखा गया।

आचार्य नेहा एवं जोशी शोभना, 2011[20]

Journal of Indian Academy of Applied Psycho.,Vol.37(1)Jan2011(132-139)

''किशोरों के प्रति अभिभावकों के सहयोग व उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन।''

परिणाम

किशोरों के प्रति अभिभावकों के सहयोग एवं किशोरों की उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

III. समायोजन से संबंधित कुछ नवीन भारतीय शोध अध्ययन :

चौहान आर.एस., 2004[21] *Indian Educational Abstracts, Vol.4, No.1, Jan2004*

''उच्च माध्यमिक स्तर के बालकों के समायोजन स्तर एवं अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व पर विभिन्न अधिगम शैलियों के प्रभाव का एक अध्ययन।''

परिणाम

बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले बालकों के समायोजन पर विभिन्न अधिगम शैलियों का कोई प्रभाव नहीं देखा गया।जबकि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले बालकों के समायोजन पर विभिन्न अधिगम शैलियों का धनात्मक प्रभाव देखा गया।

सिन्धु आई.एस., 2005[22] *Ram-Eesh Journal of Education,Vol.2(2)(19-23)*

''बालकों के समायोजन एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों की अभिप्रेरणा के प्रभाव का एक अध्ययन।''

परिणाम

(i) बालकों की तुलना में बालिकाओं का समायोजन स्तर उच्च पाया गया। जबकि दोनों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

(ii) विद्यार्थियों के शिक्षकों से प्रभावित होने एवं विद्यालय समायोजन के मध्य निम्न धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

प्रसाद आर.एस., 2005[23] *New Frontier in Education, Vol.35 (55-58)*

''आवासीय विद्यालयों में रहने वाले बालकों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का एक अध्ययन।''

परिणाम

बालकों के गृह, संवेगात्मक एवं शैक्षिक समायोजन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

गुरू बसप्पा एच.डी., 2005[24] *Edutracks, Vol.4 (18-21)*

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके समायोजन एवं मानसिक योग्यता के साथ सहसंबंधात्मक अध्ययन।''

परिणाम

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन तथा मानसिक योग्यता के मध्य उच्च धनात्मक एवं सार्थक सहसंबंध पाया गया।

मोहनराज रानी एवं लाथा, 2005[25]

Journal of Indian Academy of Applied Psychology, 31(1-2)(18-23)

''बालकों के पारिवारिक वातावरण का उनके समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि से संबंध का एक अध्ययन।''

परिणाम

परिवार के विभिन्न वातावरणीय कारकों का बालकों के समायोजन एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक संबंध पाया गया।

देशमुख एन.एच., 2007[26]

The Asian Journal of Psychology & Education, vol.40, No.1-2 (7-13)

''अभिभावकीय प्रजातांत्रिक अभिवृत्ति एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर का किशोरों के समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन।''

परिणाम

(i) अभिभावकों की प्रजातांत्रिक अभिवृत्ति का किशोरों के समायोजन से धनात्मक सार्थक संबंध पाया गया।

(ii) अभिभावकों की प्रजातांत्रिक अभिवृत्ति को परिवार के सामाजिक–आर्थिक स्तर से संबंधित करने पर किशोरों के समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं देखा गया।

ऊषा पी., 2007[27] *Edutracks, vol.6 (25-27)*

''बालकों के संवेगात्मक समायोजन एवं पारिवारिक स्वीकरण का उनकी उपलब्धि के साथ सहसंबंध।''

परिणाम

उच्च स्तरीय संवेगात्मक समायोजित बालकों की शैक्षिक उपलब्धि उन बालकों की तुलना में उच्च पाई गई, जिनका संवेगात्मक समायोजन स्तर औसत, असंतोषजनक अथवा अत्यंत असंतोषजनक था।

पंवार एस., 2008[28] *Prathmik Shikshak (NCERT), vol.33, No.1, Jan.2008*

''उच्च प्राथमिक स्तर के बालकों एवं बालिकाओं के समायोजन एवं माता–पिता के उनके प्रति व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन।''

परिणाम

(i) बालकों एवं बालिकाओं के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

(ii) माता–पिता के बालकों एवं बालिकाओं के प्रति व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

दुबे भावेश चन्द्र, 2011[29]

Bhartiya Adhunik Shiksha (NCERT) vol.37, No.3, Jan.2011

''विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन का प्रभाव।''

परिणाम

विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव देखा गया।

पन्नू आर. एवं सिंह, 2011[30] *Behavioural Scientist, vol.12(1)2011(51-56)*

''किशोर विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव।''

परिणाम

किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन का सार्थक प्रभाव पाया गया, जबकि सामाजिक समायोजन स्तर का कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

IV. आक्रामकता से संबंधित कुछ नवीन भारतीय शोध अध्ययन :

विज़ डी. एवं नन्दा पी., 1999[31]

Praachi Journal of Psycho–Cultural Dimensions, vol.15, (125-128)

''बालकों के जन्मक्रम का उनकी आक्रामकता पर प्रभाव का अध्ययन।''

परिणाम

परिवार में प्रथम जन्म क्रम वाले बालकों में आक्रामकता कम पाई गई। जबकि द्वितीय क्रम एवं बाद के क्रम में जन्म लेने वाले बालकों में आक्रामकता उच्च स्तर पर पाई गई।

तोमर वी., 1999[32] *Journal of Personality & Clinical Studies,vol.15(52-55)*

''बालकों एवं बालिकाओं की आक्रामकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं लिंग भेद के प्रभाव का अध्ययन।''

परिणाम

निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले बालकों में आक्रामकता की वृत्ति अधिक पाई गई तथा बालिकाओं की आक्रामकता पर भी सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव देखा गया।

रवनीत, 2005[33]

Indian Educational Abstracts, vol.8,No.1, Jan.2008

''पारिवारिक वातावरण एवं सामाजिक आर्थिक स्तर का किशोरों के समायोजन एवं आक्रामकता पर प्रभाव का एक अध्ययन।''

परिणाम

(i) किशोरियों की तुलना में किशोर अधिक आक्रामक पाए गए।

(ii) समायोजन का पारिवारिक वातावरण एवं सामाजिक आर्थिक स्तर से सार्थक एवं धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

(iii) आक्रामकता का भी पारिवारिक वातावरण एवं सामाजिक आर्थिक स्तर से सार्थक एवं धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

अरोरा एन., 2006[34]

The Journal of Mental Health Retrospech & Prospects, vol.32 (29-30)

''बालकों की आक्रामकता एवं तनाव पर पारिवारिक वातावरण एवं आकांक्षाओं के प्रभाव का अध्ययन।''

परिणाम

(i) बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं चिंता तथा तनाव के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

(ii) बालकों के पारिवारिक वातावरण एवं आक्रामकता के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

(iii) बालकों की आक्रामकता एवं आकांक्षाओं के मध्य भी सार्थक सहसंबंध पाया गया। जिन बालकों की आकांक्षाएँ पूरी नहीं हो सकीं उनका तनाव स्तर व आक्रामकता स्तर अधिक पाए गए।

अब्राहम मर्सी एवं जॉर्ज रीना, 2007[35]

Indian Educational Review, vol.43, No.2, July 2007

''किशोरों के द्वारा अपनाई जाने वाली आक्रामक रक्षात्मक युक्ति का अध्ययन।''

परिणाम

(i) 13 से 17 वर्ष के किशोरों की आयु में वृद्धि के साथ–साथ आक्रामक रक्षात्मक युक्ति के प्रयोग में कमी पाई गई।

(ii) आक्रामक रक्षात्मक युक्ति का प्रयोग किशोरियों की तुलना में किशोरों द्वारा अधिक देखा गया।

शानवाल पूजा एवं सांगवान शीला, 2010[36]

Journal of Psychometry, vol.24, No.2, July-Dec.2010, (33-43)

''बालकों में शारीरिक एवं वाचिक आक्रामकता का एक अध्ययन।''

परिणाम

(i) बालकों में बालिकाओं की अपेक्षा आक्रामकता का स्तर अधिक पाया गया।

(ii) बालकों में शारीरिक आक्रामकता एवं बालिकाओं में वाचिक (शाब्दिक) आक्रामकता अधिक पायी गई।

मीना कुमारी एवं कुमार प्रदीप, 2010[37]

Indian Journal of Psychometry & Education 42(2), July.2011, (123-124)

''बेरोजगार युवाओं में तनाव एवं आक्रामकता का एक अध्ययन।''

परिणाम

रोजगार युक्त युवाओं की तुलना में बेरोजगार युवाओं में तनाव एवं आक्रामकता का स्तर अधिक पाया गया।

शर्मा मृदुला एवं गर्ग सारिका, 2011[38]

Psycho-Lingua Journal vol.41(2), July 2011, (157-160)

''वीडियोगेम व इन्टरनेट का आक्रामकता पर मनोवैज्ञानिक अध्ययन।''

परिणाम

हिंसक वीडियोगेम खेलने वाले एवं इण्टरनेट का अत्यधिक प्रयोग करने वाले बालकों का अन्य की तुलना में आक्रामक व्यवहार, आक्रामक विचार एवं आक्रामक संवेगों का स्तर अधिक पाया गया।

ठाकर वी.पूर्णिमा, कांबले जी.एन. एवं कामथ आर.एम., 2011[39]

Bombay Psychologist, vol.xxvi, No.1&2, 2011

''कॉलेज विद्यार्थियों में आत्मप्रत्यय ,आक्रामकता एवं लिंग भेद का अध्ययन।''

परिणाम

(i) शारीरिक आत्मप्रत्यय, आक्रामकता एवं लिंग भेद के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया।

(ii) पुरूषों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में सौंदर्य आत्मप्रत्यय अधिक पाया गया।

लभाने बी.टी., 2011[40]

Indian Journal of Psychometry & Education 2011, 42(1), (66-69)

''आक्रामक व्यवहार का लैंगिक एवं आत्म प्रत्ययात्मक क्रिया के रूप में अध्ययन।''

परिणाम

(i) स्त्रियों की अपेक्षा पुरूषों में शारीरिक एवं शाब्दिक आक्रामकता अधिक पाई गई।

(ii) आत्म प्रत्यय एवं आक्रामकता में ऋणात्मक संबंध पाया गया।

V. आत्म अवधारणा से संबंधित कुछ नवीन भारतीय शोध अध्ययन :

शर्मा के., 1999(41) *Indian Educational Abstracts, vol.18, (19-23)*

''किशोरों के लिंग, विद्यालय अनुशासन, आय–स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि का उनके आत्म प्रत्यय एवं समायोजन से संबंध का एक अध्ययन।''

परिणाम

(i) संतोषजनक गृह समायोजन वाले बालकों की, औसत एवं असंतोषजनक गृह समायोजन वाले बालकों की अपेक्षा शैक्षिक उपलब्धि उच्च पाई गई।

(ii) विद्यालय अनुशासन, आय स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि का बालकों के आत्म प्रत्यय से धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

ज्ञानानी टी.सी., 1999(42) *Psych-Lingua, 29, (111-118)*

''आत्म–अवधारणा का जैविक निर्धारकों से सहसंबंध : एक अध्ययन।''

परिणाम

(i) अनुसूचित जाति, जनजाति अथवा अन्य की तुलना में सामान्य श्रेणी के बालकों की उच्च आत्म अवधारणा पाई गई।

(ii) बालकों की आत्म अवधारणा पर उनकी सामाजिक श्रेणी, शहरीकरण एवं माता के शैक्षिक स्तर का धनात्मक प्रभाव देखा गया।

आलम एम., 2001(43) *Indian Educational Abstracts, vol.4(1) Jan.2004(P-24)*

''मूक–बधिर बालकों एवं सामान्य बालकों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्म–अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन।''

परिणाम

मूक–बधिर बालकों की तुलना में सामान्य बालकों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्म–अवधारणा सार्थक रूप से उच्च पाई गई।

कौर एम., 2001(44) *Journal of Educational Research & Extension, vol.38, No.1*

''आत्म प्रत्यय एवं ज्ञानात्मक प्रत्ययों का सह संबंधात्मक अध्ययन।''

परिणाम

(i) ज्ञानात्मक एवं सृजनात्मक प्रत्ययों का नगरीय एवं ग्रामीण दोनों ही बालकों के आत्म–प्रत्यय से धनात्मक सार्थक संबंध पाया गया।

(ii) आत्म प्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सहसंबंध नहीं पाया गया।

आहूजा ए., 2004(45) *Indian Educational Abstracts, vol.4(1) Jan.2004(P-65)*

''अधिगम निर्योग्य बालकों की शैक्षिक उपलब्धि, आत्म–अवधारणा एवं सामाजिक कौशलों के विकास पर अर्थपूर्ण प्रशिक्षण आव्यूह के प्रभाव का एक अध्ययन।''

परिणाम

प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं व्यूह रचना का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि, आत्म–अवधारणा एवं सामाजिक कौशलों के विकास पर सार्थक धनात्मक प्रभाव पाया गया।

साहू एल एवं सूद, 2005(46) *Ram-Eesh Journal of Education, vol.2(2)(53-57)*

''शिक्षकों की विद्यार्थियों के प्रति अभिवृत्ति का उनके आत्म–प्रत्यक्षीकरण एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।''

परिणाम

(i) शिक्षकों की विद्यार्थियों के प्रति अभिवृत्ति का उनके आत्म प्रत्यक्षीकरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

(ii) विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्म प्रत्यक्षीकरण के मध्य सार्थक सहसंबंध पाया गया।

चौहान कामिनी एवं खान समरीन, 2006[47]

Behavioural Scientist vol.7, No.1, 2006, (33-38)

''सामाजिक रूप से वंचित बालकों के आत्म–प्रत्यय एवं अभिभावकीय स्वीकरण का एक अध्ययन।''

परिणाम

(i) सामान्य बालकों की तुलना में सामाजिक रूप से वंचित बालकों का आत्म प्रत्यय निम्न पाया गया।

(ii) सामान्य बालकों की तुलना में सामाजिक रूप से वंचित बालकों के प्रति अभिभावक स्वीकरण कम पाया गया।

मैसोमेह खोसरवी, 2008[48]

Indian Educational Abstracts, vol.8, (1), Jan.2008, (P-46)

''भारतीय एवं ईरानी किशोर विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय एवं लिंग भेद के मध्य संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन।''

परिणाम

(i) भारतीय एवं ईरानी किशोरों एवं किशोरियों के आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

(ii) भारतीय किशोरों की तुलना में ईरानी किशोरों में परीक्षा के प्रति चिंता अधिक पायी गई।

(iii) भारतीय किशोरों की तुलना में ईरानी किशोरों में परीक्षा के प्रति आत्म विश्वास की कमी पाई गई।

(iv) भारतीय एवं ईरानी किशोरों एवं किशोरियों के आत्म प्रत्यय पर लिंग भेद का कोई अंतर नहीं पाया गया।

कौर जगप्रीत, 2009[49]

Journal of Educational Research & Extension, vol.38

''किशोरों के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि का उनके आत्म–प्रत्यय से सहसंबंधात्मक अध्ययन।''

परिणाम

(i) किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया।

(ii) किशोरों के पारिवारिक वातावरण व आत्म प्रत्यय में धनात्मक सार्थक संबंध पाया गया।

निशा के.पी. एवं राव शिंदे, 2011[50]

Journal of Research & Extension in Education, vol.6(1), Jan. 2011, (58-67)

''अभिभावक–बालक संबंधों एवं बालकों की आत्मअवधारणा के मध्य सहसंबंध'

परिणाम

(i) बालकों एवं बालिकाओं की आत्म अवधारणा में सार्थक अंतर पाया गया।

(ii) अभिभावक–बालक संबंधों के दस आयामों में से प्यार, प्रतीकात्मक पुरस्कार प्रत्यक्ष पुरस्कार एवं प्रतीकात्मक दण्ड नामक आयामों का बालकों की आत्म अवधारणा से सार्थक सहसंबंध पाया गया।

2.9 उभरते बिन्दु

सम्बन्धित साहित्य के पुनर्निरीक्षण से निम्न महत्त्वपूर्ण बिन्दु स्पष्ट होते हैं :

- सामान्य बालकों की तुलना में श्रवण–निर्योग्य बालकों के समायोजन स्तर एवं आत्म प्रत्यय निम्न पाये गये।

- मूक–बधिर बालकों के पारिवारिक वातावरण का उनके समायोजन स्तर से सार्थक सम्बन्ध पाया गया।
- किशोरों एवं किशोरियों के प्रति माता–पिता के प्रत्यक्षीकरण में कोई अन्तर नहीं देखा गया।
- परिवार के अनुकूल एवं प्रतिकूल वातावरण का किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य एवं चिन्ता स्तर दोनों पर सार्थक अन्तर देखा गया।
- अतिरक्षणपरक अभिभावकीय संबंधों की तुलना में स्नेहपूर्ण संबंधों में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गयी।
- किशोरों के पारिवारिक वातावरण एवं अभिभावकीय संबंधों का उनके आत्म प्रत्यय से सार्थक संबंध पाया गया।
- आक्रामकता स्तर पर जन्मक्रम, लिंगभेद एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर का सार्थक अन्तर देखा गया।
- किशोरों में शारीरिक व किशोरियों में वाचिक आक्रामकता अधिक पायी गयी।

2.10 निष्कर्ष

उपर्युक्त बिन्दुओं के आधार पर निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि, मूक–बधिर बालकों के सामान्य बालकों की तुलना में समायोजन स्तर एवं आत्म प्रत्यय निम्न होते हैं, जबकि आक्रामकता स्तर उच्च होता है। पारिवारिक वातावरण एवं अभिभावकीय संबंधों का किशोरों के समायोजन, आत्म प्रत्यय एवं आक्रामकता से सार्थक सहसंबंध होता है।

तृतीय अध्याय

अध्ययन योजना एवं कार्यविधि

‘‘प्रविधियाँ तथा उपकरण एक सामाजिक वैज्ञानिक के लिए, वे ग्रंथ व सुव्यवस्थित तरीके हैं, जिन्हें वह अपने अध्ययन विषयों से संबंधित विश्वसनीय तथ्यों को प्राप्त करने के लिए उपयोग में लाता है।

– पी० मोज़र

अध्ययन योजना एवं कार्यविधि

3.1 प्रस्तावना

वैज्ञानिक शोध के अंतर्गत समस्या के अध्ययन के लिए शोधकर्ता को वैज्ञानिक प्रक्रिया का चयन करना पड़ता है। किसी भी अनुसंधान की सफलता उसकी विधि एवं प्रक्रिया पर आधारित होती है। अनुसंधानात्मक साहित्य में सामान्यतः विधि एवं प्रक्रिया शब्द का प्रयोग एक ही अर्थ में किया जाता है, क्योंकि साधारणतः दोनों ही शब्द अनुसंधानात्मक अध्ययन में प्रयुक्त प्रविधियों एवं उपकरण के सूचक समझे जाते हैं। अनुसंधान प्रक्रिया के अंतर्गत स्थितियों का चयन करते समय कतिपय विशिष्ट बातों को ध्यान में रखना आवश्यक होता है। जैसे – उचित न्यादर्श का चयन, उपयुक्त उपकरणों का चुनाव, अनुकूल अध्ययन विधि एवं सही सांख्यिकी तकनीकी का निर्धारण। इन्हीं पर अनुसंधान कार्य की सार्थकता निर्भर करती है।

3.2 अनुसंधान विधि

अनुसंधान विधि और अनुसंधान तकनीकियाँ वे होती हैं, जो अनुसंधान संचालन में प्रयुक्त होती हैं। तकनीकियाँ वे सब उपकरण हैं, जो दत्त संकलन में प्रयुक्त होते हैं। विधि, अनुसंधान तकनीकियों को चुनने एवं निर्माण करने का व्यवहार है।

प्रत्येक शोधकर्ता वैज्ञानिक एवं ठोस परिणामों की प्राप्ति हेतु कुछ विधियों का चयन करता है। प्रयोग में ली जाने वाली शोध विधि का चयन, समस्या की प्रकृति तथा उसके समाधान हेतु आवश्यक तत्वों पर निर्भर करता है। शोध विधि सदैव शोध विषय के अनुकूल होनी चाहिए। जब तक विधि निश्चित नहीं की जाती, तब तक उद्देश्य पूर्ण नहीं होता और न ही कोई शोधकार्य संपन्न किया जा सकता है। शोधकार्य की स्पष्ट एवं सूक्ष्म प्रविधि की कसौटी यह है कि, उसकी विधि का वर्णन

पढ़कर अन्य शोधकर्ता उस शोध को पुनः क्रियान्वित कर सकें। यदि अनुसंधानकर्ता अपनी विधि की व्याख्या स्पष्ट रूप से नहीं कर सकता, तो परिणामों के अनिश्चित होने की संभावना अधिक रहती है।

3.3 प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त शोध विधि

प्रस्तुत शोधकार्य में 'मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकीय संबंधों का उनके समायोजन, आक्रामकता एवं आत्म–अवधारणा पर प्रभाव का अध्ययन' करने के लिए कक्षा–कक्ष वातावरण में विभिन्न उपकरणों को प्रयुक्त कर वांछनीय आँकड़ों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शोधकत्री ने अपनी समस्या को दृष्टिगत रखते हुए संदर्भ साहित्य एवं शोध विधियों के अध्ययन द्वारा सर्वेक्षण विधि को ही अपने शोध हेतु उपयुक्त पाया।

सर्वेक्षण विधि – सर्वेक्षण शब्द अंग्रेजी शब्द 'सर्वे' का हिन्दी रूपांतरण हैं, जिसका शाब्दिक अर्थ किसी घटना का सिंहावलोकन करने से है। अतः सर्वेक्षण से तात्पर्य ऐसी विधि से है, जिसमें शोधकर्ता कार्यस्थल पर स्वयं जाकर घटना या परिस्थिति से संबंधित सूचनाओं का संकलन करता है। सर्वेक्षण विधि प्रत्यक्ष ज्ञान की प्राप्ति का महत्वपूर्ण साधन है। सर्वेक्षण विधि का प्रयोग मुख्य रूप से सामाजिक विज्ञानों में वर्तमान की किसी स्थिति, घटना या वैचारिक चिन्तन आदि से संबंधित समस्या के अध्ययन के लिए किया जाता है। इसलिए सर्वेक्षण विधि को सामाजिक अनुसंधान की विधि माना जाता है। सर्वेक्षण के द्वारा विद्यमान परिस्थितियों, अभ्यास एवं प्रक्रियाओं, अनुभवों अथवा विकसित हो रही नवीन दशाओं आदि का आकलन होता है। इसकी कार्यप्रणाली में प्रदत्तों के संकलन एवं सारणीयन के अतिरिक्त व्याख्या, तुलना, वर्गीकरण, मापन, मूल्यांकन एवं सामान्यीकरण भी होता है।

एब्रक्स के अनुसार – ''सामाजिक सर्वेक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा समाज के संगठन तथा क्रियाओं के सामाजिक पक्ष के संबंध में संख्यात्मक तथ्य संकलित किए जाते हैं।''

– *Practical Statistics : S.P.Gupta, 2005*

समाजशास्त्रीय शब्दकोश के अनुसार – ''एक समुदाय के संपूर्ण जीवन या उसके जीवन के किसी एक पक्ष के संबंध में व्यवस्थित और पूर्ण तथ्य संकलन और लक्ष्य विश्लेषण का नाम ही सर्वेक्षण है।'' – *अनुसंधान विधियाँ : एच. कपिल, 1998–99*

सर्वेक्षण विधि की विशेषताएँ – उपुर्यक्त परिभाषाओं के आधार पर सर्वेक्षण विधि की निम्न विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं –

1. सर्वेक्षण विधि तत्कालीन परिस्थितियों का निरीक्षण व विवेचना करती है।
2. सर्वेक्षण विधि वास्तविक सामाजिक जीवन का प्रत्यक्ष अध्ययन करती है।
3. यह अध्ययन संख्यात्मक एवं गुणात्मक दोनों रूप में संभव है।
4. इस विधि में संकलित तथ्यों को आगे किसी सामाजिक शोध का आधार बनाया जा सकता है।
5. सर्वेक्षण विधि द्वारा अध्ययन, प्रयोगशाला आधारित अध्ययनों की अपेक्षा अधिक मितव्ययी रहता है, क्योंकि सर्वेक्षण द्वारा सूचनाएँ अपेक्षाकृत कम श्रम एवं कम समय में उपलब्ध हो जाती हैं।
6. सर्वेक्षण अध्ययनों में जटिलता के साथ ही लोच का अद्भुत गुण होता है।
7. सर्वेक्षण अध्ययनों के स्पष्ट तथा निश्चित उद्देश्य होते हैं। यही उद्देश्य अध्ययन का क्षेत्र व मार्ग तय करते हैं।
8. इस प्रकार के अध्ययनों द्वारा कारण एवं प्रभावों के मध्य सहज संबंध स्थापित किए जा सकते हैं।
9. सर्वेक्षण अध्ययनों का क्षेत्र बड़ा व्यापक है। ये वैयक्तिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय स्तर की वर्तमान परिस्थितियों एवं समस्याओं से संबंधित होने के कारण व्यवहारिक जीवन के लिए अपेक्षाकृत अधिक उपयोगी होते हैं।
10. सर्वेक्षण अध्ययन वर्तमान के साथ–साथ भविष्य की आवश्यकताओं की ओर प्रभावी रूप से ध्यान आकर्षित करने की क्षमता रखते हैं।

सर्वेक्षण विधि के चयन का औचित्य – प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों से संबंधित है तथा सामाजिक अनुसंधान की प्रणालियों में सर्वेक्षण विधि का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। साथ ही प्रस्तुत अध्ययन में एक बड़े न्यादर्श से तथ्यों एवं प्रदत्तों को संकलित कर विश्लेषण करना है। अतः इस शोध अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन सभी दृष्टियों से उपयोगी है।

3.4 जनसंख्या एवं न्यादर्श

अनुसंधान कार्य को संपन्न करने के लिए व्यापक समष्टि में से एक ऐसे अंश का चयन करना पड़ता है, जो समष्टि का सही व उचित प्रतिनिधित्व कर सके। यही अंश न्यादर्श कहलाता है।

गुड एवं हाट के अनुसार – ''न्यादर्श के द्वारा प्रत्येक दृष्टिकोण से विश्लेषण करने तथा समस्याओं का गहराई तक अध्ययन करने में सुविधा हो जाती है।''

– शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी : सिंह, 2008

आधुनिक समय में समस्याओं का क्षेत्र इतना अधिक व्यापक हो गया है कि, प्रत्येक व्यक्ति से व्यक्तिगत संपर्क करना असंभव हो गया है। किसी भी मनोवैज्ञानिक तथ्य का मानवीय व्यवहार के सत्यापन के लिए पूर्णतया या समग्र रूप से अध्ययन करना असंभव नहीं, तो दुष्कर अवश्य ही होता है। अतः अधिकांश शोध अध्ययनों में न्यादर्श द्वारा ही कार्य संपन्न कराया जाता है।

न्यादर्श किसी भी अनुसंधान कार्य की आधारशिला होती है। यह आधारशिला जितनी सुदृढ़ होगी, शोध के परिणाम उतने ही विश्वसनीय एवं परिशुद्ध होंगे। न्यादर्श के आधार पर ही पूरी जनसंख्या के विषय में कुछ निष्कर्ष निकाले जाते हैं। न्यादर्श से निकाले गए निष्कर्ष, संपूर्ण जनसंख्या पर भी लागू होते हैं। हालांकि न्यादर्श तथा संपूर्ण जनसंख्या के निष्कर्षों में थोड़ी विभिन्नता हो सकती है, पर वह एक निहित सीमा तक नगण्य मानी जाती है।

3.5 प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श चयन

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकत्री द्वारा न्यादर्श का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया है। इसकी प्रक्रिया के अंतर्गत सर्वप्रथम शोधकत्री द्वारा राजस्थान राज्य के विभिन्न शहरों के मूक–बधिर विद्यालयों की पर्चियाँ तैयार की गईं, तत्पश्चात् दैव निदर्शन (लॉटरी) विधि की सहायता से न्यादर्श का चयन किया गया।

न्यादर्श के रूप में कोटा शहर के झालावाड़ रोड़ पर स्थित, बधिरांध विद्यालय 'बाधित बाल विकास केन्द्र' के 100 मूक बधिर किशोरों एवं किशोरियों को, उदयपुर शहर के बधिर उच्च माध्यमिक विद्यालय (विकलांग कल्याण समिति) के 100 मूक बधिर किशोरों एवं किशोरियों को तथा जयपुर शहर के 'सेठ आनन्दीलाल पोद्दार मूक–बधिरांध संस्थान' के 100 मूक बधिर किशोरों एवं किशोरियों को चयनित किया गया।

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु कोटा, उदयपुर एवं जयपुर तीन शहरों के मूक–बधिर संस्थानों के प्राचार्य से संपर्क कर प्रदत्त संकलन की अनुमति प्राप्त की गई। तत्पश्चात् न्यादर्श के रूप में चयनित मूक बधिर विद्यार्थियों पर चयनित उपकरणों को प्रशासित किया गया।

तालिका 3.1

प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श चयन

शहर	कोटा		उदयपुर		जयपुर		कुल	
लिंग	किशोर	किशोरियाँ	किशोर	थ्कशोरियाँ	किशोर	किशोरियाँ	किशोर	किशोरियाँ
संख्या	50	50	50	50	50	50	150	150
कुल न्यादर्श	100		100		100		300	

3.6 उपकरण

शोध अध्ययन हेतु नवीन एवं अज्ञात तथ्यों का संकलन करने के लिए कई साधनों का प्रयोग किया जाता है। ये सहायक साधन ही उपकरण कहलाते हैं, जिनसे शोधकर्ता वैज्ञानिक निष्कर्षों के आधार पर अपने निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति करता है। ये उपकरण मानकीकृत अथवा अमानकीकृत हो सकते हैं।

3.7 प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य में निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया :

I. Parent–Child Relationship Scale (मानकीकृत उपकरण) : डॉ. नलिनी राव

II. Bell's Adjustment Inventory (मानकीकृत उपकरण) : डॉ. आर.के. ओझा

III. Self-Concept Questionnaire (मानकीकृत उपकरण) : डॉ. राजकुमार सारस्वत

IV. आक्रामकता – स्वनिर्मित उपकरण

I. परीक्षण परिचय

Parent – Child Relationship Scale (PCRS) – डॉ. नलिनी राव

इस मानकीकृत परीक्षण की रचना बैंगलूर विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग की सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ. नलिनी राव द्वारा की गई। परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक .77 से .87 के मध्य है।

प्रस्तुत परीक्षण के अन्तर्गत दस आयामों के कुल 100 प्रश्न दिए गए हैं, जिसमें प्रत्येक आयाम के 10 प्रश्न सम्मिलित हैं। विधार्थियों को प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अपने माता एवं पिता, दोनों के व्यवहार के संबंध में देना पड़ता है ।

प्रस्तुत परीक्षण अभिभावक–बालक संबंधों का अध्ययन दस विभिन्न आयामों के मापन द्वारा करता है। ये आयाम निम्नलिखित हैं :

1. Protecting (संरक्षणता) – माता पिता की बालकों के प्रति रक्षात्मक अभिवृति।

2. Symbolic Punishment (प्रतीकात्मक दण्ड) – माता पिता द्वारा बालकों के प्रति अस्थाई क्रोध का प्रतीकात्मक रूप में प्रदर्शन, जैसे – डाँटना।

3. Rejecting (अस्वीकृति) – माता–पिता द्वारा बालकों के प्रति अरूचि एवं अस्वीकृति।

4. Object Punishment (वस्तुपरक दण्ड) – माता–पिता द्वारा बालकों के प्रति क्रोध का शारीरिक दण्ड के रूप में प्रदर्शन, जैसे – मारना।

5. Demanding (माँग करना) – माता–पिता द्वारा बालकों से आदेश पालन की माँग एवं उनके प्रति अधिकारपूर्ण व्यवहार।

6. Indifferent (उदासीन) – माता–पिता का बालकों के प्रति उदासीन व्यवहार।

7. Symbolic Reward (प्रतीकात्मक पुरस्कार) – बालकों को दिया गया संवेगात्मक एवं मनोवैज्ञानिक प्रोत्साहन, जैसे – शारीरिक स्पर्श द्वारा प्रदर्शित अपनापन।

8. Loving (स्नेहपूर्ण /प्रेमपूर्ण) – माता–पिता का बालकों के प्रति प्यार, स्नेह, लगाव एवं अपनेपन का प्रदर्शन।

9. Object Reward (वस्तुपरक पुरस्कार) – माता–पिता द्वारा बालकों को किसी वस्तु के रूप में पुरस्कार द्वारा प्रोत्साहन।

10. Neglecting (उपेक्षा) – माता पिता द्वारा बालकों के प्रति तिरस्कार, उपेक्षा, लापरवाही एवं अवेहलनापूर्ण व्यवहार।

परीक्षण का प्रशासन – इस परीक्षण का प्रशासन संबंधित निर्देश पुस्तिका (Manual) में दिए गए निर्देशों को ध्यान में रखकर, मूक–बधिर विद्यार्थियों पर किया गया । चूँकि मूक–बधिर विद्यार्थी बोल व सुन नहीं सकते, अतः उन्हें परीक्षण संबधी निर्देश देने के लिए मूक–बधिर विद्यालय से ही शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की सहायता ली गई । जिन्होंने संकेत भाषा के माध्यम से विद्यार्थियों को निर्देशित किया।

1. सर्वप्रथम प्रत्येक परीक्षार्थी के सामने एक–एक परीक्षण प्रपत्र रख दिया गया तथा उन्हे प्रपत्र पर यथास्थान नाम, आयु आदि वांछित सूचनाएँ लिखने के लिए कहा गया।

2. तत्पश्चात् उन्हे निर्देश दिया गया कि, परीक्षण में दिए गए प्रत्येक कथन को ध्यान से पढ़िए तथा सोचिए कि वह कथन आपके प्रति आपके माता–पिता के व्यवहार से किस प्रकार संबंधित है।

3. उनके उत्तर को उनके माताजी और पिताजी दोनों के लिए पृथक वर्ग में चिन्हित करने कि लिए कहा गया।

4. उन्हें समझाया गया कि, कथन में लिखी गई बात यदि आपको हर बार दिखाई दे, तो वर्ग में 5 अंक भरें। बहुत बार दिखाई दे, तो 4 अंक, कभी–कभी में 3 अंक, कम दिखाई दे, तो 2 अंक तथा बहुत कम दिखाई देने पर 1 अंक भरें।

5. परीक्षण प्रपत्र में दिए गए उदाहरण को ध्यानपूर्वक पढ़ने के लिए कहा गया।

6. समय की पाबन्दी नहीं है। अतः ध्यानपूर्वक आराम से उत्तर देने के लिए कहा गया।

अंकन तथा मूल्यांकन – प्रस्तुत परीक्षण में अंकन कार्य, विद्यार्थियों द्वारा प्रत्येक कथन के सन्दर्भ में, उनके माता एंव पिता को दिए गए अंक (5, 4, 3, 2, 1) के आधार पर पृथक–पृथक किया गया । प्रत्येक पृष्ठ में माता–पिता के प्राप्तांकों को जोड़ने के पश्चात कुल प्राप्तांकों के आधार पर Z score ज्ञात किए गए । तत्पश्चात Z score की विस्तार तालिका से बालक एवं अभिभावक संबंधों के स्तर निर्धारित कर लिए गए । अभिभावक–बालक संबंधों का स्तर विभिन्न आयामों पर पृथक–पृथक भी ज्ञात किया गया तथा कुल प्राप्तांको के आधार पर पिता एवं माता के साथ बालक के संबंध पृथक–पृथक भी ज्ञात किए गए ।

तालिका 3.2

Z score के आधार पर अभिभावक–बालक संबंध स्तर की व्याख्या

Sr No.	Range of z score	Grade	Level of parent-child relationship
1.	+2.01 & above	A	Extremely cordial relationship (अत्यधिक मैत्रीपूर्ण संबध)
2.	+1.26 to +2.00	B	Very Cordial (अधिक मैत्रीपूर्ण संबध)
3.	+0.51 to + 1.25	C	Above Average (औसत से अधिक अच्छे संबंध)
4.	-0.50 to +0.50	D	Moderate (सामान्य व संयमित संबध)
5.	-0.50 to -1.25	E	Below Average (औसत से कम अच्छे संबध)
6.	-1.26 to -2.00	F	Unfavourable (प्रतिकूल संबध)
7.	-2.01 & below	C	Extremely unfavourable (अत्यधिक प्रतिकूल संबध)

II. परीक्षण परिचय

Bell's Adjustment Inventory **–डॉ. आर.के. ओझा**

इस मानकीकृत परीक्षण की रचना के. जी. के. महाविद्यालय, मुरादाबाद (उ.प्र) के सेवानिवृत्त मनोविज्ञान विभागाध्यक्ष, डॉ. ओझा द्वारा 1968 में की गई । इस प्रश्नावली का निर्माण डॉ. ओझा द्वारा Bell's Adjustment Inventory (1934) के आधार पर किया गया ।

प्रस्तुत परीक्षण, विद्यार्थियों के समायोजन का मापन चार पृथक–पृथक क्षेत्रों के अंतर्गत करता है । ये क्षेत्र हैं – गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन। परीक्षण में प्रत्येक क्षेत्र से संबधित 35 प्रश्न दिए गए हैं, जिनके उत्तर विद्यार्थियो को ''हाँ'' अथवा ''नहीं'' में '' ✔ ''का चिन्ह लगाकर देना होता है। इस प्रकार समायोजन परीक्षण में कुल 140 प्रश्न दिये गए हैं। परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक परीक्षण पुनः परीक्षण विधि द्वारा 0.89 से 0.92 के मध्य है। (गृह–0.91, स्वास्थ्य–0.90, सामाजिक–0.89, संवेगात्मक–0.92)

परीक्षण का प्रशासन – प्रस्तुत परीक्षण से संबंधित निर्देश पुस्तिका (manual) में दिए गए निर्देशों को ध्यान में रखकर परीक्षण का प्रशासन, मूक –बधिर विद्यार्थियों पर किया गया। चूँकि मूक बधिर बालक बोल व सुन नहीं सकते, अतः उन्हें परीक्षण संबंधी निर्देश देने के लिए मूक–बधिर विद्यालय के ही शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की सहायता ली गई, जिन्होने संकेत भाषा के माध्यम से विद्यार्थियों को निर्देशित किया।

1. सर्वप्रथम प्रत्येक परीक्षार्थी के सामने एक–एक परीक्षण प्रपत्र रख दिया गया तथा उन्हे प्रपत्र पर यथास्थान नाम, आयु आदि वांछित सूचनाएँ भरने के लिए कहा गया।
2. तत्पश्चात् उन्हे प्रपत्र पर लिखे निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ने के लिए कहा गया।
3. निर्देश पढने के बाद पृष्ठ पलटकर प्रत्येक पृष्ठ के सभी कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ने एवं कथन से सहमत होने पर 'हाँ' वाले खाने में तथा असहमत होने पर 'नहीं' वाले खाने में '' ✔ '' का चिन्ह लगाने कहा गया।
4. समय का कोई प्रतिबंध नही है, फिर भी सभी कथनों के उत्तर यथासंभव शीघ्र देने के लिए कहा गया।

अंकन तथा मूल्यांकन – प्रस्तुत परीक्षण की अंकन प्रणाली अत्यंत सरल है । परीक्षार्थी द्वारा दिए गए 'हाँ' प्रत्युतर को 1 अंक व 'नहीं' प्रत्युतर को 0 अंक प्रदान किए गए। तत्पश्चात् प्रत्येक समायोजन क्षेत्र में कुल 'हाँ' प्रत्युत्तरों के अंक जोड लिए गए तथा कुल प्राप्तांकों के आधार पर तालिका की सहायता से परीक्षार्थी के प्रत्येक समायोजन क्षेत्र का पृथक–पृथक समायोजन स्तर ज्ञात कर लिया गया ।

नोट – यह परीक्षण नकारात्मक अंकन प्रणाली पर आधारित है। अर्थात् परीक्षार्थी द्वारा दिया गया 'हाँ' प्रत्युत्तर उसकी समायोजन समस्या की ओर संकेत करता है। अतः परीक्षार्थी द्वारा प्राप्त किए गए उच्च अंक, उनके समायोजन स्तर को निम्न बनाता है।

तालिका 3.3

प्राप्तांकों के आधार पर समायोजन स्तर की व्याख्या

व्याख्या (Interpretation)	प्राप्तांको का विस्तार (Range of Scores)			
	गृह (Home)	स्वास्थ्य (Health)	सामाजिक (Social)	संवेगात्मक (Emotional)
Excellent	Below 4	Below 2	Below 6	Below 1
Good	5-7	3-4	7-9	2-4
Average	8-14	5-9	10-16	5-11
Unsatisfied	15-17	10-11	17-19	12-14
Very Unsatisfied	18 & Above	12 & Above	20 & Above	15 & Above

III. परीक्षण परिचय

Self Concept Questionnaire (SCQ) **-डॉ. राजकुमार सारस्वत**

इस मानकीकृत परीक्षण की रचना NCERT के शिक्षा एवं मनोविज्ञान विभाग के रीडर डॉ. राजकुमार सारस्वत द्वारा की गई।

प्रस्तुत परीक्षण परीक्षार्थियों की आत्म–अवधारणा का मापन छः पृथक्–पृथक् आयामों पर करता है। ये आयाम हैं :

1. शारीरिक – परीक्षार्थी की स्वयं की शारीरिक बनावट, आकर्षण, सुंदरता आदि के संबंध में धारणा।
2. सामाजिक – परीक्षार्थी की स्वयं की सामाजिक अंतःक्रियाओं के संबंध में धारणा।
3. संवेगात्मक – परीक्षार्थी की स्वयं की भावनाओं और संवेगों के संबंध में धारणा।
4. शैक्षिक – परीक्षार्थी की अपनी शिक्षा, विद्यालय, शिक्षकों एवं अन्य पाठ्यसहगामी क्रियाओं के संबंध में धारणा।

5. नैतिक – परीक्षार्थी की स्वयं के नैतिक आचरण, मूल्यों एवं आदर्शों के संबंध में धारणा।

6. बौद्धिक – परीक्षार्थी की अपनी बुद्धि, समस्या समाधान व निर्णय लेने की योग्यताओं के संबंध में धारणा।

उपर्युक्त आयामों का पृथक्–पृथक् मापन करने के साथ–साथ परीक्षार्थी की कुल आत्म–अवधारणा का मापन भी किया जाता है। प्रस्तुत परीक्षण में कुल 48 पद हैं। प्रत्येक आयाम से संबंधित 8 पद हैं। प्रत्येक प्रश्न या पद के समक्ष पाँच विकल्प दिए गए हैं। परीक्षार्थी को उनमें से किसी एक विकल्प को अपने उत्तर के रूप में चुनना होता है। ये पाँच बिन्दु मापनी पर आधारित परीक्षण है। परीक्षण की विश्वसनीयता .77 से .88 के मध्य है।

परीक्षण का प्रशासन – प्रस्तुत परीक्षण से संबंधित निर्देश पुस्तिका (Manual) में दिए गए निर्देशों को ध्यान में रखकर परीक्षण का प्रशासन मूक–बधिर विद्यार्थियों पर किया गया। चूँकि मूक–बधिर बालक बोल व सुन नहीं सकते, अतः उन्हें परीक्षण संबंधी निर्देश देने के लिए मूक–बधिर विद्यालय के ही शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की सहायता ली गई। जिन्होंने संकेत भाषा के माध्यम से विद्यार्थियों को निर्देशित किया।

1. सर्वप्रथम प्रत्येक परीक्षार्थी के सामने एक–एक परीक्षण प्रपत्र रख दिया गया तथा उन्हें प्रपत्र पर यथास्थान नाम, आयु, लिंग आदि वांछित सूचनाएँ भरने के लिए कहा गया।

2. तत्पश्चात् उन्हें प्रपत्र पर लिखे निर्देशों एवं उदाहरण को ध्यानपूर्वक पढ़ने के लिए कहा गया।

3. निर्देश पढ़ने के बाद प्रत्येक पृष्ठ के सभी प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़ने एवं उनके उत्तर के रूप में सामने दिए गए विकल्पों में से, जो विकल्प सबसे उपयुक्त लगता है, उसके सामने वाले खाने में '✓' का चिन्ह लगाने के लिये कहा गया।

4. एक प्रश्न के लिए एक से अधिक विकल्प चुनने एवं किसी भी प्रश्न को छोड़ देने के लिए मना किया गया।

5. समय का कोई प्रतिबंध नहीं है, फिर भी सभी प्रश्नों के उत्तर लगभग 20–30 मिनट में करने के लिए प्रेरित किया गया।

अंकन तथा मूल्यांकन – प्रस्तुत परीक्षण की अंकन प्रणाली के अंतर्गत परीक्षार्थी द्वारा दिए गए उत्तरों को उनके द्वारा चुने गए विकल्प के अनुसार निम्न रूप में अंक प्रदान किए गए चाहे वह प्रश्न सकारात्मक था अथवा नकारात्मक।

तालिका 3.4

आत्म–अवधारणा मापनी की अंकन प्रणाली

विकल्प संख्या	1	2	3	4	5
अंक	5	4	3	2	1

तत्पश्चात् आत्म अवधारणा के प्रत्येक आयाम से संबंधित पदों के प्राप्तांकों को जोड़कर कुल प्राप्तांक ज्ञात किए गए। इस प्रकार सभी छः आयामों के पृथक्–पृथक् प्राप्तांकों के आधार पर उस विशिष्ट आयाम के संबंध में परीक्षार्थी की आत्म–अवधारणा ज्ञात की गई। तत्पश्चात् सभी आयामों के प्राप्तांकों का कुल जोड़ करके परीक्षार्थी की समन्वित आत्म–अवधारणा का मापन किया गया।

तालिका 3.5

प्राप्तांकों के आधार पर आत्म–अवधारणा की व्याख्या

आत्म–अवधारणा आयाम के प्राप्तांक	आत्म–अवधारणा की व्याख्या
33 से 40	उच्च आत्म अवधारणा
25 से 32	औसत से ऊपर आत्म–अवधारणा
17 से 24	औसत आत्म–अवधारणा
9 से 16	औसत से नीचे आत्म–अवधारणा
8 तक	निम्न आत्म–अवधारणा

तालिका 3.6

सभी आयामों के कुल प्राप्तांकों के आधार पर आत्म–अवधारणा की समन्वित व्याख्या

कुल प्राप्तांक	आत्म–अवधारणा की व्याख्या
193 से 240	उच्च आत्म अवधारणा
145 से 192	औसत से ऊपर आत्म–अवधारणा
97 से 144	औसत आत्म–अवधारणा
49 से 96	औसत से नीचे आत्म–अवधारणा
1 से 48	निम्न आत्म–अवधारणा

IV. परीक्षण परिचय

आक्रामकता मापनी – **स्व–निर्मित**

प्रस्तुत परीक्षण शोधकत्री द्वारा स्व–निर्मित परीक्षण है। जिसकी रचना शोधकत्री ने मूक–बधिर किशोर विद्यार्थियों की आक्रामकता मापने हेतु की है। इस प्रश्नावली का निर्माण उपलब्ध संबंधित साहित्य एवं पूर्व निर्मित संबंधित उपकरणों की सहायता के आधार पर किया गया।

प्रस्तुत आक्रामकता मापनी में कुल 50 पद या कथन हैं, जो मूक–बधिर किशोर विद्यार्थियों के क्रोध, तनाव, निराशा, लड़ाई, चिड़चिड़ाहट एवं आक्रामक व्यवहार को उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों से संबंधित हैं। इन 50 कथनों के संबंध में परीक्षार्थी को अपनी सहमति अथवा असहमति पाँच बिन्दु मापनी पर दर्शानी होती है। ये पाँच बिन्दु क्रमशः (i) पूर्णतः सहमत, (ii) सहमत, (iii) कम सहमत, (iv) असहमत एवं (v) पूर्णतः असहमत हैं। परीक्षार्थी को इन पाँचों विकल्पों में से अपने उत्तर के रूप में किसी एक विकल्प को '✔' के निशान द्वारा चुनना होता है।

परीक्षण की विश्वसनीयता – प्रस्तुत परीक्षण की विश्वसनीयता ज्ञात करने हेतु शोधकत्री द्वारा अर्द्ध विच्छेद विधि का प्रयोग किया गया। इसके अंतर्गत परीक्षण के समस्त 50 पदों को सम संख्या (2, 4, 6...) तथा विषम संख्या (1, 3, 5...) के आधार

पर 'अ' एवं 'ब' दो भागों में विच्छेदित कर दिया गया। दोनों भागों में प्रश्नों की कुल संख्या 25–25 रखी गई। तत्पश्चात् परीक्षण के दोनों भागों को 20 किशोर मूक–बधिर विद्यार्थियों (बाधित बाल विकास केन्द्र : बधिरांध विद्यालय, कोटा, राजस्थान) पर प्रशासित कर दोनों भागों के अलग–अलग प्राप्तांकों के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया। सहसंबंध ज्ञात करने के पश्चात् पूर्ण परीक्षण की विश्वसनीयता की गणना की गई।

इस प्रकार प्रस्तुत परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक अर्द्ध विच्छेद द्वारा 0.83 निकला, जो परीक्षण की उच्च विश्वसनीयता का द्योतक है।

परीक्षण का प्रशासन – प्रस्तुत परीक्षण का प्रशासन मूक–बधिर किशोर विद्यार्थियों पर किया गया। चूँकि मूक–बधिर बालक बोलने व सुनने में असमर्थ होते हैं, अतः उन्हें परीक्षण संबंधी निर्देश देने के लिए मूक–बधिर विद्यालय के ही शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की सहायता ली गई, जिन्होंने हाव–भााव एवं संकेत भाषा के माध्यम से विद्यार्थियों को निर्देशित किया।

1. सर्वप्रथम प्रत्येक परीक्षार्थी के सामने एक–एक परीक्षण प्रपत्र रख दिया गया तथा उन्हें प्रपत्र पर यथास्थान नाम, आयु, कक्षा आदि वांछित सूचनाएँ भरने के लिए कहा गया।
2. तत्पश्चात् उन्हें प्रपत्र पर लिखे निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ने एवं उनके उत्तर के रूप में सामने दिए गए सही विकल्प का चुनने के लिए कहा गया।
3. कथन में कही गई बात के संबंध में परीक्षार्थी को अपने स्वयं के संबंध में जो विकल्प सबसे उपयुक्त लगता है, उसके सामने वाले खाने में '✔' का चिन्ह लगाने के लिए कहा गया।
4. एक कथन के लिए एक से अधिक विकल्प चुनने एवं किसी भी कथन को छोड़ देने के लिए मना किया गया।
5. समय का कोई प्रतिबंध नही है, फिर भी सभी कथनों के उत्तर यथासंभव शीघ्र देने के लिए कहा गया।

अंकन तथा मूल्यांकन – प्रस्तुत परीक्षण में अंकन व्यवस्था पाँच बिन्दु मापनी पर की गई है, जिसमें सकारात्मक विकल्प से नकारात्मक विकल्प तक क्रमशः 4, 3, 2, 1 एवं 0 अंक प्रदान किया गया।

तालिका 3.7

आक्रामकता मापनी की अंकन प्रणाली

विकल्प	पूर्णतः सहमत	सहमत	कम सहमत	असहमत	पूर्णतः असहमत
अंक	4	3	2	1	0

तत्पश्चात् आक्रामकता मापनी के समस्त 50 पदों के अंकों को जोड़कर कुल प्राप्तांक ज्ञात कर लिए गए। आक्रामकता की व्याख्या कुल प्राप्तांकों के शतांक के आधार पर करने हेतु निम्न तालिका का प्रयोग किया। ये तालिका विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर एवं आयु स्तर पर आक्रामकता के शतांक को व्यक्त करती है :

तालिका 3.8

Gradewise Percentile Norms

High School		Intermediate		Graduate		Post Graduate		Percentile
M	F	M	F	M	F	M	F	
183	185	179	172	184	169	172	161	99
172	173	161	163	173	168	165	159	90
165	168	160	159	171	160	160	151	80
156	141	159	139	156	149	151	131	70
137	116	133	123	131	129	133	125	60
128	105	131	111	125	112	125	115	50
87	80	89	95	111	99	117	99	40
80	69	83	85	101	88	104	83	30
69	43	65	63	72	69	85	76	20
64	36	48	40	53	48	65	51	10
40	23	43	27	44	39	49	32	5

तालिका 3.9

Age wise Percentile Norms

14 yrs.		15 yrs.		16 yrs.		17 yrs.		18 yrs.		19 yrs.		20-22 yrs.		Adult		Percentile
M	F	M	F	M	F	M	F	M	F	M	F	M	F	M	F	
159	139	172	160	173	157	176	173	179	169	187	168	179	164	188	191	99
139	133	147	136	151	140	159	149	161	159	160	144	145	159	172	177	90
119	112	131	128	135	131	135	132	131	129	143	132	136	156	163	165	80
105	105	124	120	129	125	128	121	119	125	140	135	133	131	153	159	70
105	104	116	113	120	116	120	119	103	120	119	121	133	129	145	156	60
103	101	105	101	112	101	109	100	92	103	96	93	119	103	137	144	50
99	96	99	97	104	99	105	97	83	91	87	85	103	93	131	129	40
93	91	92	89	96	85	99	92	61	80	67	73	71	67	125	119	30
80	72	83	76	77	53	79	67	59	73	64	53	65	57	109	96	20
53	52	69	65	60	56	53	59	44	56	48	41	51	41	87	80	10
49	48	48	36	40	28	43	32	36	48	39	41	49	41	60	68	5

तालिका द्वारा शतांक ज्ञात करने के पश्चात् उन्हें वर्ग विस्तार में वर्गीकृत कर आक्रामकता श्रेणी की व्याख्या निम्न तालिका के आधार पर की गई –

तालिका 3.10

प्राप्तांकों के आधार पर आक्रामकता श्रेणी की व्याख्या

प्राप्तांकों का वर्ग विस्तार	आक्रामकता की श्रेणी	आक्रामकता शतांक
161 से ऊपर	अत्यधिक उच्च (The Saturated)	80% से ऊपर
121 से 160	उच्च (The High)	61% से 80%
81 से 120	औसत (Average)	41% से 60%
61 से 80	निम्न (The Low)	31% से 40%
60 से नीचे	अत्यधिक निम्न (The Clear)	30% से नीचे

3.8 विश्लेषण प्रक्रिया (सांख्यिकी)

अनुसंधान के अंतर्गत प्राप्त किए आँकड़ों का विश्लेषण करना व उसके आधार पर निर्णय लेना सांख्यिकी का ही प्रयोग है। सांख्यिकी का प्रयोग किसी भी विषय के माप को निश्चयात्मक रूप प्रदान कर वैज्ञानिक ढंग से संतोषजनक परिणाम प्रदान करता है। सांख्यिकी के आधार पर किसी भी क्षेत्र के, किसी विषय से संबंधित सटीक जानकारी को प्राप्त करके उसमें वृद्धि की संभावनाओं व आवश्यक मात्रा में साधनों की उपलब्धता को सुनिश्चित किया जा सकता है।

पी.एच. कारमेल के अनुसार – ''सांख्यिकी का विषय उन तथ्यों के संकलन, प्रस्तुतीकरण, वर्णन और विश्लेषण से संबंधित है, जिसका संख्यात्मक रूप में मापन हो सकता है।''
– *Practical Statistics : S.P. Gupta, 2004*

प्रस्तुत शोधकार्य में निर्धारित उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के आधार पर विधिवत् न्यादर्श का चयन करके अभिभावक–बालक संबंध, समायोजन, आक्रामकता एवं आत्म–अवधारणा संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के माध्यम से प्राप्त समंकों को वर्गीकृत एवं सारणीकृत करने के पश्चात् विभिन्न सांख्यिकी तकनीकियों, यथा–मध्यमान, मानक विचलन (S.D.) , टी–परीक्षण एवं कार्ल पियर्सन की प्रोडक्ट मोमेण्ट सहसंबंध गुणांक विधि का प्रयोग किया गया है।

मध्यमान (Mean) – प्रस्तुत शोधकार्य में व्यवस्थित आँकडो से मध्यमान (M) की गणना निम्नलिखित सूत्र की सहायता से की गई है :

$$M = A + \frac{\sum fd}{N} \times i$$

संकेताक्षर :

M = मध्यमान — d = कल्पित माध्य से प्राप्तांको का विचलन

A = कल्पित माध्य — i = वर्ग विस्तार

$\sum$ = योग — N = संमको की संख्या

f = आवृति

मानक विचलन (S.D.) – प्रस्तुत शोधकार्य में व्यवस्थित आँकडो से मानक विचलन (±) ज्ञात करने हेतु निम्न सूत्र का प्रयोग किया गया है :

$$\pm = i \times \sqrt{\frac{\sum fd^2}{N} - \left(\frac{\sum fd}{N}\right)^2}$$

संकेताक्षर :

± = मानक विचलन

i =वर्ग विस्तार

f =आवृत्ति

d =विचलन

N = आवृत्तियों का योग

$\sum fd$ = आवृत्ति एंव विचलन के गुणनफल का योग

$\sum fd^2$ = आवृत्ति एंव विचलन के गुणनफल के वर्ग का योग

टी परीक्षण – प्रस्तुत शोधकार्य में दो समूहों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जाँचने हेतु टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है, जिसका सूत्र निमनिलिखित है :

$$t = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\left(\frac{\sum d^2{}_1 + \sum d^2{}_2}{N_1 + N_2 - 2}\right)\left(\frac{N_1 + N_2}{N_1 N_2}\right)}}$$

संकेताक्षर :

M_1 = प्रथम समंक श्रेणी का मध्यमान,

M_2= द्वितीय समंक श्रेणी का मध्यमान,

d_1^2=प्रथम संमक श्रेणी के मानक विचलन का वर्ग

d_2^2=द्वितीय संमक श्रेणी के मानक विचलन का वर्ग

N_1 = प्रथम समंक श्रेणी के पदों की संख्या

N_2 = द्वितीय समंक श्रेणी के पदो की सख्या

सहसंबंध – प्रस्तुत शोधकार्य में दोनों चरों के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन हेतु कार्ल पियर्सन की प्रोडेक्ट मोमेण्ट विधि का प्रयोग किया गया है, जिसका सूत्र निम्नलिलिखत है :

$$r = \frac{N\sum xy - \sum x \times \sum y}{\sqrt{N\sum x^2 - \left(\sum x\right)^2 N\sum y^2 - \left(\sum y\right)^2}}$$

संकेताक्षर :

N= कुल समंक

x^2= x का वर्ग

y^2= y का वर्ग

$\sum$= योग

x = प्रथम चर के प्राप्तांको के मध्यमान से अन्य प्राप्तांको का विचलन

y= द्वितीय चर के प्राप्तांको के मध्यमान से अन्य प्राप्तांको का विचलन

चतुर्थ अध्याय

आँकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या

‘‘जिस प्रकार से आँकड़ों के बिना सांख्यिकी की कल्पना शून्य है, उसी प्रकार से विश्लेषण के बिना अनुसंधान कल्पना के परे है।’’

- हेनरी रिचर्डसन

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावना

अनुसंधान में न्यादर्श पर उपकरण प्रशासित कर जो आँकड़े एवं सूचनाएँ एकत्रित किए जाते हैं, उन्हें प्रदत्त के नाम से जाना जाता है। आवश्यक एवं वांछनीय प्रदत्त संकलन मात्र से ही अनुसंधान कार्य पूरा नहीं होता, बल्कि अनुसंधान कार्य को पूर्ण व सार्थक बनाने के लिए तथ्यों के संकलन के पश्चात् उनके वर्गीकरण तथा विश्लेषण की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। प्राप्त सामग्री अपने प्रारंभिक रूप में बड़ी ही अस्पष्ट तथा उलझी हुई होती है। इसे प्रदर्शन के योग्य बनाने तथा विश्लेषण करके किसी निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए उस सामग्री को एक व्यवस्थित रूप देना होता है। वर्गीकरण के बिना न तो उसका विश्लेषण संभव है और न ही उसके आधार पर कोई वैज्ञानिक निष्कर्ष प्राप्त किया जा सकता हैं। अतः एकत्रित सामग्री को संगठित करना और उसे व्यवस्थित रूप देना आवश्यक है।

आर.के. मुकर्जी के अनुसार ''तथ्यों का पहाड़ कुछ नहीं कहता, जब तक कि, उसे व्यवस्थित रूप प्रदान नहीं किया जाए।''

– *शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी : अस्थाना एवं श्रीवास्तव, 2011*

व्यवस्था की प्रक्रिया में संकलित प्रदत्तों का संपादन, वर्गीकरण, सारणीयन, विश्लेषण एवं निर्वचन सम्मिलित होते हैं।

4.2 तथ्यों का संपादन

शोधकार्य में सूचनादाताओं से प्राप्त सूचनाओं को संपादित करना अनिवार्य होता है। संपादन का मुख्य अभिप्राय है – कार्य की त्रुटियों, संदेहों तथा अपूर्णताओं का बारीकी से निरीक्षण करना।

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकत्री द्वारा तथ्यों का संपादन निम्न रूपों में किया गया है :

1. तथ्य पूरे हैं अथवा नहीं।
2. तथ्यों में कोई विरोधाभास तो नहीं।
3. निर्देशों का एकरूपता से पालन किया गया है अथवा नहीं।
4. प्रदत्त विश्वसनीय एवं प्रमाणिक हैं अथवा नहीं।
5. प्रदत्त शोधकार्य के उद्देश्यों के अनुरूप हैं अथवा नहीं।

4.3 तथ्यों का वर्गीकरण

तथ्यों के संपादन तथा उनकी विश्वसनीयता एवं उपयुक्तता की जाँच करने के पश्चात् उनका वर्गीकरण किया जाता है। वर्गीकरण, प्रदत्तों को व्यवस्थित व संक्षिप्त रूप प्रदान करने की एक प्रक्रिया है, जिसमें समान तथा असमान लक्षणों से युक्त सामग्री को पृथक्–पृथक् करके विभिन्न संवर्गों में रखा जाता है।

प्रो. कोनोर के अनुसार –''वर्गीकरण तथ्यों को उनकी समानता के आधार पर वर्गों व समूहों में क्रमबद्ध करने तथा व्यक्तिगत इकाइयों की विभिन्नता के बीच उपस्थित गुणों की एकात्मकता को प्रकट करने की क्रिया का नाम है।''

– *Practical Statistics : S.P. Gupta, 2005*

वर्गीकरण द्वारा शोधकर्ता के विश्लेषण के परिणामों व निष्कर्षों के सामान्यीकरण की प्रक्रिया में सरलता के साथ ही वैज्ञानिकता के गुणों का भी समावेश हो जाता है।

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकत्री द्वारा तथ्यों का वर्गीकरण निम्न रूपों में किया गया हैः

1. **चर के गुणों एवं विशेषताओं के आधार पर वर्गीकरण –** शोधकत्री ने संकलित तथ्यों को विभिन्न चरों, यथा अभिभावकों–बालक संबंध, समायोजन, आक्रामकता एवं आत्म अवधारणा के विभिन्न गुणों एवं विशेषताओं के आधार पर पृथक–पृथक वर्गीकृत किया है।

2. **तथ्यों का सजातीय समूह में वर्गीकरण –** शोधकत्री ने संकलित तथ्यों का मूक–बधिर किशोरों एवं मूक–बधिर किशोरियों के सजातीय समूह में विभाजन किया है।

4.4 तथ्यों का सारणीयन

सामाजिक अनुसंधान के तथ्यों के संपादन और वर्गीकरण की प्रक्रिया के पश्चात् तथ्यों का सारणीयन किया जाता है। सारणीयन द्वारा तथ्यों को व्यवस्थित करके अधिक सरल, स्पष्ट एवं बोधगम्य रूप प्रदान किया जाता है। इससे तथ्यों के विश्लेषण–विवेचन में सुविधा रहती है। सारणीयन को सांख्यिकीय तथ्यों के विश्लेषण की तकनीकी प्रक्रिया का एक अंग माना जा सकता है।

करलिंगर के अनुसार –''सारणीयन केवल विभिन्न प्रकार के प्रत्युत्तरों की संख्याओं के प्रकारों, उनके उपयुक्त संवर्गों में अभिलेख किए जाने को कहते हैं।''

– शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ एवं शैक्षिक सांख्यिकी :यादव एवं सक्सेना, 2011

आँकड़ों के सारणीयन के पश्चात् उनका विश्लेषण किया जाता है, जिससे प्रश्नों के समुचित उत्तर प्राप्त हो सकें।

4.5 प्रस्तुत शोध अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य

प्रस्तुत शोधकार्य के निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्य हैं :

1. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके पिता के साथ संबंधों का अध्ययन करना।
2. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनकी माता के साथ संबंधों का अध्ययन करना।

3. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों का अध्ययन करना।

4. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के गृह समायोजन का अध्ययन करना।

5. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के स्वास्थ्य समायोजन का अध्ययन करना।

6. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के सामाजिक समायोजन का अध्ययन करना।

7. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन करना।

8. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के आक्रामकता स्तर का अध्ययन करना।

9. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की आत्म अवधारणा का अध्ययन करना।

10. मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

11. मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

12. मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

13. मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

14. मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

15. मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

16. मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

17. मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

18. मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

19. मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

20. मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

21. मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

22. मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

23. मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

24. मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

25. मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

26. मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

27. मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

28. मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

29. मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

30. मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

31. मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

32. मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

33. मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

34. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

35. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

36. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

37. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

38. मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

39. मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

40. मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

41. मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

42. मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

43. मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

44. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

45. मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

46. मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

47. मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

48. मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

49. मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

50. मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

51. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

4.6 प्रस्तुत शोध अध्ययन की परीक्षण परिकल्पनाएँ

1. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके पिता के साथ संबंधों में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

2. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनकी माता के साथ संबंधों में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

3. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके अभिभावकों के साथ संबंधों में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

4. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के गृह समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

5. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के स्वास्थ्य समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

6. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

7. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के संवेगात्मक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

8. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के आक्रामकता स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

9. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की आत्म अवधारणा में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

10. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

11. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

12. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

13. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

14. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

15. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

16. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

17. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

18. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

19. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

20. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

21. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

22. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

23. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

24. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

25. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

26. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

27. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

28. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

29. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

30. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

31. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

32. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

33. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

34. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

35. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

36. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

37. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

38. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

39. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

40. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

41. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

42. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

43. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

44. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

45. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

46. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

47. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

48. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

49. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

50. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

51. .05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

4.7 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

पूर्व अध्याय में वर्णित मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकीय संबंधों का विभिन्न आश्रित चरों, यथा–समायोजन, आक्रामकता एवं आत्म अवधारणा पर प्रभाव का अध्ययन करने हेतु शोधकत्री द्वारा टी परीक्षण (t) एवं प्रोडक्ट मोमेण्ट सहसंबंध विधि (r) का प्रयोग किया गया।

सूत्र :

(i)

$$t = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\left(\frac{\sum d^2{}_1 + \sum d^2{}_2}{N_1 + N_2 - 2}\right)\left(\frac{N_1 + N_2}{N_1 N_2}\right)}}$$

(ii)

$$r = \frac{N\sum xy - \sum x \times \sum y}{\sqrt{N\sum x^2 - (\sum x)^2 N \sum y^2 - (\sum y)^2}}$$

परिकल्पनावार प्राप्त t एवं r के मान अनुसार उद्देश्यवार विश्लेषण एवं व्याख्या की गई है।

उद्देश्य 1

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके पिता के साथ संबंधों का अध्ययन।

तालिका 4.1

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके पिता के साथ संबंधों के मध्यमान में सार्थकता का अंतर

चर (Variables)	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी का मान (t)	सार्थकता स्तर
मूक–बधिर किशोर	150	281.52	31.67	1.98	0.05 स्तर
मूक–बधिर किशोरियाँ	150	288.17	27.08		

df= 298 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.97 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.59

व्याख्या – उपरोक्त तालिका 4.1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं मूक–बधिर किशोरियों के उनके पिता के साथ संबंधो का मध्यमान क्रमशः 281.52 व 288.17 तथा मानक विचलन क्रमशः 31.67 व 27.08 है। df 298 पर प्राप्त टी का मान 1.98 है, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 1.97 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके पिता के साथ संबंधो में कोई सार्थक अतंर नही होता'' को अस्वीकृत किया जाता है।

इसीलिए यह कहा जा सकता है कि, मूक बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके पिता के साथ संबंधों में सार्थक अंतर होता है। मूक–बधिर किशोरों की तुलना में मूक–बधिर किशोरियों के उनके पिता के साथ संबंध अधिक मधुर एवं स्नेहपूर्ण होते हैं।

ग्राफ संख्या 4.1

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके पिता के साथ संबंधों के मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित करता ग्राफ

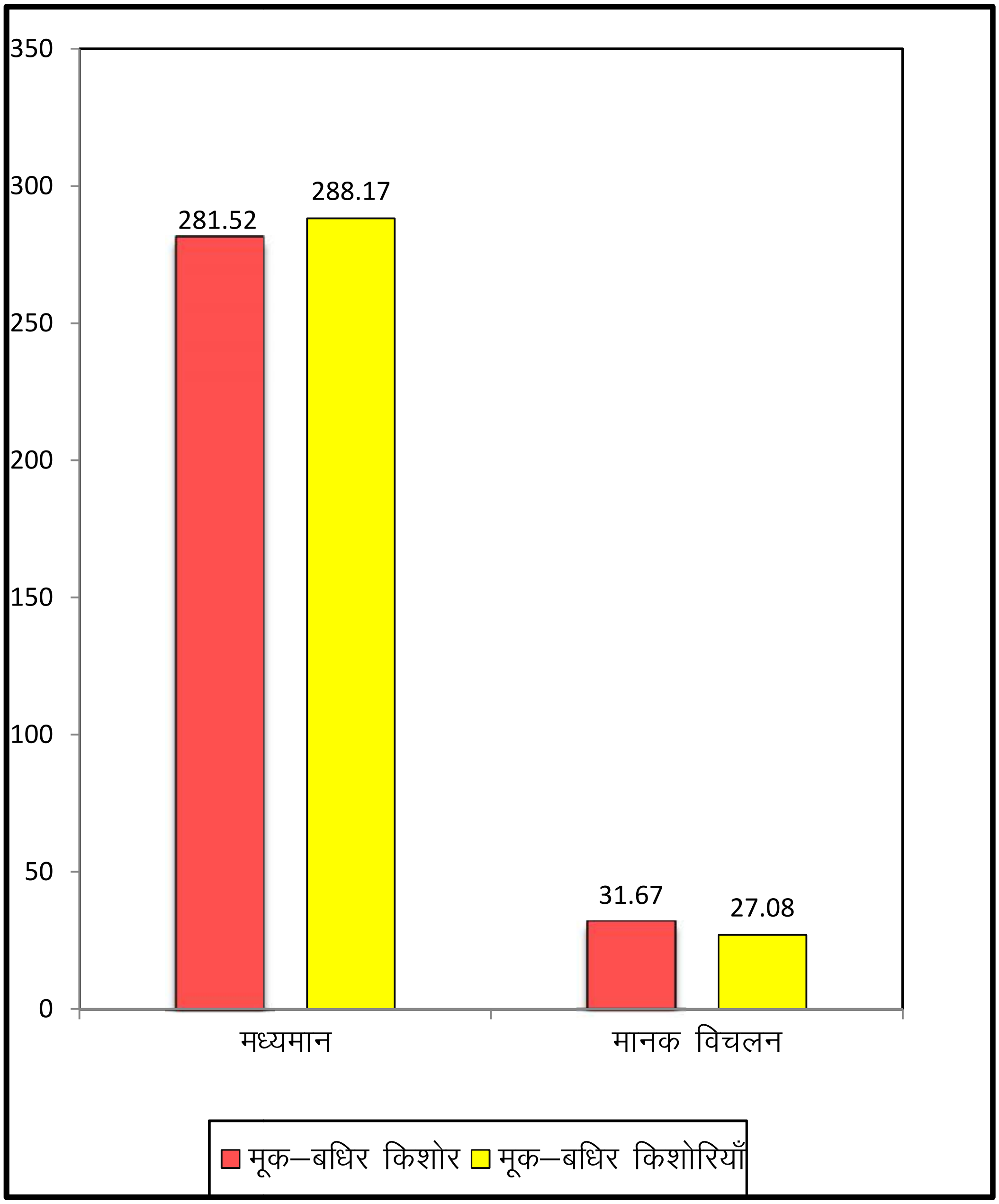

उद्देश्य 2

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनकी माता के साथ संबधों का अध्ययन।

तालिका 4.2

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनकी माता के साथ संबंधों के मध्यमान में सार्थकता का अंतर

चर (Variables)	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी का मान (t)	सार्थकता स्तर
मूक–बधिर किशोर	150	284.45	26.12	0.88	NS (Non-Significant)
मूक–बधिर किशोरियाँ	150	287.07	25.92		

df = 298   0.05 सार्थकता स्तर पर 1.97   0.01 सार्थकता स्तर पर 2.59

व्याख्या – उपरोक्त तालिका 4.2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं मूक–बधिर किशोरियों के उनकी माता के साथ संबंधों का मध्यमान क्रमशः 284.45 व 287.07 तथा मानक विचलन क्रमशः 26.12 व 25.92 है। df 298 पर प्राप्त टी का मान 0.88 है, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 1.97 से बहुत कम है।

अतः शून्य परिकल्पना कि ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनकी माता के साथ संबंधों में सार्थक अंतर नहीं होता'' को स्वीकृत किया जाता है।

इसीलिए यह कहा जा सकता है कि, मूक बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनकी माता के साथ संबंधों में सार्थक अंतर नहीं होता है।

ग्राफ संख्या 4.2

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनकी माता के साथ संबंधों के मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित करता ग्राफ

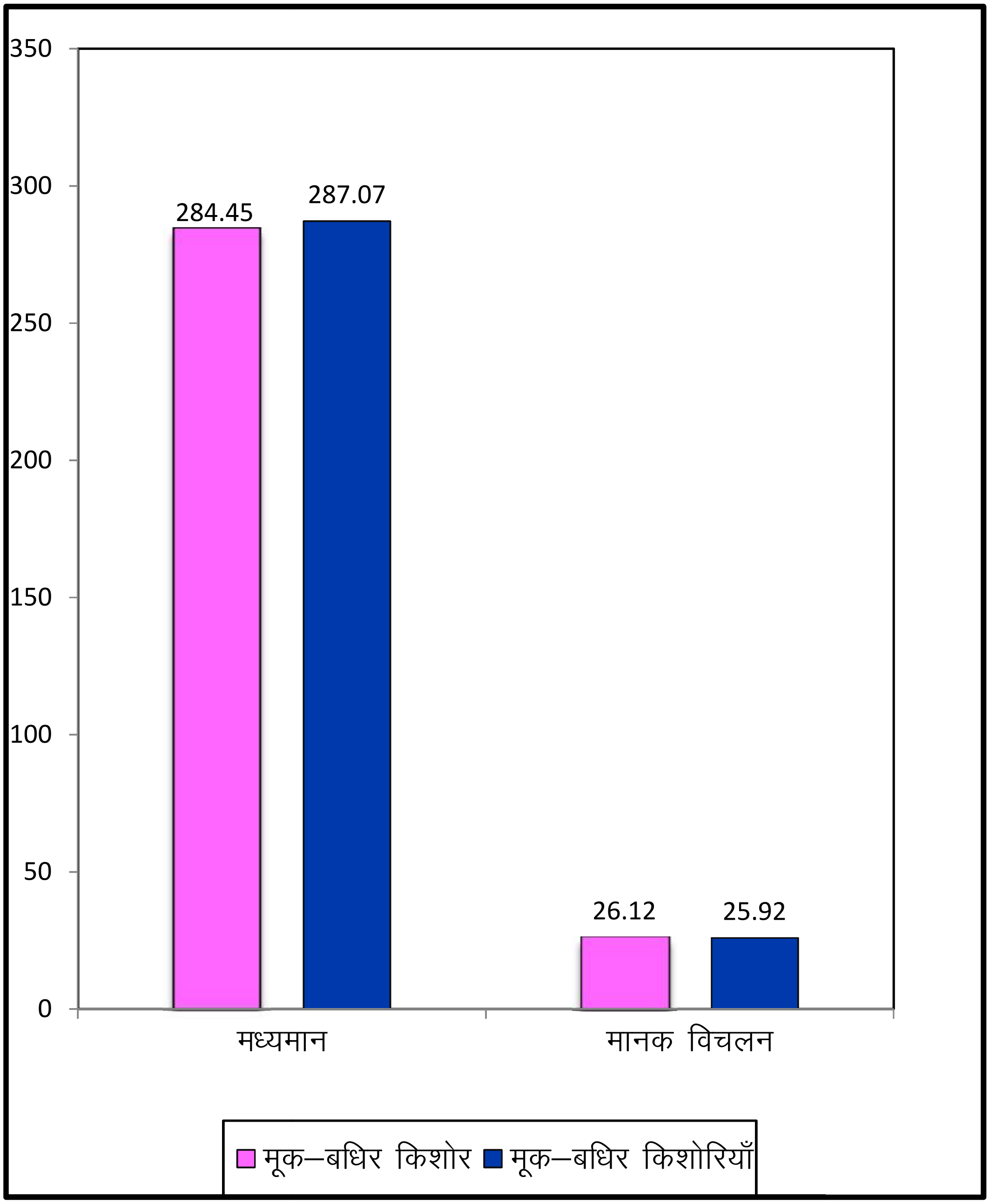

उद्देश्य 3

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके अभिभावकों के साथ संबंधो का अध्ययन।

तालिका 4.3

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके अभिभावकों के साथ संबंधो के मध्यमान में सार्थकता का अन्तर

चर (Variables)	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी का मान (t)	सार्थकता स्तर
मूक–बधिर किशोर	150	565.97	54.50	1.58	NS (Non-Significant)
मूक–बधिर किशोरियाँ	150	575.25	48.43		

df=298 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.97 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.59

व्याख्या – उपरोक्त तालिका 4.3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं मूक–बधिर किशोरियों के उनके अभिभावकों के साथ संबंधों का मध्यमान क्रमशः 565.97 व 575.25 तथा मानक विचलन क्रमशः 54.50 व 48.43 है । df 298 पर टी का मान 1.58 है, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 1.97 से कम है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके अभिभावकों के साथ संबंधों में कोई सार्थक अतंर नही होता'' को स्वीकृत किया जाता है।

इसीलिए यह कहा जा सकता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके अभिभावकों के साथ संबंधों में सार्थक अंतर नहीं होता है।

ग्राफ संख्या 4.3

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके अभिभावकों के साथ संबंधो के मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित करता ग्राफ

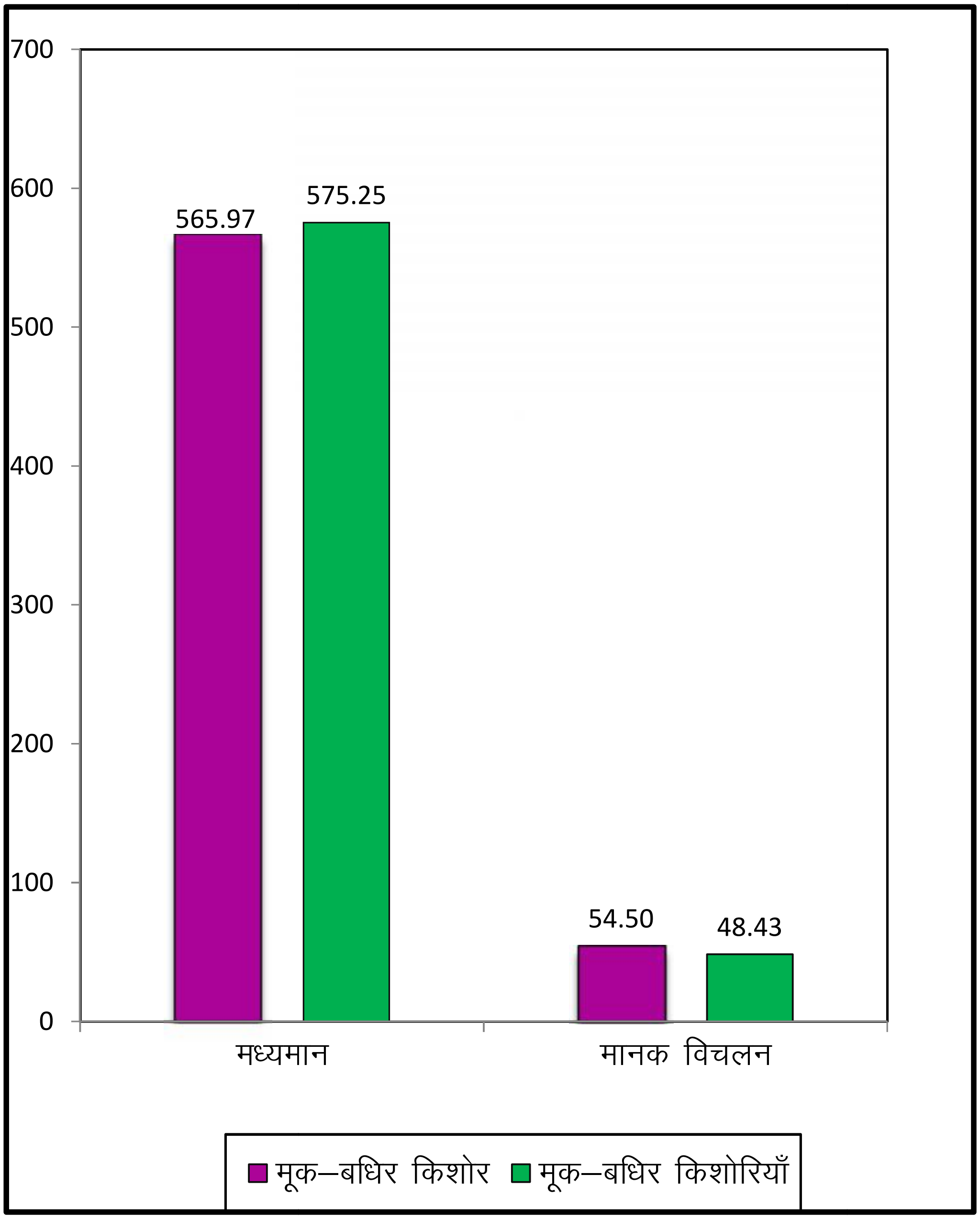

उद्देश्य 4

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के गृह समायोजन का अध्ययन।

तालिका 4.4

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के गृह समायोजन के मध्यमान में सार्थकता का अंतर

चर (Variables)	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी का मान (t)	सार्थकता स्तर
मूक–बधिर किशोर	150	9.26	5.01	0.51	NS (Non-Significant)
मूक–बधिर किशोरियाँ	150	8.99	4.33		

df=298 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.97 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.59

व्याख्या – उपरोक्त तालिका 4.4 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं मूक–बधिर किशोरियों के गृह समायोजन का मध्यमान क्रमशः 9.26 व 8.99 तथा मानक विचलन क्रमशः 5.01 व 4.33 है। df 298 पर टी का मान 0.51 है, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 1.97 से बहुत कम है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के गृह समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता'' को स्वीकृत किया जाता है।

इसीलिए यह कहा जा सकता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के गृह समायोजन में सार्थक अतंर नही होता है।

ग्राफ संख्या 4.4

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के गृह समायोजन के मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित करता ग्राफ

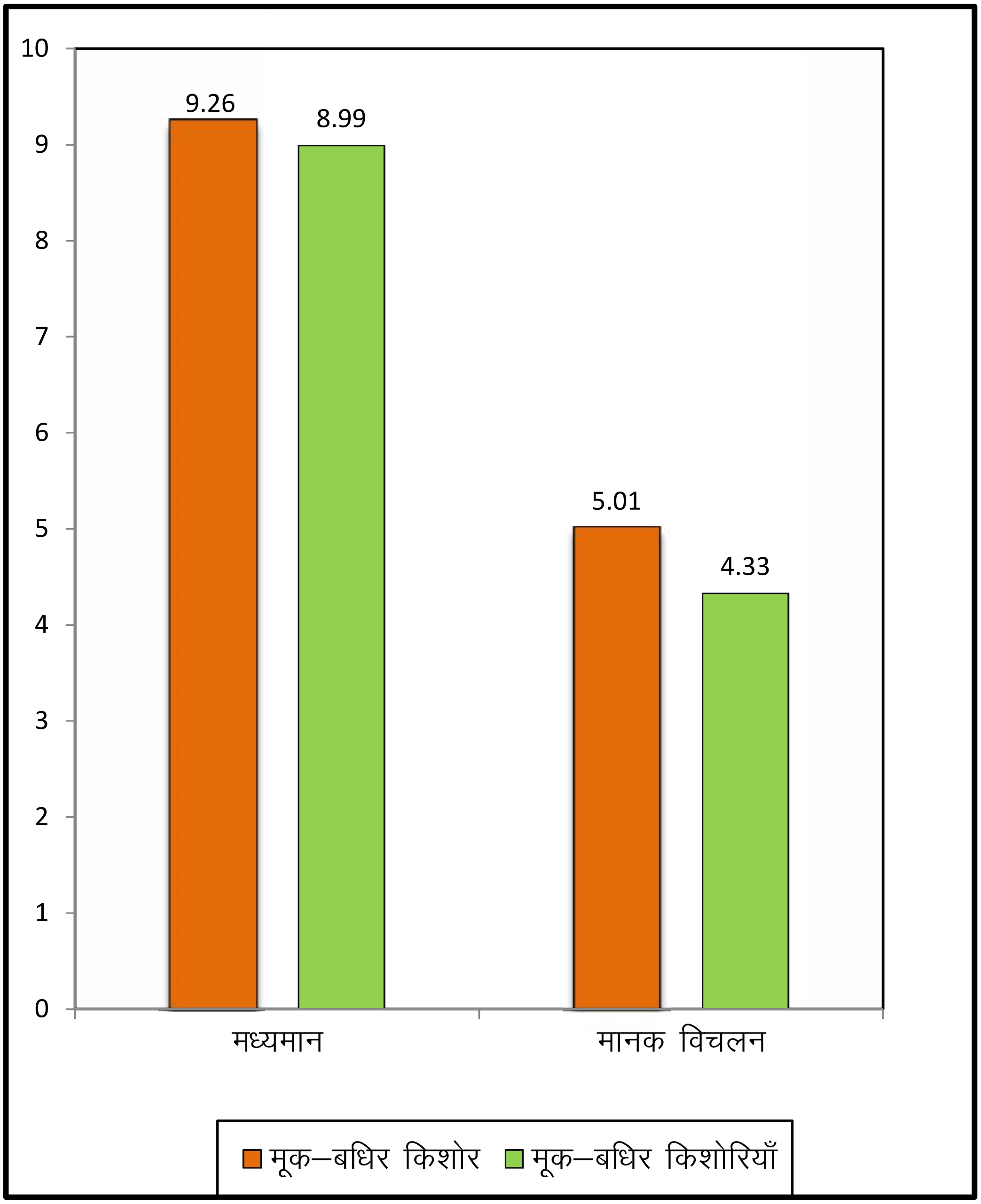

उद्देश्य 5

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के स्वास्थ्य–समायोजन का अध्ययन।

तालिका 4.5

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के स्वास्थ्य समायोजन के मध्यमान में सर्थकता का अंतर

चर (Variables)	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी का मान (t)	सार्थकता स्तर
मूक–बधिर किशोर	150	7.17	3.97	0.06	NS (Non-Significant)
मूक–बधिर किशोरियाँ	150	7.20	3.90		

df=298 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.97 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.59

व्याख्या – उपरोक्त तालिका 4.5 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं मूक–बधिर किशोरियों के स्वास्थ्य समायोजन का मध्यमान क्रमशः 7.17 व 7.20 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.97 व 3.90 है। df 298 पर टी का मान 0.06 है, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 1.97 से बहुत कम है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के स्वास्थ्य समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता'' को स्वीकृत किया जाता है।

इसीलिए यह कहा जा सकता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के स्वास्थ्य समायोजन में सार्थक अंतर नहीं होता है।

ग्राफ संख्या 4.5

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के स्वास्थ्य समायोजन के मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित करता ग्राफ

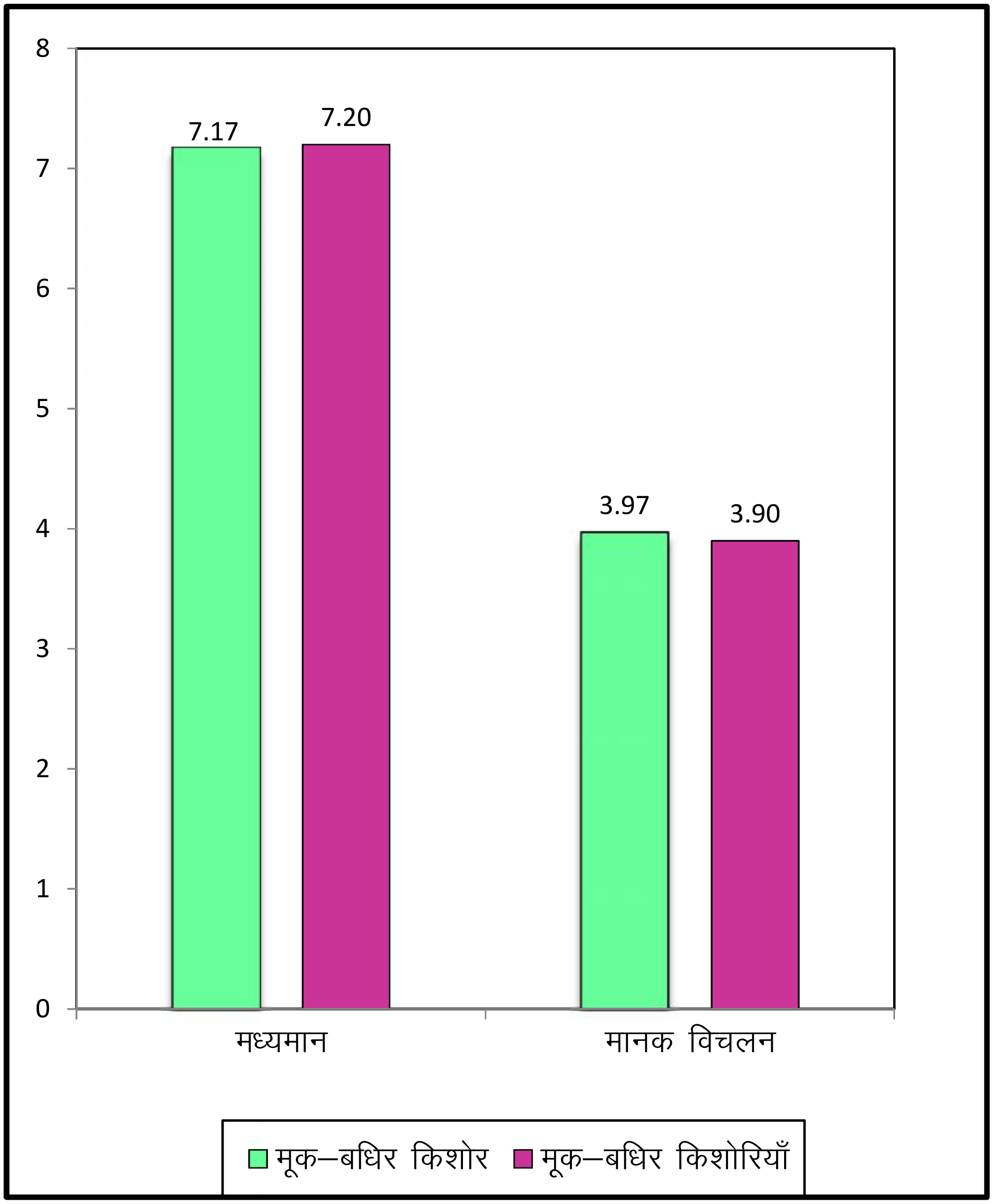

उद्देश्य 6

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के सामाजिक समायोजन का अध्ययन।

तालिका 4.6
मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के सामाजिक समायोजन के मध्यमान में सार्थकता का अंतर

चर (Variables)	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी का मान (t)	सार्थकता स्तर
मूक–बधिर किशोर	150	10.35	5.52	0.92	NS (Non-Significant)
मूक–बधिर किशोरियाँ	150	9.83	4.46		

df=298 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.97 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.59

व्याख्या – उपरोक्त तालिका 4.6 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के सामाजिक समायोजन का मध्यमान क्रमशः 10.35 व 9.83 तथा मानक विचलन क्रमशः 5.52 व 4.46 है। df 298 पर टी का मान 0.92 है, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 1.97 से बहुत कम है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता'' को स्वीकृत किया जाता है।

इसीलिए यह कहा जा सकता है कि, मूक–बधिर किशोरों एंव किशोरियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं होता है।

ग्राफ संख्या 4.6

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के सामाजिक समायोजन के मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित करता ग्राफ

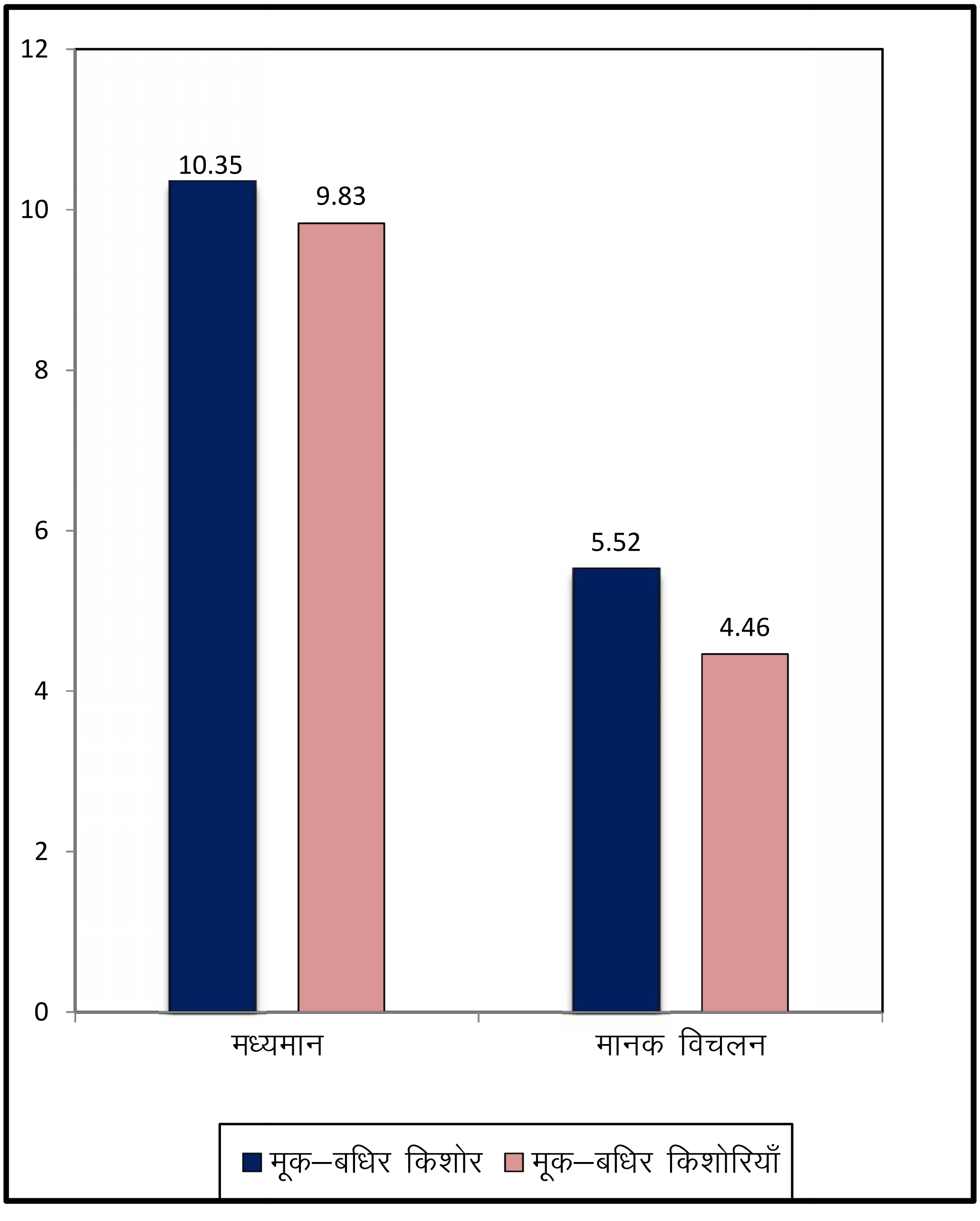

उद्देश्य 7

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन।

तालिका 4.7

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के संवेगात्मक समायोजन के मध्यमान में सार्थकता का अंतर

चर (Variables)	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी का मान (t)	सार्थकता स्तर
मूक–बधिर किशोर	150	8.39	5.14	3.47	0.01 स्तर
मूक–बधिर किशोरियाँ	150	10.23	4.31		

df=298 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.97 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.59

व्याख्या – उपरोक्त तालिका 4.7 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के संवेगात्मक समायोजन का मध्यमान क्रमशः 8.39 व 10.23 तथा मानक विचलन क्रमशः 5.14 व 4.31 है। df 298 पर टी का मान 3.47 है, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 2.59 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के संवेगात्मक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता'' को अस्वीकृत किया जाता है।

इसलिए यह कहा जा सकता है कि, मूक–बधिर किशोरों एंव किशोरियों के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अंतर होता है। मूक–बधिर किशोरियों का संवेगात्मक कुसमायोजन किशोरों से अधिक होता है।

ग्राफ संख्या 4.7

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के संवेगात्मक समायोजन के मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित करता ग्राफ

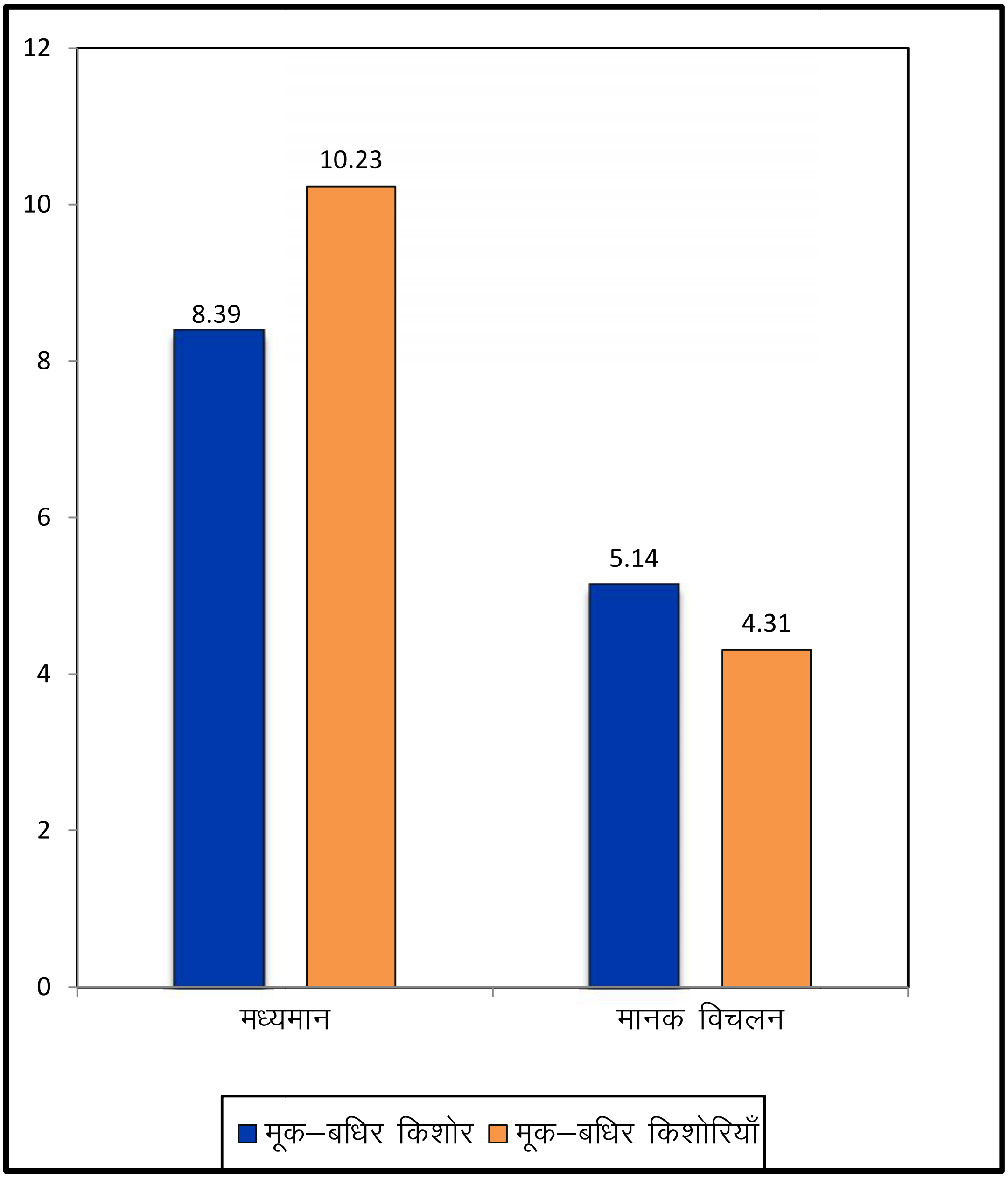

उद्देश्य 8

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के आक्रामकता स्तर का अध्ययन।

तालिका 4.8

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के आक्रामकता स्तर के मध्यमान में सार्थकता का अंतर

चर (Variables)	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी का मान (t)	सार्थकता स्तर
मूक–बधिर किशोर	150	107.75	37.06	0.13	NS (Non-Significant)
मूक–बधिर किशोरियाँ	150	108.29	31.26		

df=298 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.97 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.59

व्याख्या – उपरोक्त तालिका 4.8 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के आक्रामकता स्तर का मध्यमान क्रमशः 107.75 व 108.29 तथा मानक विचलन क्रमशः 37.06 व 31.26 है। df 298 पर टी का मान 0.13 है, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 1.97 से अत्यधिक कम है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के आक्रामकता स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता'' को स्वीकृत किया जाता है।

इसलिए यह कहा जा सकता है कि, मूक–बधिर किशोरों एंव किशोरियों के आक्रामकता स्तर में सार्थक अंतर नहीं होता है।

ग्राफ संख्या 4.8

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के आक्रामकता स्तर के मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित करता ग्राफ

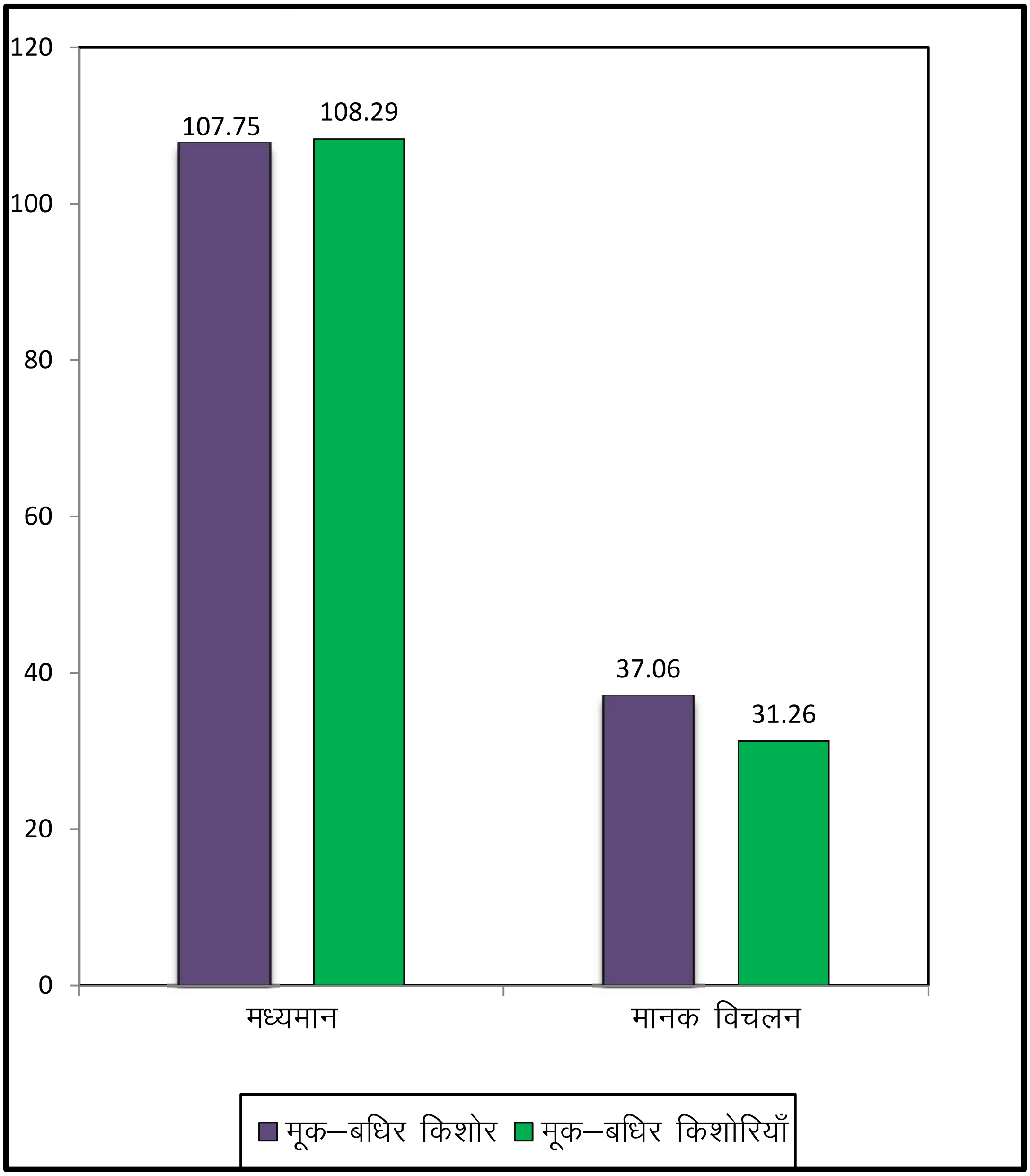

उद्देश्य 9

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की आत्म अवधारणा का अध्ययन।

तालिका 4.9

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की आत्म अवधारणा के मध्यमान में सार्थकता का अंतर

चर (Variables)	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी का मान (t)	सार्थकता स्तर
मूक–बधिर किशोर	150	96.69	36.72	1.75	NS (Non-Significant)
मूक–बधिर किशोरियाँ	150	103.42	30.17		

df=298 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.97 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.59

व्याख्या – उपरोक्त तालिका 4.9 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की आत्म अवधारणा का मध्यमान क्रमशः 96.69 व 103.42 तथा मानक विचलन क्रमशः 36.72 व 30.17 है। df 298 पर टी का मान 1.75 है, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 1.97 से कम है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की आत्म अवधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता'' को स्वीकृत किया जाता है।

इसलिए यह कहा जा सकता है कि, मूक–बधिर किशोरों एंव किशोरियों की आत्म अवधारणा में सार्थक अंतर नहीं होता है।

ग्राफ संख्या 4.9

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की आत्म अवधारणा के मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित करता ग्राफ

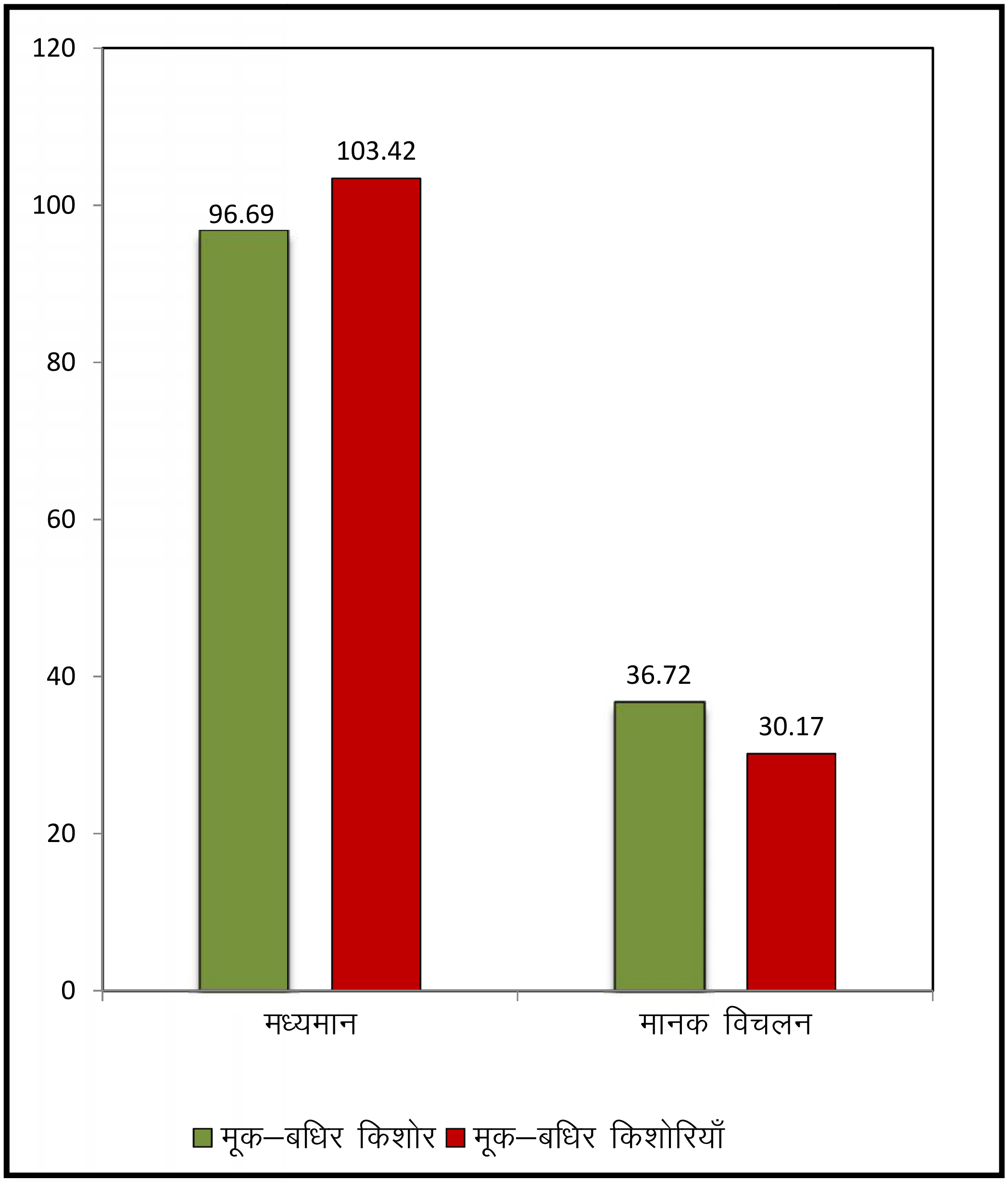

उद्देश्य 10–13

मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन (गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक एवं संवेगात्मक) के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

तालिका 4.10

मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन (गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक एवं संवेगात्मक) के मध्य प्रोडक्ट मोमेण्ट सहसंबंध गुणांक का मान

चर (Variables)		सहसंबंध गुणांक (r)	सहसंबंध स्तर	सार्थकता स्तर
I	II			
(अ) मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंध	गृह समायोजन	–0.54	ऋणात्मक मध्यम	0.01 स्तर
(ब) मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंध	स्वास्थ्य समायोजन	–0.85	ऋणात्मक अति उच्च	0.01 स्तर
(स) मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंध	समाजिक समायोजन	–0.81	ऋणात्मक अति उच्च	0.01 स्तर
(द) मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंध	संवेगात्मक समायोजन	–0.82	ऋणात्मक अति उच्च	0.01 स्तर

df=148 0.05 सार्थकता स्तर .159 0.01 सार्थकता स्तर .208

व्याख्या (अ) – मूक बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.54 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक मध्यम स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता, को अस्वीकृत किया जाता है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन में ऋणात्मक मध्यम सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे

मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों में कटुता बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे उनका गृह समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में कटुता कम होने पर किशोरों का गृह समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (ब) – मूक बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.85 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' को अस्वीकृत किया जाता है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन में ऋणात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों में तनाव बढ़ता जाता है, वैसे–वैसे उनका स्वास्थ्य समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में तनाव नहीं होने पर किशोरों का स्वास्थ्य समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (स) – मूक बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.81 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' को अस्वीकृत किया जाता है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन में ऋणात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों में अस्वीकरण बढ़ता जाता है, वैसे–वैसे उनका सामाजिक समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में अस्वीकरण नहीं होने पर किशोरों का सामाजिक समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (द) – मूक बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.82 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' को अस्वीकृत किया जाता है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन में ऋणात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों में उपेक्षा बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे उनका संवेगात्मक समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में उपेक्षा नहीं होने पर किशोरों का संवेगात्मक समायोजन बढ़ जाता है।

उद्देश्य 14—17

मूक—बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन (गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक एवं संवेगात्मक) के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन

तालिका 4.11

मूक—बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन (गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक एवं संवेगात्मक) के मध्य प्रोडक्ट मोमेण्ट सहसंबंध गुणांक का मान

चर (Variables)		सहसंबंध गुणांक (r)	सहसंबंध स्तर	सार्थकता स्तर
I	II			
(अ) मूक—बधिर किशोरों के माता के साथ संबंध	गृह समायोजन	—0.40	ऋणात्मक निम्न	0.01 स्तर
(ब) मूक—बधिर किशोरों के माता के साथ संबंध	स्वास्थ्य समायोजन	—0.68	ऋणात्मक उच्च	0.01 स्तर
(स) मूक—बधिर किशोरों के माता के साथ संबंध	समाजिक समायोजन	—0.63	ऋणात्मक उच्च	0.01 स्तर
(द) मूक—बधिर किशोरों के माता के साथ संबंध	संवेगात्मक समायोजन	—0.64	ऋणात्मक उच्च	0.01 स्तर

df=148 0.05 सार्थकता स्तर .159 0.01 सार्थकता स्तर .208

व्याख्या (अ) — मूक बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य —0.40 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक निम्न स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक—बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक—बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन में ऋणात्मक निम्न सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे—जैसे

मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों में कठोरता बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे उनका गृह समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में कठोरता कम होने पर किशोरों का गृह समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (ब) – मूक बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.68 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन में ऋणात्मक उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों में उदासीनता बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे उनका स्वास्थ्य समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में उदासीनता नहीं होने पर किशोरों का स्वास्थ्य समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (स) – मूक बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.63 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन में ऋणात्मक उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात्

जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों में तिरस्कार बढ़ता जाता है, वैसे–वैसे उनका सामाजिक समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में तिरस्कार नहीं होने पर किशोरों का सामाजिक समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (द) – मूक बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.64 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन में ऋणात्मक उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों में असंवेदनशीलता बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे उनका संवेगात्मक समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में असंवेदनशीलता कम होने पर किशोरों का संवेगात्मक समायोजन बढ़ जाता है।

उद्देश्य 18–21

मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन (गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक एवं संवेगात्मक) के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

तालिका 4.12

मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन (गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक एवं संवेगात्मक) के मध्य प्रोडक्ट मोमेण्ट सहसंबंध गुणांक का मान

चर (Variables)		सहसंबंध गुणांक (r)	सहसंबंध स्तर	सार्थकता स्तर
I	II			
(अ) मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकीय संबंध	गृह समायोजन	–0.50	ऋणात्मक निम्न	0.01 स्तर
(ब) मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकीय संबंध	स्वास्थ्य समायोजन	–0.82	ऋणात्मक अति उच्च	0.01 स्तर
(स) मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकीय संबंध	समाजिक समायोजन	–0.77	ऋणात्मक उच्च	0.01 स्तर
(द) मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकीय संबंध	संवेगात्मक समायोजन	–0.78	ऋणात्मक उच्च	0.01 स्तर

df=148 0.05 सार्थकता स्तर 0.159 0.01 सार्थकता स्तर 0.208

व्याख्या (अ) – मूक बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.50 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक मध्यम स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन में ऋणात्मक मध्यम सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों एवं उनके अभिभावकों के मध्य संबंधों में बिगाड़ बढ़ता जाता है, वैसे–वैसे उनका गृह समायोजन कम होता जाता है। जबकि दोनों के मध्य संबंधों में बिगाड़ नहीं होने पर किशोरों का गृह समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (ब) – मूक बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.82 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन में ऋणात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों में कटुता बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे उनका स्वास्थ्य समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में कटुता कम होने पर किशोरों का स्वास्थ्य समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (स) – मूक बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.77 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन में ऋणात्मक उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों में अस्वीकरण बढ़ता जाता है, वैसे–वैसे उनका सामाजिक समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में अस्वीकरण कम होने पर किशोरों का सामाजिक समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (द) – मूक बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.78 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन में ऋणात्मक उच्च सहसंबंध होता है।अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों में कठोरता बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे उनका संवेगात्मक समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में कठोरता कम होने पर किशोरों का संवेगात्मक समायोजन बढ़ जाता है।

उद्देश्य 22–25

मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन (गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक, एवं संवेगात्मक) के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

तालिका 4.13

मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन (गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक एवं संवेगात्मक) के मध्य प्रोडक्ट मोमेण्ट सहसंबंध गुणांक का मान

चर (Variables)		सहसंबंध गुणांक (r)	सहसंबंध स्तर	सार्थकता स्तर
I	II			
(अ) मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंध	गृह समायोजन	–0.81	ऋणात्मक अति उच्च	0.01 स्तर
(ब) मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंध	स्वास्थ्य समायोजन	–0.83	ऋणात्मक अति उच्च	0.01 स्तर
(स) मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंध	समाजिक समायोजन	–0.66	ऋणात्मक उच्च	0.01 स्तर
(द) मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंध	संवेगात्मक समायोजन	–0.63	ऋणात्मक उच्च	0.01 स्तर

df=148 0.05 सार्थकता स्तर 0.159 0.01 सार्थकता स्तर 0.208

व्याख्या (अ) – मूक बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.81 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन में ऋणात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात्

जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों में तिरस्कार की भावना बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे उनका गृह समायोजन कम होता जाता है। जबकि तिरस्कार नहीं होने पर किशोरियों का गृह समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (ब) – मूक बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.83 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन में ऋणात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरियों का के पिता के साथ संबंधों में अवहेलना बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे उनका स्वास्थ्य समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में अवहेलना नहीं होने पर किशोरियों का स्वास्थ्य संवेगात्मक समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (स) – मूक बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.66 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन में ऋणात्मक उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों में उपेक्षा बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे उनका सामाजिक समायोजन कम होता जाता है। जबकि उपेक्षा नहीं होने पर किशोरियों का सामाजिक समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (द) – मूक बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.63 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन में ऋणात्मक उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों में द्वेषता बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे उनका संवेगात्मक समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में द्वेषता नहीं होने पर किशोरियों का संवेगात्मक समायोजन बढ़ जाता है।

उद्देश्य 26–29

मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन (गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक, एवं संवेगात्मक) के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

तालिका 4.14

मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन (गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक एवं संवेगात्मक) के मध्य प्रोडक्ट मोमेण्ट सहसंबंध गुणांक का मान

चर (Variables)		सहसंबंध गुणांक (r)	सहसंबंध स्तर	सार्थकता स्तर
I	II			
(अ) मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंध	गृह समायोजन	–0.78	ऋणात्मक उच्च	0.01 स्तर
(ब) मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंध	स्वास्थ्य समायोजन	–0.74	ऋणात्मक उच्च	0.01 स्तर
(स) मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंध	समाजिक समायोजन	–0.85	ऋणात्मक अति उच्च	0.01 स्तर
(द) मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंध	संवेगात्मक समायोजन	–0.83	ऋणात्मक अति उच्च	0.01 स्तर

df=148 0.05 सार्थकता स्तर 0.159 0.01 सार्थकता स्तर 0.208

व्याख्या (अ) – मूक बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.78 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन में ऋणात्मक उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों में पक्षपात बढ़ता जाता है, वैसे–वैसे उनका गृह समायोजन कम होता जाता है। जबकि पक्षपात नहीं होने पर किशोरियों का गृह समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (ब) – मूक बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.74 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन में ऋणात्मक उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों में असहयोग बढ़ता जाता है, वैसे–वैसे उनका स्वास्थ्य समायोजन कम होता जाता है। जबकि असहयोगात्मक संबंध नहीं होने पर किशोरियों का स्वास्थ्य समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (स) – मूक बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.85 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन में ऋणात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों में दूरियाँ बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे उनका सामाजिक समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में दूरियाँ कम होने पर किशोरियों का सामाजिक समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (द) – मूक बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.83 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन में ऋणात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों में तनाव बढ़ता जाता है, वैसे–वैसे उनका संवेगात्मक समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में तनाव कम होने पर किशोरियों का संवेगात्मक समायोजन बढ़ जाता है।

उद्देश्य 30–33

मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन (गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक, एवं संवेगात्मक) के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

तालिका 4.15

मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन (गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक एवं संवेगात्मक) के मध्य प्रोडक्ट मोमेण्ट सहसंबंध गुणांक का मान

चर (Variables)		सहसंबंध गुणांक (r)	सहसंबंध स्तर	सार्थकता स्तर
I	II			
(अ) मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकीय संबंध	गृह समायोजन	–0.87	ऋणात्मक अति उच्च	0.01 स्तर
(ब) मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकीय संबंध	स्वास्थ्य समायोजन	–0.86	ऋणात्मक अति उच्च	0.01 स्तर
(स) मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकीय संबंध	समाजिक समायोजन	–0.82	ऋणात्मक अति उच्च	0.01 स्तर
(द) मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकीय संबंध	संवेगात्मक समायोजन	–0.80	ऋणात्मक उच्च	0.01 स्तर

df=148 0.05 सार्थकता स्तर 0.159 0.01 सार्थकता स्तर 0.208

व्याख्या (अ) – मूक बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.87 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन में ऋणात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात्

जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों में उपेक्षा बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे उनका गृह समायोजन कम होता जाता है। जबकि उपेक्षापूर्ण संबंध नहीं होने पर किशोरियों का गृह समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (ब) – मूक बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.86 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन में ऋणात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों में कटुता बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे उनका स्वास्थ्य समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में कटुता नहीं होने पर किशोरियों का स्वास्थ्य समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (स) – मूक बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.82 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन में ऋणात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों में अस्वीकरण बढ़ता जाता है, वैसे–वैसे उनका सामाजिक समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में अस्वीकरण नहीं होने पर किशोरियों का सामाजिक समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (द) – मूक बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.80 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन में ऋणात्मक उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों में तनाव बढ़ता जाता है, वैसे–वैसे उनका संवेगात्मक समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में तनाव कम होने पर किशोरियों का संवेगात्मक समायोजन बढ़ जाता है।

उद्देश्य 34–37

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन (गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक, एवं संवेगात्मक) के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

तालिका 4.16

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन (गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक एवं संवेगात्मक) के मध्य प्रोडक्ट मोमेण्ट सहसंबंध गुणांक का मान

चर (Variables)		सहसंबंध गुणांक (r)	सहसंबंध स्तर	सार्थकता स्तर
I	II			
(अ) मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकीय संबंध	गृह समायोजन	–0.66	ऋणात्मक उच्च	0.01 स्तर
(ब) मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकीय संबंध	स्वास्थ्य समायोजन	–0.83	ऋणात्मक अति उच्च	0.01 स्तर
(स) मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकीय संबंध	समाजिक समायोजन	–0.79	ऋणात्मक उच्च	0.01 स्तर
(द) मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकीय संबंध	संवेगात्मक समायोजन	–0.75	ऋणात्मक उच्च	0.01 स्तर

df=298 0.05 सार्थकता स्तर 0.113 0.01 सार्थकता स्तर 0.148

व्याख्या (अ) – मूक बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.66 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 298 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.148 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन में ऋणात्मक उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों में असंतोष बढ़ता जाता है, वैसे–वैसे उनका गृह समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में असंतोष नहीं होने पर उनका गृह समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (ब) – मूक बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.83 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 298 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.148 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन में ऋणात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों में लापरवाही बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे उनका स्वास्थ्य समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में लापरवाही नहीं होने पर उनका स्वास्थ्य समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (स) – मूक बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.79 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 298 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.148 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन में ऋणात्मक उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों में अस्वीकरण बढ़ता जाता है, वैसे–वैसे उनका सामाजिक समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में अस्वीकरण नहीं होने पर उनका सामाजिक समायोजन बढ़ जाता है।

व्याख्या (द) – मूक बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.75 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 298 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.148 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन में ऋणात्मक उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों में कटुता बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे उनका संवेगात्मक समायोजन कम होता जाता है। जबकि संबंधों में कटुता नहीं होने पर उनका संवेगात्मक समायोजन बढ़ जाता है।

उद्देश्य 38–40

मूक–बधिर किशोरों के पिता, माता एवं अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

तालिका 4.17

मूक–बधिर किशोरों के पिता, माता एवं अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य प्रोडक्ट मोमेण्ट सहसंबंध गुणांक का मान

चर (Variables)		सहसंबंध गुणांक (r)	सहसंबंध स्तर	सार्थकता स्तर
I	II			
(अ) मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंध	आक्रामकता स्तर	–0.93	ऋणात्मक अति उच्च	0.01 स्तर
(ब) मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंध	आक्रामकता स्तर	–0.71	ऋणात्मक उच्च	0.01 स्तर
(स) मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंध	आक्रामकता स्तर	–0.88	ऋणात्मक अति उच्च	0.01 स्तर

df=148 0.05 सार्थकता स्तर 0.159 0.01 सार्थकता स्तर 0.208

व्याख्या (अ) – मूक बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.93 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों में सामंजस्य की कमी होती जाती है, वैसे–वैसे उनका आक्रामकता स्तर उच्च होता जाता है। जबकि संबंधों में सामंजस्य बढ़ने पर किशोरों का आक्रामकता स्तर निम्न हो जाता है।

व्याख्या (ब) – मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.71 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों में मधुरता कम होती जाती है, वैसे–वैसे उनका आक्रामकता स्तर उच्च होता जाता है। जबकि संबंधों में मधुरता बढ़ने पर किशोरों का आक्रामकता स्तर निम्न हो जाता है।

व्याख्या (स) – मूक बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.88 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों में अपनत्व कम होता जाता है, वैसे–वैसे उनका आक्रामकता स्तर उच्च होता जाता है। जबकि संबंधों में अपनत्व बढ़ने पर किशोरों का आक्रामकता स्तर निम्न हो जाता है।

उद्देश्य 41–43

मूक–बधिर किशोरियों के पिता, माता एवं अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

तालिका 4.18

मूक–बधिर किशोरियों के पिता, माता एवं अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य प्रोडक्ट मोमेण्ट सहसंबंध गुणांक का मान

चर (Variables)		सहसंबंध गुणांक (r)	सहसंबंध स्तर	सार्थकता स्तर
I	II			
(अ) मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंध	आक्रामकता स्तर	–0.84	ऋणात्मक अति उच्च	0.01 स्तर
(ब) मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंध	आक्रामकता स्तर	–0.69	ऋणात्मक उच्च	0.01 स्तर
(स) मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंध	आक्रामकता स्तर	–0.84	ऋणात्मक अति उच्च	0.01 स्तर

df=148 0.05 सार्थकता स्तर 0.159 0.01 सार्थकता स्तर 0.208

व्याख्या (अ)– मूक बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.84 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों में स्नेह एवं भावनात्मकता कम होती जाती है, वैसे–वैसे उनका आक्रामकता स्तर उच्च होता जाता है। जबकि संबंधों में स्नेह एवं भावनात्मकता बढ़ने पर किशोरियों का आक्रामकता स्तर निम्न हो जाता है।

व्याख्या (ब)– मूक बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.69 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों में मधुरता कम होती जाती है, वैसे–वैसे उनका आक्रामकता स्तर उच्च होता जाता है। जबकि संबंधों में मधुरता बढ़ने पर किशोरियों का आक्रामकता स्तर निम्न हो जाता है।

व्याख्या (स)– मूक बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.84 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों में अनुकूलता कम होती जाती है, वैसे–वैसे उनका आक्रामकता स्तर उच्च होता जाता है। जबकि संबंधों में अनुकूलता बढ़ने पर किशोरियों का आक्रामकता स्तर निम्न हो जाता है।

उद्देश्य 44

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

तालिका 4.19

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य प्रोडक्ट मोमेण्ट सहसंबंध गुणांक का मान

चर (Variables)		सहसंबंध गुणांक (r)	सहसंबंध स्तर	सार्थकता स्तर
I	II			
मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंध	आक्रामकता स्तर	–0.86	ऋणात्मक अति उच्च	0.01 स्तर

df=298 0.05 सार्थकता स्तर 0.113 0.01 सार्थकता स्तर 0.148

व्याख्या – मूक बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य –0.86 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों तथा उनके अभिभावकों के मध्य संतोषजनक संबंधों की कमी आती जाती है, वैसे–वैसे उनका आक्रामकता स्तर उच्च होता जाता है जबकि अभिभावकों के साथ संतोषजनक संबंध बढ़ने पर उनका आक्रामकता स्तर निम्न हो जाता है।

उद्देश्य 45–47

मूक–बधिर किशोरों के पिता, माता एवं अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

तालिका 4.20

मूक–बधिर किशोरों के पिता, माता एवं अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य प्रोडक्ट मोमेण्ट सहसंबंध गुणांक का मान

चर (Variables)		सहसंबंध गुणांक (r)	सहसंबंध स्तर	सार्थकता स्तर
I	II			
(अ) मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंध	आत्म अवधारणा	+0.91	धनात्मक अति उच्च	0.01 स्तर
(ब) मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंध	आत्म अवधारणा	+0.71	धनात्मक उच्च	0.01 स्तर
(स) मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंध	आत्म अवधारणा	+0.87	धनात्मक अति उच्च	0.01 स्तर

df=148 0.05 सार्थकता स्तर 0.159 0.01 सार्थकता स्तर 0.208

व्याख्या (अ)– मूक बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य +0.91 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य धनात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों में अनुकूलता कम होती जाती हैं, वैसे–वैसे उनकी आत्म अवधारणा भी निम्न होती जाती है जबकि संबंधों में अनुकूलता बढ़ने पर किशोरों की आत्म अवधारणा उच्च हो जाती है।

व्याख्या (ब)– मूक बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य +0.71 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य धनात्मक उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंध असंतोषजनक होते जाते हैं, वैसे–वैसे उनकी आत्म अवधारणा भी निम्न होती जाती है जबकि संबंधों के संतोषजनक होने पर किशोरों की आत्म अवधारणा उच्च हो जाती है।

व्याख्या (स)– मूक बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य +0.87 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य धनात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों में सामंजस्य की कमी होती जाती हैं, वैसे–वैसे उनकी आत्म अवधारणा भी निम्न होती जाती है जबकि संबंधों में सामंजस्य बढ़ने पर किशोरों की आत्म अवधारणा उच्च हो जाती है।

उद्देश्य 48–50

मूक–बधिर किशोरियों के पिता, माता एवं अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

तालिका 4.21

मूक–बधिर किशोरियों के पिता, माता एवं अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य प्रोडक्ट मोमेण्ट सहसंबंध गुणांक का मान

चर (Variables)		सहसंबंध गुणांक (r)	सहसंबंध स्तर	सार्थकता स्तर
I	II			
(अ) मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंध	आत्म अवधारणा	+0.84	धनात्मक अति उच्च	0.01 स्तर
(ब) मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंध	आत्म अवधारणा	+0.62	धनात्मक उच्च	0.01 स्तर
(स) मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंध	आत्म अवधारणा	+0.80	धनात्मक उच्च	0.01 स्तर

df=148   0.05 सार्थकता स्तर 0.159   0.01 सार्थकता स्तर 0.208

व्याख्या (अ)– मूक बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य +0.84 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य धनात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंध असामान्य होते जाते हैं, वैसे–वैसे उनकी आत्म अवधारणा भी निम्न होती जाती है। जबकि संबंधों के सामान्य होने पर किशोरियों की आत्म अवधारणा भी सामान्य हो जाती है।

व्याख्या (ब) – मूक बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य +0.62 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य धनात्मक उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों में मधुरता कम होती जाती है, वैसे–वैसे उनकी आत्म अवधारणा भी निम्न होती जाती है। जबकि संबंधों के मधुरता बढ़ने पर किशोरियों की आत्म अवधारणा भी उच्च हो जाती है।

व्याख्या (स) – मूक बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य +0.80 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य धनात्मक उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 148 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.208 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है। अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों में स्नेह की कमी होती जाती है, वैसे–वैसे उनकी आत्म अवधारणा भी निम्न होती जाती है। जबकि संबंधों में स्नेह बढ़ने पर किशोरियों की आत्म अवधारणा भी उच्च हो जाती है।

उद्देश्य 51

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

तालिका 4.22

मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य प्रोडक्ट मोमेण्ट सहसंबंध गुणांक का मान

चर (Variables)		सहसंबंध गुणांक (r)	सहसंबंध स्तर	सार्थकता स्तर
I	II			
मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंध	आत्म अवधारणा	+0.84	धनात्मक अति उच्च	0.01 स्तर

df=298 0.05 सार्थकता स्तर 0.113 0.01 सार्थकता स्तर 0.148

व्याख्या – मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसका सहसंबंध गुणांक मूल्य +0.84 प्राप्त हुआ। यह सहसंबंध गुणांक मूल्य दोनों चरों के मध्य धनात्मक अति उच्च स्तर के सहसंबंध को दर्शाता है, जो कि 99% विश्वास स्तर df 298 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मूल्य 0.148 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता'' अस्वीकृत की जाती है।

इससे यह ज्ञात होता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक अति उच्च सहसंबंध होता है, अर्थात् जैसे–जैसे मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों में विश्वास एवं सहयोग की कमी होती जाती है, वैसे–वैसे उनकी आत्म अवधारणा भी निम्न होती जाती है। जबकि संबंधों में विश्वास एवं सहयोग बढ़ने पर उनकी आत्म अवधारणा उच्च हो जाती है।

4.8 निष्कर्ष

इस अध्याय में शोधकत्री द्वारा विभिन्न सांख्यिकी तकनीकियों की सहायता से आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या की गई। इससे प्राप्त मुख्य निष्कर्ष अगले अध्याय में प्रस्तुत किये गये हैं।

पंचम अध्याय

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

‘‘शैक्षिक अनुसंधान का अंतिम लक्ष्य सिद्धांतों का प्रतिपादन करना और शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रक्रियाओं का विकास करना है।’’

– **मुनरो**

<u>शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव</u>

5.1 प्रस्तावना

शोधकार्य के सम्पन्न होने के पश्चात् शोधकार्य को लिखित रूप में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया होती है, इसे अनुसंधान प्रतिवेदन कहा जाता है। अनुसंधान प्रतिवेदन शैक्षिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंतिम चरण है। इसमें शोध संबंधी समस्त गतिविधियों का पूर्ण विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि, शोधकर्ता के साथ ही मूल्यांकनकर्ता अथवा अन्य को भी शोध समस्या, उद्‌देश्य, महत्व, परिसीमाओं, उपकरणों, प्रक्रियाओं, तथ्य संकलन एवं निष्कर्षों का आसानी से पता चल सके।

संपूर्ण शोधकार्य का विश्लेषण करने के पश्चात् तथ्यों व निष्कर्षों पर दृष्टिपात करना अत्यंत आवश्यक है। प्रारंभ में शोधकर्ता कुछ निश्चित उद्‌देश्यों को लेकर कार्य शुरू करता है। फिर प्राप्त परिणामों की उद्‌देश्यों के अनुसार जाँच करता है। तत्पश्चात् भावी शोधों के लिए सुझाव देकर, आगामी शोधकार्यों का मार्ग प्रशस्त करता है।

5.2 शोध सारांश

व्यक्ति के विकास की विभिन्न अवस्थाओं में किशोरावस्था अत्यधिक महत्वपूर्ण अवस्था मानी जाती है। किशोरावस्था में तीव्र एवं विशिष्ट परिवर्तन बालक के व्यक्तित्व को पूर्णतः बदल देते हैं। इस अवस्था में प्रवेश करने पर बाल्यावस्था में अर्जित स्थिरता, पुनः अस्थिरता में बदलने लगती है तथा शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक समस्याओं को उत्पन्न करती है। किशोरों में संवेगात्मक अस्थिरता एवं अनिश्चितता के कारण ही स्टेनले हॉल ने किशोरावस्था को **''तूफान और दबाव का काल''** कहा है।

ये संघर्षपूर्ण और तूफानी अवस्था तब और भी अधिक समस्या प्रधान हो जाती है, जब किशोर किसी शारीरिक दोष का शिकार हो।

मूक–बधिरता भी एक शारीरिक विकार है, जिससे ग्रसित बालक शारीरिक विकलांगता की श्रेणी में आते हैं। वास्तव में मूक–बधिर बालक वे श्रवण दोषयुक्त बालक होते हैं, जिन्हें कानों द्वारा सुनने में कठिनाई होती है और चूँकि श्रवण दोष संप्रेषण में प्रमुख बाधा है, अतः बालक शाब्दिक अभिव्यक्ति में भी अक्षम हो जाते हैं। ध्वनि सुनाई न दे पाने के कारण वे स्वाभाविक भाषा अर्जित नहीं कर पाते हैं और परिणामतः मूक–बधिर की श्रेणी में आ जाते हैं।

हलाहन एवं कॉफमैन के अनुसार – ''वह बालक जिसने जीवन के प्रारंभिक दो या तीन वर्षों में श्रवण शक्ति की हानि सही हो और जिसने इसके परिणामस्वरूप स्वाभाविक भाषा अर्जित न की हो, वह मूक–बधिर समझा जाएगा।''

– *Exceptional Children : Hallahan D.P. and Kauffman J.M., 1991*

मूक–बधिर बालक शारीरिक समस्या के साथ–साथ मानसिक एवं संवेगात्मक समस्याओं से भी घिरे होते हैं। बालकों की शारीरिक विकलांगता उनके व्यक्तित्व, समायोजन, व्यवहार इत्यादि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।

रटर (1970), शैफार्ड (1979), सेठ (1989) तथा अरूणा एवं रेड्डी (2000) ने मूक बधिर बालकों की भावात्मक एवं व्यवहार संबंधी समस्याओं को विशेष रूप से समझने के लिए अध्ययन किए, जिसमें मूक–बधिर बालकों में समस्यात्मक व्यवहार का प्रतिशत अधिक पाया गया तथा मूक–बधिर बालकों एवं सामान्य बालकों के व्यक्तित्व की विभिन्न विशेषताओं में भी सार्थक अंतर पाया गया।

मूक–बधिर बालकों के व्यवहार का परिवार के वातावरण एवं अभिभावकों के साथ भी गहरा संबंध होता है। यद्यपि सभी प्रकार के मानवीय संबंध अनुपम होते हैं, तथापि किशोरों एवं अभिभावकों के मध्य निर्मित संबंध महत्वपूर्ण विशेषताएँ लिए हुए होते हैं। किशोरों का व्यक्तित्व, समायोजन, अभिवृत्ति, आत्म अवधारणा आदि माता–पिता एवं किशोरों के मध्य स्थापित संबंधों से प्रभावित होते हैं।

स्टेनबर्ग (2001) ने भी किशोरों के विकास में सबसे महत्वपूर्ण विषयक के रूप में माता–पिता एवं किशोरों के संबंध को माना है

— *Journal of Psychometry, July – Dec. 2010*

सोमर्स (1998), 'बाधित बालकों की संवेगात्मक समायोजनशीलता पर पारिवारिक अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन' कर इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि, जिन अभिभावकों को अपने बालकों की शारीरिक विकलांगता पर लज्जा का अनुभव होता है, उन बालकों में संवेगात्मक समस्याएँ अधिक पाई जाती हैं तथा उनमें समायोजन का भी अभाव पाया जाता है।

— *International Studies, 2000*

चूँकि समायोजन एक व्यक्तिगत परिवर्त्य एवं अर्जित प्रक्रिया है, जिसे व्यक्ति वातावरण में रहकर सीखता है, अतः किशोरों की समायोजनशीलता भी पारिवारिक वातावरण एवं अभिभावकीय संबंधों से महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित होती है। और जब किशोर किसी शारीरिक बाधा से ग्रसित हो तथा माता–पिता द्वारा उसकी शारीरिक अक्षमता स्वीकार न की गई हो, तो ऐसी परिस्थितियों में अभिभावकों द्वारा किशोरों के अस्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव उनके समायोजन एवं संज्ञानात्मक क्षमता पर पड़ता है। कई बार ये अस्वीकरण ही बालकों में कुण्ठा, तनाव एवं आक्रामकता जैसे लक्षण उत्पन्न कर देता है। देखा गया है कि शारीरिक विकलांग बालक, सामान्य बालकों की तुलना में अधिक आक्रामक होते हैं।

आक्रामकता वास्तव में क्रोध की परिणति है। क्रोध एक अत्यधिक प्रचलित संवेग है। जब क्रोध क्षणिक होता है, तो तात्कालिक स्थिति के समाप्त होने पर तुरंत समाप्त हो जाता है, किन्तु क्रोध के दीर्घकालिक एवं प्रबल होने की दशा में व्यक्ति उत्तेजित होकर शारीरिक अथवा शाब्दिक असामान्यताओं को प्रदर्शित करता है, जैसे–चिल्लाना, मारना–पीटना, चीजें उठाकर फेंकना, अपमानजनक शब्दों का प्रयोग करना आदि।

किशोरों में आक्रामकता अधिकाँशतः अपने माता–पिता के व्यवहार के विरूद्ध प्रदर्शित होती है। जब किशोरों को माता–पिता का पर्याप्त स्नेह एवं सहयोग नहीं मिल पाता है, तो वे अपने क्रोध को आक्रामकता के रूप में प्रदर्शित करते हैं।

यंग, मिलर, नॉर्टन एवं हिल (1995) ने अपने अध्ययन में पाया कि, माता–पिता के अपर्याप्त समर्थन से किशोरों में लड़ाई की भावना व आक्रामकता अधिक पाई जाती है। *– Journal of Marriage & The Family, 57, 813-822*

इस प्रकार पारिवारिक वातावरण एवं अभिभावकीय संबंध बालकों के व्यक्तित्व, व्यवहार, समायोजन, अभिवृत्ति, आक्रामकता आदि के साथ–साथ उनकी आत्म अवधारणा की भी नींव तैयार करते हैं।

वास्तव में स्वयं के संबंध में धारणाएँ विकसित करना ही आत्म अवधारणा कहलाती है। अर्थात् आत्म अवधारणा वे विश्वास हैं, जो व्यक्ति अपनी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक आदि विशेषताओं के आधार पर बनाते हैं। इसमें व्यक्ति की आकांक्षाएँ एवं उपलब्धियाँ सम्मिलित रहती हैं।

सुंदराजन, सबेसान एवं इथिराज (1994) ने अपने अध्ययन में देखा कि, माता–पिता का आर्थिक स्तर बालकों की आत्म अवधारणा से सार्थक रूप से सहसंबंधित है। जिन बालकों के माता–पिता उच्च आय वर्गीय थे, उनकी आत्म अवधारणा निम्न आय वर्गीय बालकों से उच्च पाई गई। *–Sixth Survey of Educational Research (308)*

5.3 समस्या का औचित्य

शोधकत्री द्वारा समस्या से संबंधित भारत एवं विदेशों में हुए अनेक शोधकार्यों का अध्ययन किया गया और देखा गया कि सामान्य किशोरों पर अनेक शोध अध्ययन हुए हैं, किन्तु विकलांग किशोरों, विशेषकर मूक–बधिर किशोरों से संबंधित शोध अध्ययनों की संख्या नगण्य ही है।

साथ ही मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों को अन्य सामान्य किशोरों एवं किशोरियों के समान ही सहभागित्व प्रदान करने, उनमें उत्पन्न असंतोष, कुसमायोजन, कुण्ठा एवं आक्रामकता जैसी समस्याओं का निवारण करने तथा मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों में उनकी शिक्षा व भविष्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने हेतु शोधकत्री ने मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अध्ययन की योजना बनाई।

5.4 समस्या कथन

''मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकीय संबंधों का उनके समायोजन, आक्रामकता एवं आत्म अवधारणा पर प्रभाव का एक अध्ययन''

5.5 शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रत्येक शोधकर्ता अपने कार्य की प्रगति एवं सफलता हेतु शोध उद्‌देश्यों के अनुसार योजनाबद्ध कार्य करता है। अतः शोध के उद्‌देश्य निर्धारित करना अत्यंत आवश्यक है। प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्‌देश्य निर्धारित किए गए :

1. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके पिता के साथ संबंधों का अध्ययन करना।
2. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनकी माता के साथ संबंधों का अध्ययन करना।
3. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों का अध्ययन करना।
4. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के गृह समायोजन का अध्ययन करना।

5. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के स्वास्थ्य समायोजन का अध्ययन करना।

6. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के सामाजिक समायोजन का अध्ययन करना।

7. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन करना।

8. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के आक्रामकता स्तर का अध्ययन करना।

9. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की आत्म अवधारणा का अध्ययन करना।

10. मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

11. मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

12. मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

13. मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

14. मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

15. मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

16. मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

17. मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

18. मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

19. मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

20. मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

21. मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

22. मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

23. मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

24. मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

25. मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

26. मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

27. मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

28. मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

29. मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

30. मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

31. मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

32. मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

33. मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

34. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

35. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

36. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

37. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

38. मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

39. मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

40. मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

41. मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

42. मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

43. मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

44. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

45. मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

46. मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

47. मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

48. मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

49. मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

50. मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

51. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों (माता एवं पिता) के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

5.6 शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकत्री द्वारा अपनी कल्पना, अध्ययन तथा परिस्थितियों पर आलोचनात्मक दृष्टि से विचार करते हुए निम्न शून्य परिकल्पनाएँ निर्मित की गई :

1. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके पिता के साथ संबंधों में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके माता के साथ संबंधों में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
3. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके अभिभावकों के साथ संबंधों में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
4. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के गृह समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
5. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के स्वास्थ्य समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
6. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
7. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के संवेगात्मक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
8. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के आक्रामकता स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
9. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की आत्म अवधारणा में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
10. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

11. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

12. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

13. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

14. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

15. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

16. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

17. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

18. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

19. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

20. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

21. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

22. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

23. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

24. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

25. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

26. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

27. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

28. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

29. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

30. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

31. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

32. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों व उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

33. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

34. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

35. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

36. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

37. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

38. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

39. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

40. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

41. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

42. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

43. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

44. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

45. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

46. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

47. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्मअवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

48. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

49. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

50. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

51. 0.05 सार्थकता स्तर पर मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

5.7 शोध अध्ययन का परिसीमन

कोई शोधकर्ता कितना भी उत्साही क्यों न हो, शोध कार्य में परिसीमाओं का बंधन अनिवार्य है। परिसीमन, विषय पक्ष, जनसंख्या, शोध के चर, भौगोलिक विस्तार, मापन–उपकरण आदि किसी भी एक बिन्दु अथवा अनेक बिन्दुओं से संबंधित हो सकता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन को शोधकत्री द्वारा निम्न बिन्दुओं पर परिसीमित किया गया है :

1. **भौगोलिक विस्तार** – शोधकार्य राजस्थान राज्य के कोटा, जयपुर तथा उदयपुर शहरों तक सीमित रखा गया है।
2. **जनसंख्या** – शोधकार्य मूक–बधिर विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के किशोरों एवं किशोरियों तक सीमित रखा गया है।
3. **न्यादर्श** – शोधकार्य हेतु न्यादर्श 300 मूक–बधिर विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है, जिसमें 150 किशोर एवं 150 किशोरियाँ हैं।
4. **चर –** शोधकार्य को स्वतंत्र चर के अंतर्गत किशोर–अभिभावक संबंध एवं आश्रित चर के अंतर्गत समायोजन, आक्रामकता एवं आत्म अवधारणा तक सीमित रखा गया है।
5. **मापन उपकरण** – शोध कार्य को तीन मानकीकृत एवं एक स्व–निर्मित उपकरण के प्रयोग द्वारा परिसीमित किया गया है।

5.8 जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोधकार्य में कोटा, जयपुर, एवं उदयपुर के मूक–बधिर विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के किशोरों एवं किशोरियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया।

तालिका 5.1

प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श चयन

शहर	कोटा		जयपुर		उदयपुर	
लिंग	किशोर	किशोरियाँ	किशोर	किशोरियाँ	किशोर	किशोरियाँ
संख्या	50	50	50	50	50	50
न्यादर्श	100		100		100	
कुल न्यादर्श	300					

5.9 शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकत्री द्वारा निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है :

1. Parent-Child Relationship Scale : Dr. Nalini Rao

यह एक मानकीकृत परीक्षण है, जो अभिभावक बालक संबंधों का अध्ययन निम्नलिखित दस आयामों के मापन द्वारा करता है –Protecting, Symbolic Punishment, Rejecting, Object Punishment, Demanding, Indifferent, Symbolic Reward, Loving, Object Reward & Neglecting.

परीक्षण में कुल 100 प्रश्न दिए गए हैं, जिसमें प्रत्येक आयाम के 10 प्रश्न सम्मिलित हैं। परीक्षार्थी को प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अपने माता एवं पिता दोनों के व्यवहार के संबंध में अलग–अलग देना पड़ता है। परीक्षार्थी को प्रत्येक प्रश्न में पूछी गई बात, यदि अपने माता एवं पिता के व्यवहार में हर बार दिखाई देती है, तो वे उन्हें 5 अंक देते हैं। बहुत बार दिखाई देने पर 4 अंक, कभी–कभी दिखने पर 3 अंक, कम दिखने पर 2 अंक तथा बहुत कम दिखाई देने पर 1 अंक देते हैं।

2. Bell's Adjustment Inventory : Dr. R.K. Ojha

यह एक मानकीकृत परीक्षण है, जो समायोजन का मापन चार विभिन्न क्षेत्रों के अंतर्गत करता है – गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन।

परीक्षण में प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित 35 प्रश्न दिए गए हैं। इस प्रकार परीक्षण में कुल 140 प्रश्न हैं। परीक्षार्थी को अपने उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में देना होता है।

यह परीक्षण नकारात्मक अंकन प्रणाली पर आधारित है अर्थात् परीक्षार्थी द्वारा दिया गया 'हाँ' प्रत्युत्तर उसकी समायोजन समस्या की ओर संकेत करता है। अतः परीक्षार्थी के उच्च प्राप्तांक उसके समायोजन स्तर को निम्न बनाते हैं।

3. Self-Concept Questionnaire : Dr. Raj Kumar Saraswat

यह एक मानकीकृत परीक्षण है, जो आत्म अवधारणा का मापन–शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक, शैक्षिक, नैतिक व बौद्धिक, छः विभिन्न आयामों पर करता है।

परीक्षण में कुल 48 पद हैं। प्रत्येक आयाम से संबंधित 8 पद हैं। यह परीक्षण पाँच बिन्दु मापनी पर आधारित है। परीक्षार्थी को पाँच विकल्पों में से किसी एक विकल्प को चुनना होता है।

4. आक्रामकता मापनी –

यह परीक्षण शोधकत्री द्वारा स्वयं निर्मित परीक्षण है, जिसकी रचना आक्रामकता स्तर के मापन हेतु की गई है। इसका विश्वसनीयता गुणांक अर्द्ध विच्छेद विधि द्वारा 0.83 प्राप्त हुआ।

परीक्षण में कुल 50 पद हैं। यह पाँच बिन्दु मापनी पर आधारित परीक्षण हैं। परीक्षार्थी को पाँच विकल्पों से किसी एक विकल्प का अपने उत्तर के रूप में चयन करना होता है।

5.10 शोध अध्ययन विधि

शोधकत्री ने अपनी समस्या को दृष्टिगत रखते हुए संदर्भ साहित्य एवं शोध विधियों के अध्ययन द्वारा सर्वेक्षण विधि को ही अपने शोध अध्ययन हेतु उपयुक्त पाया।

5.11 शोध अध्ययन में प्रयुक्त विश्लेषण प्रक्रिया

प्रस्तुत शोधकार्य में चयनित न्यादर्श पर अभिभावक–बालक संबंध, समायोजन, आक्रामकता एवं आत्म अवधारणा संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षणों को प्रशासित कर

प्राप्त समंकों को वर्गीकृत एवं सारणीकृत करने के पश्चात् विभिन्न सांख्यिकी तकनीकियों, यथा—मध्यमान, मानक विचलन, टी—परीक्षण एवं कार्ल पियर्सन की प्रोडक्ट मोमेण्ट सहसंबंध गुणांक विधि का प्रयोग किया गया।

5.12 संबंधित साहित्य का अध्ययन

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकत्री द्वारा संबंधित साहित्य के निम्नलिखित अध्ययनों को सम्मिलित किया गया :

1. सभी चरों के सम्मिलित रूप में – 10 अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अध्ययन।
2. किशोर—अभिभावक संबंध – 10 राष्ट्रीय स्तर के अध्ययन।
3. समायोजन – 10 राष्ट्रीय स्तर के अध्ययन।
4. आक्रामकता– 10 राष्ट्रीय स्तर के अध्ययन।
5. आत्म अवधारणा – 10 राष्ट्रीय स्तर के अध्ययन।

5.13 प्रस्तुत शोध अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष एवं उनकी विवेचना

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यवार मुख्य निष्कर्ष व उनकी विवेचना निम्ननुसार है :

उद्देश्य 1 मूक—बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके पिता के साथ संबंधों का अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक—बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके पिता के साथ संबंधों में सार्थक अंतर होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक—बधिर किशोरों एवं किशोरियों के पिता के साथ संबंधों में सार्थक अन्तर नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके पिता के साथ संबंधों में सार्थक अंतर होता है। किशोरियों का अधिक मध्यमान यह दर्शाता है कि, पिता अपने पुत्रों की अपेक्षा पुत्रियों से अधिक लगाव रखते हैं और उनका व्यवहार भी पुत्रियों के प्रति अधिक लचीला, स्नेहपूर्ण एवं सुरक्षात्मक होता है। पुत्रियाँ भी पिता से ज्यादा स्नेह प्राप्त करने के कारण उनसे भावात्मक रूप से अधिक जुड़ी होती हैं। अतः पिता–पुत्री के मध्य स्थापित संबंध, पिता–पुत्र संबंधों की अपेक्षा अधिक मधुर एवं स्नेहपूर्ण होते हैं।

उद्देश्य 2 मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनकी माता के साथ संबंधों का अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनकी माता के साथ संबंधों में सार्थक अंतर नहीं होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के माता के साथ संबंधों में सार्थक अन्तर नहीं होता है'' को स्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनकी माता के साथ संबंधों में सार्थक अंतर नहीं होता है। क्योंकि मूक–बधिर किशोर एवं किशोरियाँ दोनों ही समान शारीरिक दोष से ग्रसित होते हैं व समान कठिनाइयों का सामना करते हैं और माता के लिए शारीरिक दोष से ग्रसित पुत्र एवं पुत्री दोनों ही समान महत्व रखते हैं। अतः माता का स्नेह अथवा क्रोध मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों दोनों के प्रति समान ही होता है।

उद्देश्य 3 मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके अभिभावकों के साथ संबंधों का अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके अभिभावकों के साथ संबंधों में सार्थक अंतर नहीं होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं

किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों में सार्थक अन्तर नहीं होता है'' को स्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके अभिभावकों के साथ संबंधों में सार्थक अंतर नहीं होता है। चूँकि मूक–बधिर किशोर एवं किशोरियाँ समान शारीरिक विकलांगता का शिकार होते हैं तथा अभिभावकों के लिए शारीरिक विकलांग पुत्र एवं पुत्री दोनों ही बराबर होते हैं। अतः अभिभावकों का मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के प्रति व्यवहार समान होता है।

उद्‌देश्य 4 मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के गृह समायोजन का अध्ययन करना।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके गृह समायोजन में सार्थक अंतर नहीं होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के गृह समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है'' को स्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के गृह समायोजन में सार्थक अंतर नहीं होता है। चूँकि मूक–बधिर किशोर एवं किशोरियाँ दोनों ही शारीरिक रूप से विकलांग होते हैं व अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपने माता–पिता पर निर्भर करते हैं। अतः मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के प्रति उनके अभिभावकों की स्नेह एवं सहानुभूति हो अथवा उपेक्षा दोनों के लिए उनका व्यवहार समान ही होता है। जिससे दोनों के गृह समायोजन में भी अंतर नहीं होता है।

उद्‌देश्य 5 मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के स्वास्थ्य समायोजन का अध्ययन करना।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के उनके गृह समायोजन में सार्थक अंतर नहीं

होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के स्वास्थ्य समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है'' को स्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के स्वास्थ्य समायोजन में सार्थक अंतर नहीं होता है। मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की सुनने में अक्षमता कर्णेन्द्रिय में दोष के कारण उत्पन्न होती है, जिससे उन्हें कान मे ंदर्द होने, मवाद बहने जैसी शिकायतें बनी रहती हैं। चूँकि उनकी स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ समान होती हैं, अतः मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के स्वास्थ्य समायोजन में भी अंतर नहीं होता है।

उद्देश्य 6 मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के सामाजिक समायोजन का अध्ययन करना।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है'' को स्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं होता है। चूँकि मूक–बधिर किशोर एवं किशोरियाँ दोनों ही बोलने व सुनने में अक्षम होते हैं, जिससे उनकी सामाजिक अंतःक्रिया नहीं के बराबर होती हैं। लोगों के बीच जाने एवं उनके द्वारा उपहास उड़ाए जाने के डर से वे किसी भी सामाजिक गतिविधि में भाग नहीं लेते हैं। अतः मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों दोनों का ही सामाजिक समायोजन समान रूप से निम्न स्तरीय होता है।

उद्देश्य 7 मूक बधिर किशोरों एवं किशोरियों के संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन करना।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अंतर होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अंतर होता है। चूँकि पुरूषों की तुलना में स्त्रियाँ अधिक भावुक व संवेदनशील होती हैं। माता–पिता, परिवार के अन्य सदस्यों, मित्रों, संबंधियों व समाज के अन्य व्यक्तियों का व्यवहार उन्हें पुरूषों की अपेक्षा अधिक प्रभावित करता है। अतः मूक–बधिर किशोरियाँ संवेगात्मक दृष्टि से किशोरों से भिन्नता रखती हैं एवं दोनों के संवेगात्मक समायोजन में भी अंतर होता है। मूक–बधिर किशोरियों का संवेगात्मक कुसमायोजन किशोरों से अधिक होता है।

उद्देश्य 8 मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के आक्रामकता स्तर का अध्ययन करना।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के आक्रामकता स्तर में सार्थक अंतर नहीं होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के आक्रामकता स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है'' को स्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के आक्रामकता स्तर में सार्थक अंतर नहीं होता है। क्योंकि मूक–बधिर किशोर एवं किशोरियाँ दोनों ही अपनी शारीरिक कमी को लेकर कुण्ठित रहते हैं तथा कुण्ठा उनके अंदर क्रोध, चिड़चिड़ाहट एवं आक्रामकता उत्पन्न करती है। अतः मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के आक्रामकता स्तर में कोई अंतर नहीं होता है।

उद्देश्य 9 मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की आत्म अवधारणा का अध्ययन करना।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की आत्म अवधारणा में सार्थक अंतर नहीं होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की आत्म अवधारणा में सार्थक अन्तर नहीं होता है'' को स्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की आत्म अवधारणा में सार्थक अंतर नहीं होता है। क्योंकि मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की शारीरिक विकलांगता, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनकी सफलता में बाधक बनती है। इससे दोनों में ही समान रूप से हीन भावना, कुण्ठा, निराशा, असंतोष, आत्म–विश्वास की कमी, कुसमायोजन आदि उत्पन्न हो जाते हैं। परिणामस्वरूप दोनों की ही स्वयं के प्रति धारणा निम्न स्तरीय होती है। अतः मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की आत्म अवधारणा में अंतर नहीं होता है।

उद्देश्य 10 मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। क्योंकि पिता का कठोर एवं कटु व्यवहार मूक–बधिर किशोरों में भय एवं असुरक्षा की भावना को जन्म देता है, जिससे वे घर में कुसमायोजित हो जाते हैं। अतः मूक–बधिर

किशोरों के पिता के साथ संबंधों में कटुता बढ़ने पर उनके गृह समायोजन में कमी होती है। जबकि संबंधों में कटुता में कमी होने पर किशोरों के गृह समायोजन में वृद्धि होती है।

उद्देश्य 11 मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि मूक–बधिर किशोरों के कर्ण–दोष के कारण उन्हें समय–समय पर चिकित्सकीय परामर्श उपलब्ध कराना आवश्यक होता है। किन्तु पिता की मूक–बधिर किशोरों के स्वास्थ्य के प्रति की गई लापरवाही किशोरों को स्वास्थ्य के प्रति कुसमायोजित बना देती है। अतः मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों में तनाव बढ़ने पर उनका स्वास्थ्य समायोजन निम्न हो जाता है। जबकि संबंधों में तनाव कम होने पर किशोरों का स्वास्थ्य समायोजन बढ़ जाता है।

उद्देश्य 12 मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर

किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि मूक–बधिर किशोर बोल व सुन नहीं सकते अतः पिता उन्हें सामाजिक गतिविधियों में सम्मिलित कराने से बचते हैं, जिससे वे सामाजिक रूप से कुसमायोजित हो जाते हैं। अर्थात् मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों में अस्वीकरण बढ़ने से किशोरों के सामाजिक समायोजन में कमी आती है। जबकि संबंधों में अस्वीकरण कम होने से किशोरों के सामाजिक समायोजन में वृद्धि होती है।

उद्देश्य 13 मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। क्योंकि पिता द्वारा मूक–बधिर किशोरों को प्यार, सुरक्षा एवं अपनत्व नहीं मिलने पर वे संवेगात्मक रूप से कमजोर हो जाते हैं। अर्थात् मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों में उपेक्षा बढ़ने पर संवेगात्मक समायोजन निम्न स्तरीय हो जाता है। जबकि उपेक्षा नहीं होने पर किशोरों का संवेगात्मक समायोजन उच्च स्तरीय हो जाता है।

उद्देश्य 14 मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि मूक–बधिर किशोर अपनी बात कह पाने और दूसरों की बात सुनने में असमर्थ होते हैं। अतः उनके मनोभावों को धैर्य पूर्वक समझना एवं स्नेह प्रदर्शित करना अत्यंत आवश्यक होता है। किन्तु माता का स्नेह रिक्त होकर मूक–बधिर किशोरों के प्रति कठोर व्यवहार करने से किशोर घर में कुसमायोजित हो जाते हैं। अर्थात् माता के साथ मूक बधिर किशोरों के संबंधों में कठोरता बढ़ने पर किशोरों का गृह समायोजन कम हो जाता है। जबकि संबंधों में कठोरता कम होने पर किशोरों का गृह समायोजन बढ़ जाता है।

उद्देश्य 15 मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि

मूक–बधिर किशोर सामान्य किशोरों की तुलना में माता पर अधिक निर्भर रहते हैं, तो माता की उनके स्वास्थ्य के प्रति जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है। किन्तु माता की किशोरों के स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही, पोषण का अभाव, देखभाल में कमी आदि मूक–बधिर किशोरों को स्वास्थ्य के प्रति कुसमायोजित बना देते हैं। अतः मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों में उदासीनता बढ़ने से किशोरों का स्वास्थ्य समायोजन कम हो जाता है। जबकि संबंधों में उदासीनता नहीं रहने पर किशोरों का स्वास्थ्य समायोजन बढ़ जाता है।

उद्देश्य 16 मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि घर में बच्चों को अनुशासन, अच्छी आदतें व समाज में रहने के तौर–तरीके सिखाकर उन्हें समाज सम्मत् नागरिक बनाना माता की ही जिममेदारी है। किन्तु माता द्वारा मूक–बधिर किशोरों को सामाजिक क्रियाकलापों से दूर रखने पर उनमें सामाजिक गुणों का विकास नहीं हो पाता है, परिणामस्वरूप वे सामाजिक रूप से कुसमायोजित हो जाते हैं। अर्थात् मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों में तिरस्कृत भावना बढ़ने पर किशोरों का सामाजिक समायोजन कम हो जाता है। जबकि तिरस्कृत नहीं होने पर किशोरों का सामाजिक समायोजन बढ़ जाता है।

उद्देश्य 17 मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि मूक–बधिर किशोरों के मनोभावों, संवेदनाओं एवं आवश्यकताओं को जितना माता समझ सकती है, उतना अन्य कोई नहीं। किन्तु माता द्वारा किशोरों की संवेदनाओं को न समझ पाने पर किशोर संवेगात्मक रूप से कुसमायोजित हो जाते हैं। अतः मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों में असंवेदनशीलता बढ़ने पर किशोरों के संवेगात्मक समायोजन में कमी आ जाती है। जबकि संबंधों में असंवेदनशीलता कम होने पर किशोरों के संवेगात्मक समायोजन में वृद्धि होती है।

उद्देश्य 18 मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि घर में माता एवं पिता दोनों का व्यवहार ही बच्चों के व्यवहार, व्यक्तित्व, समायोजन आदि

को प्रभावित करता है। एक ओर जहाँ पिता का स्नेह उन्हें सुरक्षा का एहसास कराता है, वहीं दूसरी ओर माता का अपनत्व एवं प्यार उनकी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। किन्तु अभिभावकों का मूक–बधिर किशोरों के प्रति कठोर एवं तिरस्कृत व्यवहार किशोरों को घर में कुसमायोजित बना देता है। अर्थात् मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों में असंतोष बढ़ने पर किशोरों के गृह समायोजन में कमी आ जाती है। जबकि संबंधों में असंतोष नहीं होने पर किशोरों का गृह समायोजन बढ़ जाता है।

उद्देश्य 19 मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि मूक–बधिर किशोरों की शारीरिक विकलांगता के कारण अभिभावकों का उनके स्वास्थ्य के प्रति सजग रहना अत्यंत आवश्यक है। अतः पिता द्वारा उन्हें चिकित्सकीय परामर्श उपलब्ध कराना एवं माता द्वारा उनके सुपोषण, स्वच्छता आदि का ध्यान रखना जरूरी है। किन्तु अभिभावकों के मूक–बधिर किशोरों के साथ संबंधों में कटुता आने पर उनकी, किशोरों के स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही बढ़ जाती है। जिससे किशोरों का स्वास्थ्य समायोजन कम हो जाता है। जबकि संबंधों में कटुता कम होने पर किशोरों का स्वास्थ्य समायोजन बढ़ जाता है।

उद्देश्य 20 मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि किशोरों का सामाजिक समायोजन इस बात पर निर्भर करता है कि उनकी सामाजिक गतिविधियाँ किस प्रकार की हैं। अतः मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों द्वारा उन्हें सामाजिक गतिविधियों से दूर रखने की स्थिति में किशोर सामाजिक रूप से कुसमायोजित हो जाते हैं। अर्थात् मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों द्वारा किशोरों की शारीरिक स्थिति पर समाज में लज्जा का अनुभव करने पर किशोरों के साथ उनके संबंधों में अस्वीकरण बढ़ जाता है। जिससे किशोरों का सामाजिक समायोजन निम्न हो जाता है। जबकि अस्वीकरण कम होने पर किशोरों का सामाजिक समायोजन उच्च हो जाता है।

उद्देश्य 21 मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि किशोरावस्था एक ऐसी अवस्था है, जिसमें संवेगात्मक अस्थिरता उच्च स्तर की होती है और जब किशोर किसी शारीरिक विकलांगता का शिकार हो, तो संवेगात्मक अस्थिरता और बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में माता–पिता का मूक–बधिर किशोरों के प्रति कठोर एवं असहयोगात्मक व्यवहार किशोरों को चिड़चिड़ा, क्रोधी एवं संवेगात्मक रूप से कुसमायोजित बना देता है। अर्थात् मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों में कठोरता बढ़ने पर संवेगात्मक समायोजन निम्न हो जाता है। जबकि संबंधों में कठोरता कम होने से किशोरों का संवेगात्मक समायोजन उच्च हो जाता है।

उद्देश्य 22 मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि पिता द्वारा अपनी पुत्रियों के प्रति स्नेह प्रदर्शित करने से पुत्रियों को सुरक्षा का एहसास होता है। किन्तु पिता–पुत्री के मध्य संबंधों में दूरी आने से किशोरियाँ स्वयं को असुरक्षित एवं तिरस्कृत महसूस करती हैं तथा घर में कुसमायोजित हो जाती है। अतः मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों में तिरस्कृत भावना की वृद्धि से किशोरियों के गृह समायोजन में कमी आती है। जबकि तिरस्कार नहीं होने से किशोरियों के गृह समायोजन में वृद्धि होती है।

उद्देश्य 23 मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि मूक–बधिर किशोरियों को कर्ण दोष के कारण कान में दर्द होने तथा मवाद बहने जैसे शिकायतें हो जाती हैं। अतः पिता द्वारा उन्हें समय–समय पर चिकित्सकीय परामर्श दिलाना आवश्यक होता है। किन्तु पिता–पुत्री के मध्य संबंधों में भावनात्मकता की कमी आ जाने से पिता द्वारा किशोरियों के स्वास्थ्य के प्रति की गई लापरवाही उन्हें स्वास्थ्य के प्रति कुसमायोजित बना देती है। अर्थात् मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों में अवहेलना बढ़ने पर उनका स्वास्थ्य समायोजन कम हो जाता है। जबकि अवहेलना नहीं होने पर किशोरियों का स्वास्थ्य समायोजन बढ़ जाता है।

उद्देश्य 24 मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि अधिकांश भारतीय परिवारों में पुत्रियों को सुरक्षात्मक दृष्टि से सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी हेतु पिता की अनुमति नहीं मिल पाती है। अतः पिता–पुत्री के मध्य संबंधों में कटुता आ जाती है, जिसके परिणामस्वरूप पुत्रियाँ सामाजिक रूप से कुसमायोजित हो जाती है। अर्थात् मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों में कटुता बढ़ने पर उनके सामाजिक समायोजन में कमी आती है। जबकि कटुता नहीं होने पर किशोरियों का सामाजिक समायोजन बढ़ जाता है।

उद्देश्य 25 मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि परिवार में सुख–सुविधाएँ उपलब्ध कराना एवं बच्चों की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति करना पिता का दायित्व होता है। पिता द्वारा मूक–बधिर किशोरियों की आवश्यकताओं को नजर अंदाज करने से, वे असंतुष्ट, नाराज़ एवं चिड़चिड़ी हो जाती हैं, जिससे पिता–पुत्री के मध्य संबंध द्वेषपूर्ण हो जाते हैं। परिणामस्वरूप मूक–बधिर किशोरियाँ संवेगात्मक रूप से कुसमायोजित हो जाती हैं। अर्थात् मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों में द्वेषता बढ़ने पर उनका संवेगात्मक समायोजन निम्न हो जाता है। जबकि द्वेषपूर्ण संबंध नहीं होने पर किशोरियों का संवेगात्मक समायोजन उच्च हो जाता है।

उद्देश्य 26 मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि किशोरावस्था में प्रत्येक माता का अपनी पुत्रियों को स्नेह एवं धैर्य के साथ विभिन्न घरेलू कार्यों में दक्ष बनाने का दायित्व होता है। किन्तु मूक–बधिर किशोरियों की शारीरिक कमी के कारण माता का उन्हें हेय दृष्टि से देखना व उनके प्रति भेदभावपूर्ण व्यवहार करना किशोरियों को घर में कुसमायोजित बना देता है। अर्थात् मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों में पक्षपात बढ़ने पर उनका गृह समायोजन निम्न हो जाता है। जबकि पक्षपातपूर्ण संबंध नहीं होने पर किशोरियों का गृह समायोजन उच्च हो जाता है।

उद्देश्य 27 मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि किशोरावस्था में किशोरियों में अनेक शारीरिक परिवर्तन होते हैं, जिससे उन्हें कई स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। और यदि किशोरियाँ मूक–बधिर जैसी शारीरिक विकलांगता का शिकार हों, तो उनकी समस्याएँ और बढ़ जाती हैं। ऐसी स्थिति में किशोरियों को अपनी माता के स्नेह एवं सहयोग की सर्वाधिक आवश्यकता होती हैं। किन्तु मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ असहयोगपूर्ण संबंधों के कारण माता किशोरियों के सुपोषण, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही प्रदर्शित करती हैं। अर्थात् मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों में असहयोग बढ़ने पर उनका स्वास्थ्य समायोजन कम हो जाता है। जबकि असहयोगात्मक संबंध नहीं होने पर किशोरियों का स्वास्थ्य समायोजन बढ़ जाता है।

उद्देश्य 28 मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि परिवारों में बच्चों को सामाजिक व्यवहार कुशलताएँ सिखाना एवं सामाजिक गुणों का विकास करना माता का ही दायित्व होता है। किन्तु मूक–बधिर किशोरियों की शारीरिक कमी को देखते हुए माताएँ अपने इस दायित्व का पूरा नहीं करती हैं। जिसके परिणामस्वरूप मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों में दूरी आ जाती है और वे सामाजिक रूप से कुसमायोजित हो जाती हैं। अर्थात् मूक–बधिर

किशोरियों के माता के साथ संबंधों में दूरियाँ बढ़ने पर उनका सामाजिक समायोजन कम हो जाता है। जबकि दूरियाँ कम होने पर किशोरियों का सामाजिक समायोजन बढ़ जाता है।

उद्देश्य 29 मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विववेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि अपने बच्चों की भावनाओं, संवेदनाओं, पसंद–नापसंद आदि को जितना माता समझ सकती है, उतना अन्य कोई नहीं। किन्तु मूक बधिर किशोरियों की शारीरिक कमी के कारण माता द्वारा उन्हें हीनता का अनुभव कराना, ताना देना आदि, दोनों के मध्य संबंधों को तनावपूर्ण बना देता है। जिसके परिणामस्वरूप किशोरियाँ क्रोध, चिड़चिड़ाहट आदि संवेगों को प्रदर्शित करती हैं व संवेगात्मक रूप से कुसमायोजित हो जाती है। अर्थात् मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों में तनाव बढ़ने पर उनका संवेगात्मक समायोजन निम्न हो जाता है। जबकि संबंधों में तनाव कम होने पर किशोरियों का संवेगात्मक समायोजन उच्च हो जाता है।

उद्देश्य 30 मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के

मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह–समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि अधिकाँश भारतीय परिवारों में पुत्री की अपेक्षा पुत्र की चाह होती है। किन्तु पुत्र के स्थान पर पुत्री के जन्म लेने पर माता–पिता का व्यवहार पुत्रियों के प्रति उदासीन हो जाता है और यदि पुत्री किसी शारीरिक दोष से ग्रसित हो तो अभिभावकों के साथ उसके संबंधों में उपेक्षा बढ़ जाती है। परिणामस्वरूप मूक–बधिर किशोरियाँ घर में कुसमायोजित हो जाती है। अर्थात् मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों में उपेक्षा बढ़ने पर उनका गृह समायोजन निम्न हो जाता है। जबकि उपेक्षापूर्ण संबंध नहीं होने पर किशोरियों का गृह समायोजन उच्च हो जाता है।

उद्देश्य 31 मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि मूक–बधिर किशोरियों की शारीरिक विकलांगता के कारण उन्हें स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ बनी रहती हैं, साथ ही किशोरावस्था में हुए शारीरिक परिवर्तनों के कारण भी उनका स्वास्थ्य प्रभावित होता है। ऐसी स्थिति में माता एवं पिता दोनों का किशोरियों के स्वास्थ्य के प्रति सजग रहना आवश्यक है। एक ओर जहाँ पिता का

दायित्व उन्हें समस्या होने पर चिकित्सक के पास ले जाने का है, वहीं दूसरी ओर माता का दायित्व उनके सुपोषण, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य का ध्यान रखना है। किन्तु मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों में कटुता बढ़ने पर वे अपने दायित्वों की पूर्ति नहीं करते, जिससे किशोरियों का स्वास्थ्य के प्रति समायोजन नहीं हो पाता है। जबकि संबंधों में कटुता नहीं होने पर किशोरियों का स्वास्थ्य समायोजन बढ़ जाता है।

उद्देश्य 32 मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। सामान्यतः यह देखा गया है कि, विकलांग व्यक्ति परिवार, विद्यालय एवं समाज में कम स्वीकार किये जाते हैं। ये अस्वीकृति उन्हें समाज में उपेक्षित बनाती है, जिससे उनमें सामाजिक कुसमायोजन आता है। मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों द्वारा भी उनकी विकलांगता को स्वीकृत नहीं करने के कारण दोनों के मध्य संबंध तनावपूर्ण हो जाते हैं। जिसका प्रभाव उनके सामाजिक समायोजन पर भी पड़ता है। अर्थात् मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों में अस्वीकरण बढ़ने पर किशोरियों का सामाजिक समायोजन निम्न हो जाता है। जबकि संबंधों में अस्वीकरण कम होने पर किशोरियों का सामाजिक समायोजन उच्च हो जाता है।

उद्देश्य 33 मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि किशोरियाँ, किशोरों की तुलना में अधिक संवेदनशील व भावुक होती हैं, अतः अभिभावकों द्वारा मूक–बधिर किशोरियों के प्रति किया गया पक्षपातपूर्ण, कटाक्षयुक्त एवं असहयोगात्मक व्यवहार उन्हें संवेगात्मक रूप से कुसमायोजित बना देता है। अर्थात् मूक–बधिर किशोरियों एवं अभिभावकों के मध्य संबंधों में तनाव की उच्चता, किशोरियों के संवेगात्मक समायोजन को निम्न स्तरीय बना देते हैं। जबकि संबंधों में तनाव की निम्नता किशोरियों के संवेगात्मक समायोजन को उच्च स्तरीय बनाते है।

उद्देश्य 34 मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके गृह समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि मूक–बधिर किशोर एवं किशोरियाँ शारीरिक न्यूनता का शिकार होते हैं, अतः अभिभावकों का उनके प्रति व्यवहार सामान्य नहीं रह पाता है। कभी वे उनके प्रति उपेक्षा का व्यवहार करते हैं, तो कभी उन्हें अति–सुरक्षा (over protection) प्रदान करते हैं। दोनों ही स्थितियाँ सामान्य नहीं होने से मूक–बधिर किशोर एवं किशोरियाँ घर में कुसमायोजित होने लगते हैं। अर्थात् मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों में असंतोष बढ़ने पर उनका गृह समायोजन निम्न हो जाता है। जबकि संबंधों में असंतोष कम होने पर उनका गृह समायोजन उच्च होता है।

उद्देश्य 35 मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, "मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है" को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके स्वास्थ्य समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि मूक–बधिर किशोर एवं किशोरियाँ कर्ण–दोष से ग्रसित होते हैं, जिससे उन्हें स्वास्थ्य संबंधी शिकायतें बनी रहती हैं। ऐसी स्थिति में अभिभावकों द्वारा उनके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता होती है। किन्तु अभिभावकों द्वारा उनकी उचित देखभाल नहीं करने, उनके स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही बरतने एवं समय पर उन्हें चिकित्सा उपलब्ध नहीं कराने पर मूक–बधिर

किशोरों एवं किशोरियों का स्वास्थ्य कुसमायोजन बढ़ जाता है। अर्थात् मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों में लापरवाही बढ़ने पर उनका स्वास्थ्य समायोजन बिगड़ जाता है। जबकि लापरवाही नहीं होने पर किशोरों एवं किशोरियों का स्वास्थ्य समायोजन अच्छा बना रहता है।

उद्देश्य 36 मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके सामाजिक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध है। चूँकि मूक–बधिर किशोर एवं किशोरियाँ सामान्य बच्चों की भाँति बोल एवं सुन नहीं पाते हैं, तो समाज में उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता है तथा वे उपहास का केन्द्र बन जाते हैं। अतः उनके अभिभावक उन्हें लेकर समाज में लज्जा का अनुभव करते हैं। परिणामस्वरूप वे उन्हें सामाजिक क्रियाकलापों से दूर रखते हैं। जिससे मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की सामाजिक अंतःक्रिया न के बराबर होती है और वे सामाजिक कुसमायोजन का शिकार हो जाते हैं। अर्थात् मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों में अस्वीकरण बढ़ने पर उनका सामाजिक समायोजन स्तर निम्न हो जाता है। जबकि अस्वीकरण नहीं होने पर किशोरों एवं किशोरियों का सामाजिक समायोजन उच्च हो जाता है।

उद्देश्य 37 मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके संवेगात्मक समायोजन के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि अधिकाँश परिवारों में बालकों की किसी भी प्रकार की शारीरिक–मानसिक अक्षमता को अभिभावक स्वीकार नहीं कर पाते। परिणामस्वरूप वे मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की उपेक्षा करते हैं, बात–बात पर उन्हें डाँटते व झिड़कते हैं, उन्हें दण्ड देते हैं, उनकी तुलना अन्य बालकों से करके, उन्हें हीनता का अनुभव कराते हैं तथा कभी–कभी मजाक भी उड़ा देते हैं। ऐसी स्थिति में मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों तथा उनके अभिभावकों के मध्य संबंधों में कटुता बढ़ जाती है। जिसके परिणामस्वरूप उनका संवेगात्मक समायोजन निम्न हो जाता हैं। जबकि संबंधों में कटुता नहीं होने पर किशोरों एवं किशोरियों का संवेगात्मक समायोजन उच्च होता है।

उद्देश्य 38 मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर

किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि किशोरावस्था में प्रवेश करने के पश्चात् किशोरों के पिता उनसे परिपक्व व्यवहार एवं उत्तरदायित्व वहन करने की अपेक्षा करने लगते हैं। किन्तु मूक–बधिर किशोर अपनी शारीरिक अक्षमता के कारण पिता की अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर पाते। जिससे व्यथित होकर कभी–कभी पिता असंयमित व्यवहार प्रदर्शित कर किशोरों के प्रति क्रोध की अभिव्यक्ति कर देते हैं। मूक–बधिर किशोर पिता के इस व्यवहार के बदले स्वयं भी क्रोध एवं आक्रामकता प्रदर्शित करते हैं, जैसे – छोटे भाई–बहनों को मारना, वस्तुएँ फेंकना, तोड़फोड़ करना आदि। अर्थात् मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों में सामंजस्य की कमी होने पर आक्रामकता स्तर उच्च हो जाता है। जबकि संबंधों में सामंजस्य बढ़ने पर किशोरों का आक्रामकता स्तर निम्न होता है।

उद्देश्य 39 मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। क्योंकि किशोरावस्था में प्रवेश के साथ ही किशोर स्वयं को बड़ा समझने लगते हैं व परिवार के सदस्यों से भी यह अपेक्षा करते हैं कि, वे उन्हें अपने निर्णय स्वयं लेने की स्वतंत्रता प्रदान करें तथा उनकी बातों में रोक–टोक न करें। किन्तु मूक–बधिर

किशोरों की शारीरिक अक्षमता को देखते हुए माता द्वारा किए गए अतिरक्षण व्यवहार (over protecting behaviour) अथवा न्यून रक्षण व्यवहार (less protecting behaviour) से किशोर संतुष्ट नहीं हो पाते। परिणामस्वरूप वे आक्रामक व्यवहार को प्रदर्शित करके अपने क्रोध की अभिव्यक्ति करते हैं। अर्थात् मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों में संतोष कम होने पर उनका आक्रामकता स्तर बढ़ जाता है। जबकि संबंधों में संतुष्टि बढ़ने पर किशोरों का आक्रामकता स्तर कम होता है।

उद्देश्य 40 मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि मूक–बधिर किशोरों की शारीरिक अक्षमता के कारण माता–पिता तनाव में रहते हैं। परिणामस्वरूप वे किशोरों को ताने मारना, अपमान करना, शारीरिक दण्ड देना आदि व्यवहार प्रदर्शित कर देते हैं। अभिभावकों का ये व्यवहार मूक–बधिर किशोरों को हिंसक बना देता है। और वे अपने क्रोध की अभिव्यक्ति तोड़फोड़ करके, छोटे भाई बहनों को पीटकर, आदि रूप में करते हैं। अर्थात् मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों में अपनत्व की कमी आक्रामकता स्तर को बढ़ा देती है। जबकि संबंधों में अपनत्व की वृद्धि किशोरों के आक्रामकता स्तर को कम कर देती है।

उद्देश्य 41 मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। क्योंकि कभी–कभी पिता मूक–बधिर किशोरियों की शारीरिक विकलांगता को स्वीकार नहीं कर पाते हैं। परिणास्वरूप वे किशोरियों के प्रति उपेक्षित व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। पिता से पर्याप्त स्नेह, देखभाल एवं मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति न हो पाने के कारण, मूक–बधिर किशोरियाँ स्वयं अथवा दूसरों को नुकसान पहुँचाकर क्रोध की अभिव्यक्ति करती हैं। अर्थात् मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों में स्नेह एवं भावनात्मकता की कमी होने से उनका आक्रामकता स्तर उच्च हो जाता है। जबकि दोनों के मध्य संबंधों में स्नेह एवं भावनात्मकता बढ़ने से किशोरियों का आक्रामकता स्तर निम्न हो जाता है।

उद्देश्य 42 मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। क्योंकि किशोरावस्था में प्रवेश के पश्चात् माता किशोरियों से परिपक्व व्यवहार, अनुशासन, दैनिक कार्यों में सहयोग आदि की अपेक्षा करती हैं। किन्तु मूक–बधिर किशोरियाँ अपनी शारीरिक अक्षमता के कारण उनकी अपेक्षाएँ पूर्ण नहीं कर पातीं, जिसके परिणामस्वरूप माताएँ उनके प्रति क्रोध, चिड़चिड़ाहट आदि का प्रदर्शन करने लगती हैं। मूक–बधिर किशोरियाँ माता के इस अप्रत्याशित व्यवहार के विरोधास्वरूप स्वयं भी क्रोध एवं आक्रामक व्यवहार का प्रदर्शन करती हैं। अर्थात् मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों में मधुरता कम होने से उनका आक्रामकता स्तर उच्च हो जाता है। जबकि संबंधों में मधुरता बढ़ने से किशोरियों का आक्रामकता स्तर निम्न हो जाता है।

उद्देश्य 43 मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। क्योंकि मूक–बधिर किशोरियों की शारीरिक अक्षमता के कारण माता–पिता उनकी शिक्षा, विवाह एवं भविष्य के प्रति चिंतित रहते हैं। उनकी चिंता एवं तनाव सीमा से अधिक हो जाने पर, वे इसकी अभिव्यक्ति किशोरियों को अपमानित करने, शारीरिक दण्ड देने आदि व्यवहार के रूप में करते हैं। अभिभावकों का यह व्यवहार मूक–बधिर किशोरियों को हीन भावना, व कुण्ठा से ग्रसित कर देता है, एवं कुण्ठा

उन्हें आक्रामकता हेतु प्रेरित करती है। अर्थात् मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों में अनुकूलता की कमी से उनका आक्रामकता स्तर बढ़ जाता है। जबकि संबंधों में अनुकूलता बढ़ने से किशोरियों का आक्रामकता स्तर कम हो जाता है।

उद्देश्य 44 मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनके आक्रामकता स्तर के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि मूक–बधिर किशोर एवं किशोरियाँ शारीरिक विकलांगता का शिकार होते हैं। अतः उनके अभिभावकों का उनके प्रति व्यवहार सामान्य किशोरों एवं किशोरियों से अलग होता है। या तो वे मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के प्रति आवश्यकता से अधिक चिंता, ध्यान एवं सहानुभूति रखते हैं और उन्हें रोक–टोक करते हैं या फिर उनसे नाराज़गी, विरक्ति एवं उपेक्षित व्यवहार करते हैं। अतिरक्षण एवं न्यूनरक्षण दोनों ही स्थितियाँ मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों को असंतुष्ट रखती हैं, जिससे वे अभिभावकों के प्रति नाराज़गी जाहिर करते हैं। चूँकि वे बोल नहीं पाते, अतः क्रोध अभिव्यक्ति के लिए वे आक्रामकता का सहारा लेते हैं। अर्थात् मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों तथा उनके अभिभावकों के मध्य संतोषपूर्ण संबंधों की कमी उनके आक्रामकता स्तर को बढ़ा देती है। जबकि संतोषपूर्ण संबंधों की वृद्धि किशोरों एवं किशोरियों के आक्रामकता स्तर को कम करती है।

उद्देश्य 45 मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि मूक–बधिर किशोरों की शारीरिक विकलांगता को लेकर उनके पिता, उनसे असंतुष्ट रहते हैं। परिणामस्वरूप मूक–बधिर किशोरों में भी हीन भावना एवं कुण्ठा उत्पन्न हो जाती है, जो उनकी स्वयं के प्रति धारणा को निम्न स्तरीय बना देती है। अर्थात् मूक–बधिर किशोरों के पिता के साथ संबंधों में अनुकूलता कम होने पर आत्म अवधारणा निम्न होती है। जबकि अनुकूल संबंधों की वृद्धि से किशोरों की आत्म अवधारणा उच्च हो जाती है।

उद्देश्य 46 मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि मूक–बधिर किशोरों की शारीरिक कमी को लेकर उन्हें माता द्वारा अति सुरक्षा प्रदान

की जाती है एवं उन्हें स्वयं निर्णय लेने नहीं दिया जाता, जिससे उनका आत्म विश्वास कमजोर हो जाता है। परिणामस्वरूप वे स्वयं के प्रति निम्न धारणा विकसित कर लेते हैं। अर्थात् मूक–बधिर किशोरों के माता के साथ संबंधों में संतोष कम होने पर उनकी आत्म अवधारणा भी निम्न हो जाती है। जबकि संबंधों में संतोष बढ़ने पर किशोरों की आत्म अवधारणा उच्च हो जाती है।

उद्देश्य 47 मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक सहसंबंध होता है। जिन परिवारों में मूक–बधिर किशोरों के माता–पिता उनकी समस्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं, वे उन मूक–बधिर किशोरों की तुलना में अधिक संतुष्ट जीवन व्यतीत करते हैं, जिनके अभिभावक उनके प्रति उपेक्षित व्यवहार करते हैं। मूक–बधिर किशोरों की असंतुष्टि, उनके अंदर असुरक्षा की भावना एवं आत्म विश्वास की कमी उत्पन्न करती है, जिससे वे अपनी विकलांग स्थिति से कुण्ठित रहते हैं। अर्थात् मूक–बधिर किशोरों के अभिभावकों के साथ संबंधों में सामंजस्य की कमी होने पर उनकी आत्म अवधारणा भी कम हो जाती है। जबकि संबंधों में सामंजस्य बढ़ने से किशोरों की आत्म अवधारणा बढ़ जाती है।

उद्देश्य 48 मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि मूक–बधिर किशोरियों की शारीरिक विकलांगता को लेकर उनके पिता द्वारा उनकी शिक्षा, विवाह, भविष्य आदि की चिंता एवं तनाव किशोरियों के अंदर नैराश्य एवं आत्म ग्लानि उत्पन्न करते हैं। परिणामस्वरूप मूक–बधिर किशोरियाँ स्वयं की विकलांग स्थिति से, निम्न आत्म अवधारणा का शिकार हो जाती हैं। अर्थात् मूक–बधिर किशोरियों के पिता के साथ संबंधों के सामान्य नहीं रहने पर उनकी आत्म अवधारणा निम्न हो जाती है। जबकि संबंधों के सामान्य बने रहने पर आत्म भी अवधारणा सामान्य हो जाती है।

उद्देश्य 49 मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि

मूक–बधिर किशोरियों की शारीरिक विकलांगता के कारण माता का उनके प्रति उपेक्षित व्यवहार करना, अन्य बच्चों की तुलना में पक्षपात करना, ताना देना आदि मूक–बधिर किशोरियों को हीन भावना, निराशा, असुरक्षा एवं अकर्मण्यता से ग्रसित कर देता है। परिणामस्वरूप उनमें आत्म विश्वास की कमी हो जाती है तथा वे स्वयं के प्रति निम्न अवधारणा विकसित कर लेती हैं। अर्थात् मूक–बधिर किशोरियों के माता के साथ संबंधों में मधुरता कम ह़ोने पर उनकी आत्म अवधारणा भी निम्न हो जाती है। जबकि संबंधों में मधुरता बढ़ने पर आत्म अवधारणा उच्च हो जाती है।

उद्देश्य 50 मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक सहसंबंध होता है। चूँकि मूक–बधिर किशोरियाँ शारीरिक विकलांगता का शिकार होती हैं, अतः उन्हें लेकर माता–पिता सदैव चिंतित एवं तनावग्रस्त रहते हैं। उनके तनाव से परिवार का वातावरण भी तनावपूर्ण हो जाता है। अभिभावक किशोरियों की विकलांगता को स्वीकार नहीं कर पाते, जिसके परिणामस्वरूप किशोरियाँ भी अपनी विकलांग स्थिति को स्वीकार नहीं कर पातीं और अवसादग्रस्त हो जाती हैं। अर्थात् मूक–बधिर किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंध अच्छे नहीं होने पर उनकी आत्म अवधारणा भी निम्न ह़ो जाती है। जबकि संबंधों के अच्छे होने पर आत्म अवधारणा उच्च हो जाती है।

उद्देश्य 51 मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष – आँकड़ों के अध्ययन एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि, मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक सहसंबंध होता है। परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना कि, ''मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य कोई सार्थक सहसबंध नहीं होता है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

विवेचना – उपरोक्त निष्कर्ष के अनुसार मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों एवं उनकी आत्म अवधारणा के मध्य धनात्मक सहसंबंध होता है। क्योंकि किशोरों एवं किशोरियों की आत्म अवधारणा पर अभिभावकों की आत्म अवधारणा, दृष्टिकोणों एवं अभिवृत्तियों का उल्लेखनीय प्रभाव पड़ता है। किशोर एवं किशोरियाँ स्वयं को उसी रूप में प्रत्यक्षीकृत करते हैं, जिस रूप में उनके माता–पिता उन्हें देखते हैं। चूँकि मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों में शारीरिक कमी पाई जाती हैं, अतः उनके अभिभावक उन्हें उपेक्षा के भाव से देखते हैं। अभिभावकों की उपेक्षा मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों को स्वयं की अपूर्णता का एहसास दिलाती है, जिससे वे अवसाद, तनाव, कुण्ठा, हीनता आदि भावों से ग्रसित होकर स्वयं को निम्न दृष्टि से प्रत्यक्षीकृत करते हैं। अर्थात् मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों में विश्वास एवं सहयोग कम होने पर उनकी आत्म अवधारणा भी निम्न हो़ जाती है। जबकि संबंधों में विश्वास एवं सहयोग बढ़ने पर आत्म अवधारणा उच्च हो जाती है।

5.15 शोध अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता

1. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकीय संबंधों का उनके समायोजन, आक्रामकता एवं आत्म अवधारणा पर प्रभाव के अध्ययन द्वारा मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के प्रति उनके अभिभावकों के व्यवहारों का परिमार्जन किया जा सकता है एवं उनके मध्य संबंधों को अधिक स्नेहपूर्ण बनाने हेतु प्रेरित किया जा सकता है।

2. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकीय संबंधों को ज्ञात कर उनके अभिभावकों में उनकी शिक्षा एवं भविष्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है।

3. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के समायोजन स्तर को ज्ञात कर उनके गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक समायोजन स्तर को उच्च बनाने में और कुसमायोजन को दूर करने में सहायता मिल सकती है।

4. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के आक्रामकता स्तर को ज्ञात कर उनकी आक्रामकता संबंधी समस्याओं को दूर करने के प्रयास किए जा सकते हैं।

5. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों की आत्म अवधारणा को ज्ञात कर उनके आत्म विश्वास में वृद्धि करने एवं उनमें स्वावलंबन का भाव उत्पन्न कर उनकी आत्म अवधारणा को उच्च बनाने का प्रयत्न किया जा सकता है।

6. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकीय संबंधों का उनके समायोजन, आक्रामकता एवं आत्म अवधारणा पर पड़ने वाले प्रभावों से अभिभावकों को अवगत कराया जा सकता है कि, जैसे–जैसे किशोरों एवं अभिभावकों के मध्य संबंध मधुर होते हैं वैसे–वैसे उनका कुसमायोजन एवं आक्रामकता कम होती जाती है तथा आत्म अवधारणा उच्च होती जाती है।

7. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकीय संबंधों का उनके समायोजन, आक्रामकता एवं आत्म अवधारणा पर प्रभाव के अध्ययन द्वारा उनकी क्षमताओं का सर्वाधिक उपयोग कर, उन्हें उचित मार्गदर्शन दिया जा सकता है।

8. मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकीय संबंधों, समायोजन, आक्रामकता, आत्म अवधारणा आदि से समाज को परिचित करवाकर उनके प्रति समाज के दृष्टिकोण एवं व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सकता है।

9. इस प्रकार के अध्ययनों से शिक्षकों को मूक–बधिर विद्यार्थियों की योग्यताओं, क्षमताओं और व्यवहारों को समझने का अवसर मिल सकेगा, जिससे वे कक्षा में वैयक्तिक भिन्नता के आधार पर समुचित शिक्षण व्यवस्था कर सकेंगे।

10. विद्यालयों में मूक–बधिर विद्यार्थियों की क्षमताओं एवं व्यवहारों के आधार पर उनके लिए विशिष्ट प्रशिक्षण की भी व्यवस्था की जा सकती है।

11. प्रस्तुत शोध अध्ययन की सहायता से मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों हेतु उपयुक्त व्यक्तिगत, शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन तथा परामर्श की व्यवस्था की जा सकती है।

12. इस प्रकार के शोध अध्ययनों द्वारा मूक–बधिर विद्यार्थियों के संबंध में पूर्व कथन एवं भविष्यवाणी की जा सकती है।

13. इस प्रकार के शोध अध्ययनों द्वारा समन्वित शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जा सकता है।

14. प्रस्तुत शोध अध्ययन की सहायता से मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों के अभिभावकों के साथ संबंधों में सुधार द्वारा किशोरों एवं किशोरियों के असंतोष एवं अनुशासनहीनता को रोका जा सकता है।

5.16 भावी शोध अध्ययनों हेतु सुझाव

अनुसंधान का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। यह कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है। जितने अधिक ज्ञान के सागर में हम डूबते जाते हैं, उतनी ही अधिक ज्ञान की विधाएँ हमारे सामने खुलती जाती हैं। कोई भी शोधकर्ता किसी भी समस्या के सभी पहलुओं का अध्ययन नहीं कर सकता तथा कोई भी शोध उस क्षेत्र की सारी समस्याओं को हल नहीं कर सकता। इसलिए यह कहना गलत होगा कि शोधकत्री ने समस्या के सभी पक्षों को छू लिया है।

चूँकि शारीरिक विकलांगता के क्षेत्र में नगण्य शोध ही हुए हैं, अतः इसमें कई क्षेत्र ऐसे हैं जिन पर शोधकार्य वांछनीय है।

अतः शोधकत्री ने प्रस्तुत शोध के आधार पर भावी शोधों हेतु निम्नलिखित सुझाव देना उपयुक्त समझा है :

1. प्रस्तुत शोधकार्य को अन्य राज्य के मूक–बधिर विद्यार्थियों पर करके परिसीमन को विस्तृत किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श की सीमित उपलब्धता के कारण 300 मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों को लिया गया। आगामी शोधों में न्यादर्श की संख्या बढ़ाई जा सकती है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य में केवल मूक–बधिर किशोरों एवं किशोरियों को लेकर शोध कार्य किया गया। भावी शोध कार्य में मूक–बधिर बालकों एवं बालिकाओं अथवा मूक–बधिर युवाओं को सम्मिलित किया जा सकता है।
4. प्रस्तुत शोधकार्य में मूक–बधिर विद्यार्थियों के अभिभावकीय संबंधों का उनके समायोजन, आक्रामकता एवं आत्म अवधारणा पर प्रभाव का अध्ययन किया गया। भावी शोध अध्ययनों में मूक–बधिर विद्यार्थियों का अन्य विकलांग बालकों यथा नेत्रहीन आदि बालकों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

5. भावी शोधकार्य में मूक–बधिर विद्यार्थियों के अभिभावकीय संबंधों के प्रभाव का अन्य सामान्य बालकों के अभिभावकीय संबंधों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

6. मूक–बधिर विद्यार्थियों की अन्य विभिन्न शारीरिक एवं मानसिक विशेषताओं का सामान्य विद्यार्थियों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है जैसे–बुद्धि, सृजनात्मकता, व्यक्तित्व, अभिरूचि, आकांक्षा स्तर आदि।

7. मूक–बधिर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों का अन्य शारीरिक विकलांग विद्यार्थियों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

8. प्रस्तुत शोध कार्य में मूक–बधिर विद्यार्थियों के अभिभावकीय संबंधों एवं उनके समायोजन, आक्रामकता एवं आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन किया गया। भावी अध्ययनों में मूक–बधिर विद्यार्थियों के अभिभावकीय संबंधों का अन्य चरों यथा उपलब्धि, व्यक्तित्व, अभिवृत्ति, आकांक्षा स्तर आदि के साथ सहसंबंधात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

9. मूक–बधिर विद्यार्थियों की बुद्धि एवं सृजनात्मक के मध्य सहसंबंधात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है।

10. मूक–बधिर विद्यार्थियों अथवा अन्य विकलांग विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं को लेकर भी अध्ययन किए जा सकते हैं।

11. मूक–बधिर किशोरों के पारिवारिक वातावरण के साथ विद्यालयी वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन भी किया जा सकता है।

12. मूक बधिर बालकों की सरकारी एवं निजी संस्थाओं से मिलने वाली शैक्षिक सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

A. Reference Books

1. Bhargava, M. & Aurora, S. (2001). *Parental Behaviour.* Agra: H.P. Bhargava Book House.
2. Bhatnagar, A. B. & Bhatnagar, M. (2005). *Psychology of Teaching and Learning.* Meerut: R. Lall Book Depot.
3. Dubey, S. & Sharma, R. K. (2007). *Psychological Foundation of Education.* Agra: Radha Prakashan Mandir Pvt. Ltd.
4. Hurlock, E. B. (1967). *Adolescent Psychology*. New York: Mc. Graw – Hill Book Company.
5. Hurlock, E. B. (1978). *Child Development.* New York: Mc. Graw – Hill Book Company.
6. Gupta, S. P. (2004). *Practical Statistics.* New Delhi: S. Chand & Co. Ltd.
7. Hallahan, D. P. & Kauffman, J. M. (1991). *Exceptional Children: Introduction to Special Education.* London: Allyn and Bacon.
8. Hughes, A. G. (2006). *Learning and Teaching.* New Delhi: Sonali Publications.
9. Kulshreshtha, S. P. (2011). *Educational Psychology.* Meerut: R. Lall Book Depot.
10. Klen, B. (1986). *Mental Hygiene.* Chandigarh: Haryana Sahitya Academy.
11. Radke, M. J. (1946). *The Relation of Parental Authority to Children's Behaviour and Attitudes.* Minnesota: University of Minnesota Press.
12. Barouliya, R. (2005). *Educational Psychology*. Agra: Radha Prakashan Mandir.

13.Sharma, S. (2003). *Recents Trends in Experimental Psychology*. Jaipur: Sublime Publications.

14.Shukla, K. C. & Tarakchand. (2009). *Practical Psychology.* New Delhi: Commonwealth Publications.

15.Singh, A. K. (2009). *Advanced Clinical Psychology.* New Delhi: Motilal Banarsidas Publications.

16.Stifens, J. M. (1956). *Educational Psychology.* New York: Henry Holt & Company.

17.Upadhyaya, R. K., Mangal, A., Barauliya, A. & Dubey, S. K. (2005). *Methodology of Educational Research, Data Analysis and Educational Statistics.* Agra: Radha Prakashan Mandir.

18. अरोड़ा, आर. एवं मारवाह, एस. (2006). *शिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार*. जयपुर: शिक्षा प्रकाशन.

19. अस्थाना, बी., श्रीवास्तव, वी. एवं अस्थाना, एन. (2011). *शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी.* आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन.

20. कपिल, एच. के. (1998). *अनुसंधान विधियाँ.* आगरा: एच.पी. भार्गव बुक हाउस.

21. कपिल, एच. के. (2012). *अनुसंधान विधियाँ*. आगरा: राखी प्रकाशन, 15वाँ संस्करण.

22. जायसवाल, एस. (1974). *व्यक्तित्व मनोविज्ञान.* लखनऊ: उ. प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.

23. बायती, जे. (2004). *बाल मनोविज्ञान.* जयपुर: अग्रवाल पब्लिशिंग हाउस.

24. दीक्षित, बी. (1980). *मनोवैज्ञानिक प्रयोग परीक्षण.* आगरा: हरप्रसाद भार्गव बुक हाउस.

25. पाठक, पी. डी. (2007). *शिक्षा मनोविज्ञान.* आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर.

26. पाण्डेय, के. पी. (2007). *नवीन शिक्षा मनोविज्ञान.* वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन.

27. पारीक, के. एवं शर्मा, एन. के. (2010). *शिक्षा मनोविज्ञान.* जयपुरः ज्ञानेश्वर प्रकाशन.

28. बैस, एन. एस. एवं सूत्रकार बी. (2006). *विशिष्ट वर्ग के बालकों की शिक्षा.* जयपुरः जैन प्रकाशन मंदिर.

29. भार्गव, एम. (2011). *विशिष्ट बालकः शिक्षा एवं पुनर्वास.* आगरा: एच. पी. भार्गव बुक हाउस.

30. योगेन्द्रजीत. (2001). *बाल मनोविज्ञानः बाल विकास.* आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर.

31. मधु प्रकाश, शर्मा, आर. के. एवं बरोलिया, ए. (2011). *उच्चतर शैक्षिक मनोविज्ञान.* आगरा: राधा प्रकाशन मंदिर प्रा. लि..

32. मिश्र, के. एस. (2010). *शिक्षा मनोविज्ञान के नए क्षितिज.* इलाहाबाद: अनुभव पब्लिशिंग हाउस.

33. यादव, एस. एवं सक्सेना, एस. (2011). *शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ एवं शैक्षिक सांख्यिकी.* आगरा: साहित्य प्रकाशन.

34. सिंह, आर. (2005). *अधिगम का मनोविज्ञान.* आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर.

35. सिंह, आर. एवं शर्मा, ओ .पी. (2008). *शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी.* आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर.

36. वर्मा, पी. एवं श्रीवास्तव, डी. एन. (2001). *आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान.* आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर,

37. शर्मा, बी .एन. (2010). *शिक्षण के मनोवैज्ञानिक एवं तकनीकी आधार तथा क्रियात्मक पक्ष.* आगरा: राधा प्रकाशन मन्दिर प्रा. लि.

38. सिंह, आर. एन. एवं भारद्वाज, एस. (2012). *मूल मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएँ.* आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स.

39. सिंह आर. एन. (2012). *आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान.* आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स.

40. शर्मा, पी. (2010). *शिक्षा मनोविज्ञान एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण.* दिल्लीः शिप्रा पब्लिकेशन्स.

41. शर्मा, बी. (2010). *शिक्षण के मनोवैज्ञानिक एवं तकनीकी आधार तथा क्रियात्मक पक्ष.* आगरा: राधा प्रकाशन मंदिर प्रा. लि..

42. शर्मा, एस. एन. एवं भार्गव, वी. (2012). *मनोविज्ञान एवं शिक्षा में प्रयोग एवं परीक्षण.* आगरा: एच. पी. भार्गव बुक हाउस.

43. श्रीवास्तव, ए. के. (2009). *मनोविकृति विज्ञान.* आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स.

44. श्रीवास्तव, डी. एन. (2009). *मनोवैज्ञानिक निर्धारण.* आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स.

45. त्रिपाठी, जे. (2009). *मनोविज्ञान एवं शिक्षा में शोध पद्धतियाँ.* आगरा: भार्गव बुक हाउस.

46. त्रिपाठी, एल. (1988). *आधुनिक प्रायोगिक मनोविज्ञान.* आगरा: अर्चना प्रिन्टर्स.

B. Journals

1. Abraham, M. & George, R. (2007). The aggressive defence style adopted by adolescents. *Indian Educational Review*, 43(2), 48-55.
2. Acharya, N. & Joshi, S. (2011). Achievement motivation and parental support to adolescent. *Journal of the Indian Academy of Applied Psychology*, 37(1), 132-139.
3. Adeniyi, S. O., Oyewumi, A. M. & Fakolade, O. A. (2011). An assessment of the level of influence of family life and AIDS education or knowledge, attitude and decision making among adolescents with hearing impairement in some states in Algeria. *International Journal of Special Education*, 26(3), 5-10.
4. Agrawal, K. (2006). Parental encouragement: A Panacea for students educational development. *Asia Journal of Psychology and Education*, 39(5-6), 37-40.
5. Agrawal, R. (2007). A study of adequate expression and control of emotions of normal and handicapped children. *Asian Journal of Psychology and Education*, 40(1-2), 2-7.

6. Alam, A. M. (2001). A comparative study of academic achievement and self concept of dumb-deaf children and normal children. *Indian Educational Abstracts*, 4(1), 24.
7. Annapurna, K. (2011). Impact of parental behaviour upon the personality of their children. *Indian Journal of Psychometry and Education*, 42(1), 62-65.
8. Archer, J. & Parker, S. (2006). Social representations of aggression in children. *Aggressive Behaviour*, 20(2), 101-114.
9. Athina, A., Mouratidou, K., Christna, Koidou, E. & Barkoukis, V. (2011). Social development parameters in primary schools: Inclusive settings and gender differences on pupil's aggressive and social insecure behaviour and their attitudes towards disability. *International Journal of Special Education*, 26(2), 58-66.
10. Baillargeon, R., Keenan, K. H., Zoccolillo, M., Cotes, S. & Perusses, D. (2005). Gender differences in physical aggression. *Developmental Psychology*, 3, 13-16.
11. Basak, T. & Mukherjee, T. (2010). Effect of parent-child relationship on self concept and achievement motivation of male and female adolescents. *Journal of Psychometry*, 24(2), 56-71.
12. Bhatia, R. (2011). Aggression in children: Reasons and remedies. *Journal of Indian Education*, xxxvi(4), 45-50.
13. Burde, K. & Jenson, L. C. (2008). The self concept and aggressive behaviour among elementary school children from the socio-economic areas and two grade levels. *Psychology in the Schools*, 20(3), 370-375.
14. Chauhan, K. & Khan, S. H. (2006). Self-esteem and parental acceptance amongst socially withdrawn children. *Behavioural Scientist*, 7(1), 33-38.

15. Chen. (2005). Relations of parental, teacher and peer support to academic engagement and achievement among Hong-Kong students. *School Psychology International*, 29, 183-198.
16. Coie, J. D. & Dodge, K. A. (1998). Childhood peer rejection and aggression as predictors of stable patterns of adolescents disorder. *Development and Psychopathology*, 7, 697-713.
17. Dixit, P. & Sharma, V. R. (2010). Effect of adolescents family environment on their mental health and anxiety level. Indian *Journal of Psychology and Education*, 42(2), 198-202.
18. Gillian. (2000). Aggressive behavior disorders. *Handbook of Infant Mental Health*, 2, 397-398.
19. Hines, D. A. & Saudino, K. J. (2003). Gender differences in psychological, physical and sexual aggression among college students using the revised conflict tactis scales. *Violence and Victims*, 18, 197-217.
20. Karlis, C. (2011). Aggressive Behaviour. *Journal of Research and Extension in Education*, 6(2), 183.
21. Kaur, M. (2005). Self concept in relation to intellectual variables. *Journal of Educational Research and Extension*, 38(1).
22. Kriesty, M. & Carren. (1994). Sex differences in covert aggression. *Aggressive Behaviour*, 20(2), 27-33.
23. Lali, S. (2011). Variation in Parenting Practices and its correlation in adolescent behavior. *GCTE Journal of Research and Extension in Education*, 6(2), 183-186.
24. Masomeh, K. (2005). A comparative study of relations between self concept and anxiety among adolescence students. *Indian Educational Abstracts*, 8(1),46.

25. Mishra, G. Psychological dimensions of Educational Research in India. *Sixth Survey of Educational Research*, 301-322.
26. Mohanraj, R. & Latha. (2005). A correlational study of family environment of children with their adjustment and educational achievement. *Journal of Indian Academy of Applied Psychology*, 31(1-2), 18-23.
27. Murali. (2006). A comparative study of educational achievement between different category of disabled students. *Anweshika: Indian Journal of Teacher Education*, 138.
28. Naik, J. A. (2009). A study of the creativity of hearing impaired children studying in secondary schools. *Journal of Education and Psychology*, 66(1), 45-49.
29. Nisha, K. P. & Sindhe, A. S. N. (2011). Correlation between parent-child relationship and child's self concept. *Journal of Research and Extension in Education*, 6(1), 58-67.
30. Olwens, D. (1979). Stability of aggressive patterns in males: A review. *Psychology Bulletein*, 86, 852-875.
31. Prasad, R. S. (2005). Adjustment and academic achievement of residencial schools children: A study. *New Frontier in Education*, 35, 55-58.
32. Pannu, R. & Singh, A. (2011). Influence of adjustment on academic achievement of adolescent students. *Behavioural Scientist*, 12(1), 51-56.
33. Robins, R. W., Tracy, J. L., Trezenewski, K. & Potter, J. (2001). Personality correlates of self-esteem. *Journal of Research in Personality*, 29, 169-182.

34. Saini, S. (2005). Family environment and academic achievement of adolescent children of working and non-working mothers. *Indian Educational Review*, 41(2), 87-94.

35. Saroj, M. (2011). Family environment of high and low adjust hearing impaired children. *Asian Journal of Psychology and Education*, 44(3-4), 26-30.

36. Shanwal, P. & Sangwan, S. (2010). Physical and verbal aggression during childhood. *Journal of Psychometry*, 24(2), 33-43.

37. Sharma, M., Sharma, N. & Yadava, A. (2011). Parental styles and depression among adolescents. *Journal of the Indian Academy Applied Psychology*, 37(1), 60-68.

38. Sharma, S. & Garg, S. (2011). Psychological effect of videogames and internet on aggression: A study. *Psycho-Lingua Journal*, 41(2), 157-160.

39. Sindhu, I. S. (2005). Impact of teachers motivation on child's adjustment and their educational achievement. *Ram-Eesh Journal of Education*, 2(2), 19-23.

40. Soni, R. B. L. (2003). Perception of parents, teachers and students about education of disabled children. *Indian Educational Abstacts*, 8(1), 57.

41. Thacker, P. V., Kamble, G. N. & Kamath, R. M. (2011). Seif concept, aggression and gender differences among college students. *Bombay Psychologist*, xxvi(1&2), 129-133.

42. Tiwari, J. & Naithani, R. (2011). Impact of parent-child relationship on scholastic achievement of adolescents. *Indian Journal of Psychometry and Education*, 42(1), 62-65.